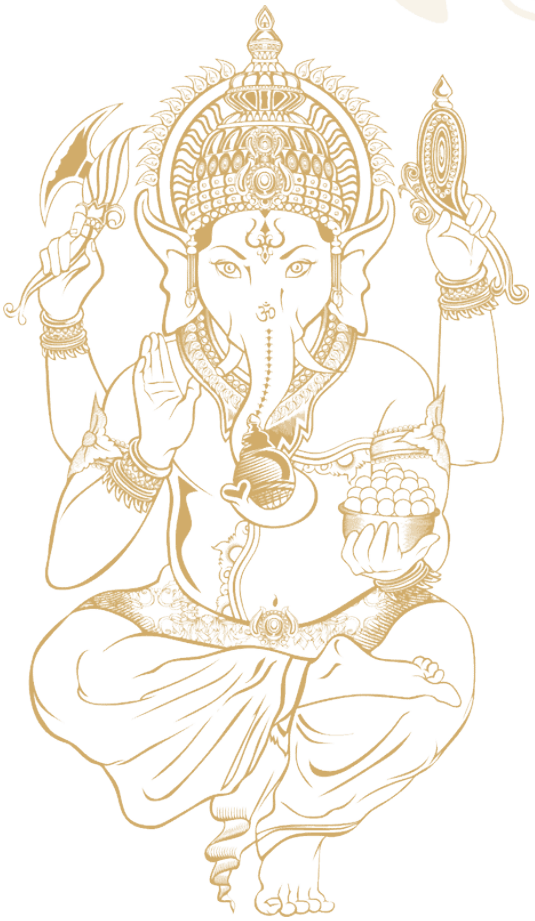

Manisha Anil Tupe

08 Sep 1976

07:45 AM

Bhandup

Model: Web-KundliDarpan

Order No: 120704801

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	स्त्रीलिंग
जन्म तिथि	**08/09/1976**
दिवस	बुधवार
जन्म समय	**07:45:00 कला**
इष्ट	03:20:54 घटी
स्थान	**Bhandup**
राज्य	Maharashtra
देश	India

अक्षांश	19:10:00 उत्तर
रेखांश	72:56:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:38:16 कला
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 कला
स्थानिक वेल	07:06:44 कला
वेलान्तर	00:02:20 कला
साम्पातिक वेल	06:15:49 कला
सूर्योदय	06:24:38 कला
सूर्यास्त	18:46:51 कला
दिनमान	12:22:14 कला
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	शरद
सूर्याचे अंश	22:01:22 सिंह
लग्नाचे अंश	10:12:54 कन्या

अवकहड़ा चक्र

लग्न–लग्नाधिपति	कन्या – बुध
राशि–स्वामी	**कुम्भ – शनि**
नक्षत्र–चरण	**शतभिषा – 4**
नक्षत्र स्वामी	राहु
योग	धृति
करण	बव
गण	राक्षस
योनि	अश्व
नाड़ी	आद्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मेष
युँजा	अन्त्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	सू–सुगन्धा
पाया(राशि–नक्षत्र)	स्वर्ण – ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कन्या

पंचांग

आजोबांचें नांव _____:
बडीलांचे नांव _____:
आईचें नांव _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	माह	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1898	भाद्रपद	17
पंजाबी	संवत : 2033	भाद्रपद	24
बंगाली	सन् : 1383	भाद्रपद	23
तमिल	संवत : 2033	अवानी	24
केरल	कोल्लम : 1152	चिमगम	24
नेपाली	संवत : 2033	भाद्रपद	24
चैत्रादी	संवत : 2033	भाद्रपद	शुक्ल 15
कार्तिकादी	संवत : 2033	भाद्रपद	शुक्ल 15

पंचांग

सूर्योदय समयी तिथि _____: 15
तिथि समाप्ति वेल _____: 18:22:04
जन्म तिथि _____: 15
सूर्योदय समयी नक्षत्र _____: शतभिषा
नक्षत्र समाप्ति वेल _____: 13:37:08 कला
जन्म योग _____: शतभिषा
सूर्योदय समयी योग _____: धृति
योग समाप्ति वेल _____: 21:32:23 कला
जन्म योग _____: धृति
सूर्योदय समयी करण _____: बव
करण समाप्ति वेल _____: 18:22:04 कला
जन्म करण _____: बव
भयात _____: 49:11:46
भभोग _____: 63:52:06
भोग्य दशा वेल _____: राहु 4 वर्ष 1 मा 8 दि

घात चक्र

मास _____: चैत्र
तिथि _____: 3-8-13
दिवस _____: गुरुवार
नक्षत्र _____: आर्द्रा
योग _____: गण्ड
करण _____: किंस्तुघ्न
प्रहर _____: 3
वर्ग _____: श्वान
लग्न _____: मिथुन
रवि _____: वृषभ
चन्द्र _____: मिथुन
मंगळ _____: मिथुन
बुध _____: वृषभ
गुरु _____: कर्क
शुक्र _____: सिंह
शनि _____: मेष
राहु _____: कन्या

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

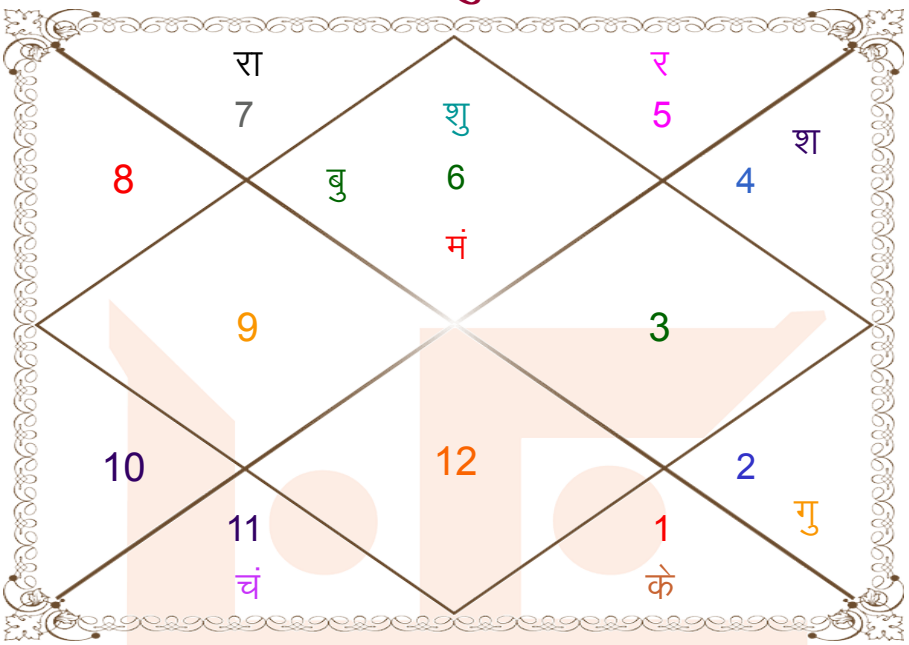

चन्द्र कुंडली

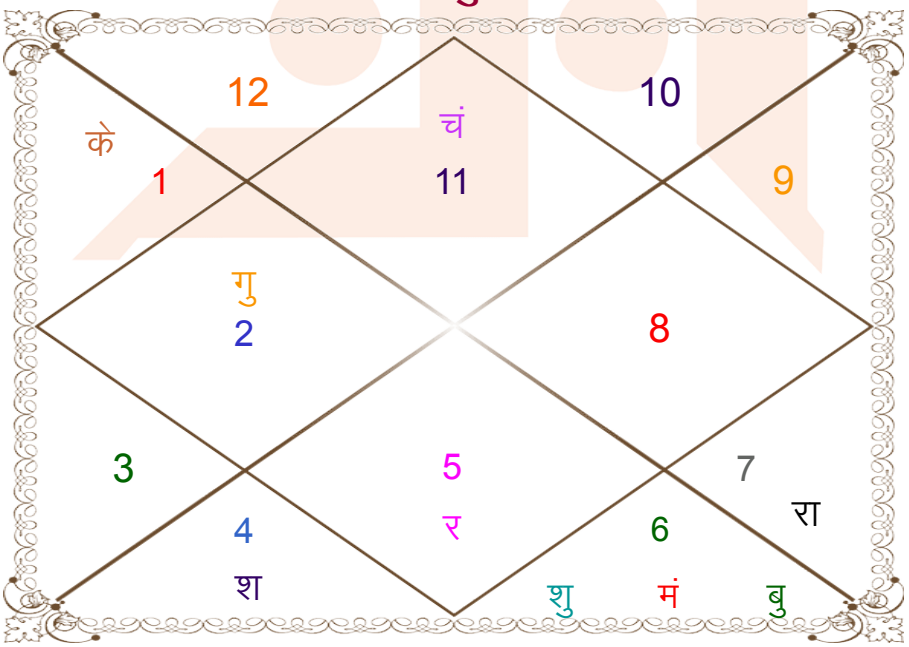

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

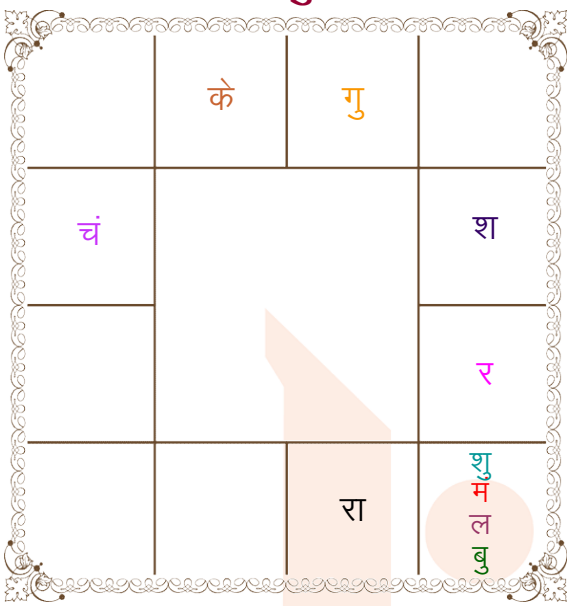

लग्न कुंडली

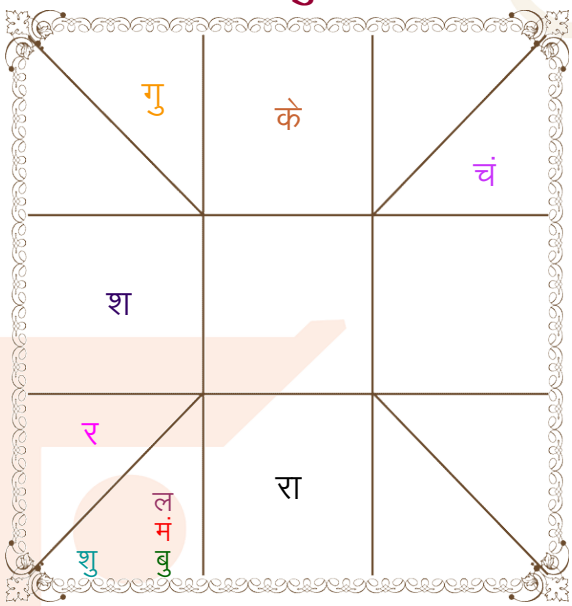

विंशोत्तरी
राहु 4वर्ष 1मा 8दि

राहु

08/09/1976

17/10/2082

राहु	17/10/1980
गुरु	17/10/1996
शनि	18/10/2015
बुध	17/10/2032
केतु	18/10/2039
शुक्र	18/10/2059
रवि	17/10/2065
चन्द्र	18/10/2075
मंगळ	17/10/2082

योगिनी
धान्या 0वर्ष 8मा 6दि

उल्का

16/05/2022

16/05/2028

उल्का	16/05/2023
सिद्धा	15/07/2024
संकटा	14/11/2025
मंगळा	14/01/2026
पिंगला	16/05/2026
धान्या	15/11/2026
भ्रामरी	16/07/2027
भद्रिका	16/05/2028

ग्रह स्पष्ट तथा त्यांची स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कन्या	10:12:54	341:45:33	हस्त	1	13	बुध	चंद्र	चंद्र	———
सूर्य			सिंह	22:01:22	00:58:15	पू.फाल्गुनी	3	11	सूर्य	शुक्र	शनि	स्वगृही
चंद्र			कुंभ	16:57:29	12:27:54	शतभिषा	4	24	शनि	राहु	शुक्र	सम राशि
मंगळ			कन्या	16:02:57	00:39:04	हस्त	2	13	बुध	चंद्र	शनि	शत्रु राशि
बुध			कन्या	14:17:17	00:04:58	हस्त	2	13	बुध	चंद्र	गुरु	उच्च राशि
गुरु			वृष	07:26:49	00:02:19	कृतिका	4	3	शुक्र	सूर्य	केतु	शत्रु राशि
शुक्र			कन्या	14:16:30	01:13:42	हस्त	2	13	बुध	चंद्र	गुरु	नीच राशि
शनि			कर्क	18:02:57	00:06:52	आश्लेषा	1	9	चंद्र	बुध	बुध	शत्रु राशि
राहु	व		तुला	11:00:13	00:08:01	स्वाति	2	15	शुक्र	राहु	शनि	मित्र राशि
केतु	व		मेष	11:00:13	00:08:01	अश्विनी	4	1	मंगळ	केतु	शनि	मित्र राशि
हर्ष			तुला	10:56:20	00:02:46	स्वाति	2	15	शुक्र	राहु	शनि	———
नेप			वृश्चि	17:43:56	00:00:31	ज्येष्ठा	1	18	मंगळ	बुध	बुध	———
प्लूटो			कन्या	17:02:51	00:02:10	हस्त	3	13	बुध	चंद्र	शनि	———
दशम भाव			मिथु	10:05:55	--	आर्द्रा	--	6	बुध	राहु	गुरु	--

व – वक्री स – स्थिर
अ – अस्त पू – पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट
लाहिरी अयनांश : 23:32:04

लग्न–चलित

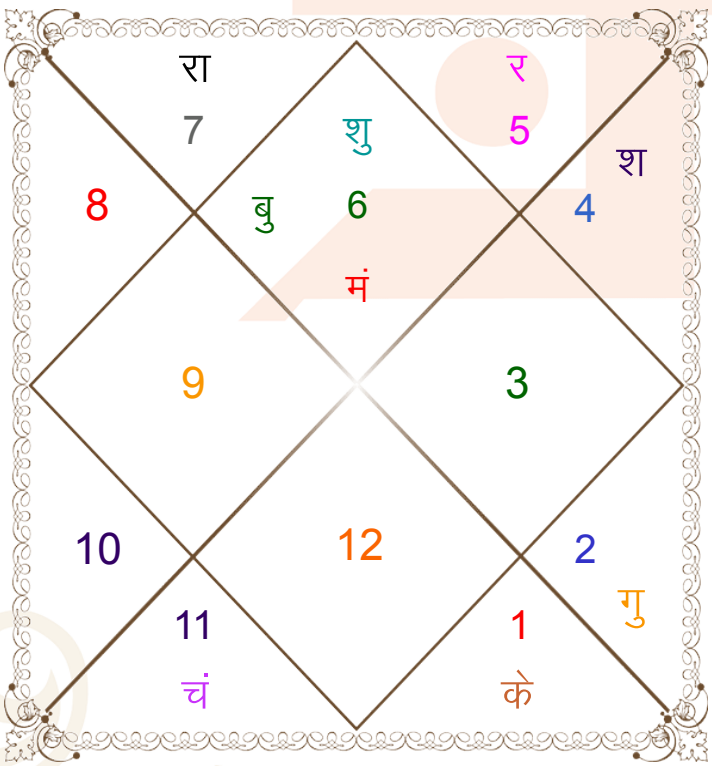

चन्द्र कुंडली

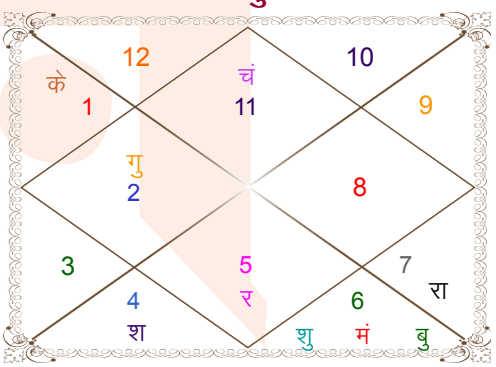

नवमांश कुंडली

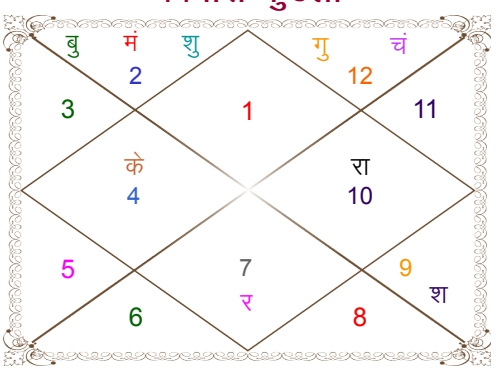

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	सिंह	25:11:44	कन्या	10:12:54
2	कन्या	25:11:44	तुला	10:10:34
3	तुला	25:09:25	वृश्चिक	10:08:15
4	वृश्चिक	25:07:05	धनु	10:05:55
5	धनु	25:07:05	मकर	10:08:15
6	मकर	25:09:25	कुम्भ	10:10:34
7	कुम्भ	25:11:44	मीन	10:12:54
8	मीन	25:11:44	मेष	10:10:34
9	मेष	25:09:25	वृषभ	10:08:15
10	वृषभ	25:07:05	मिथुन	10:05:55
11	मिथुन	25:07:05	कर्क	10:08:15
12	कर्क	25:09:25	सिंह	10:10:34

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कन्या	10:12:54
2	तुला	09:40:43
3	वृश्चिक	09:54:48
4	धनु	10:05:55
5	मकर	10:25:43
6	कुम्भ	10:52:17
7	मीन	10:12:54
8	मेष	09:40:43
9	वृषभ	09:54:48
10	मिथुन	10:05:55
11	कर्क	10:25:43
12	सिंह	10:52:17

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा
आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा
स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा

चलित कुंडली

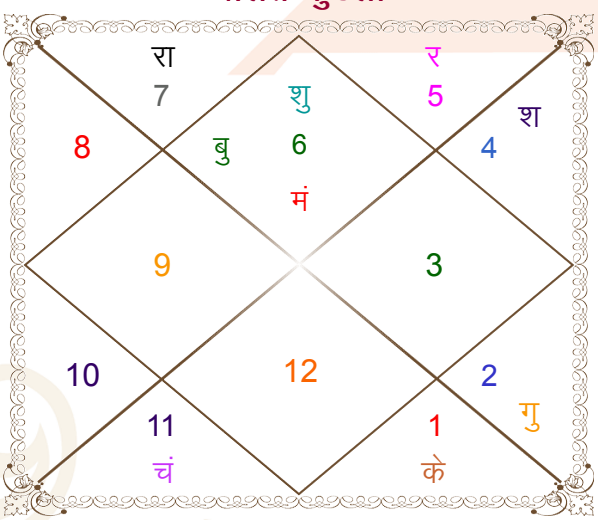

भाव कुंडली

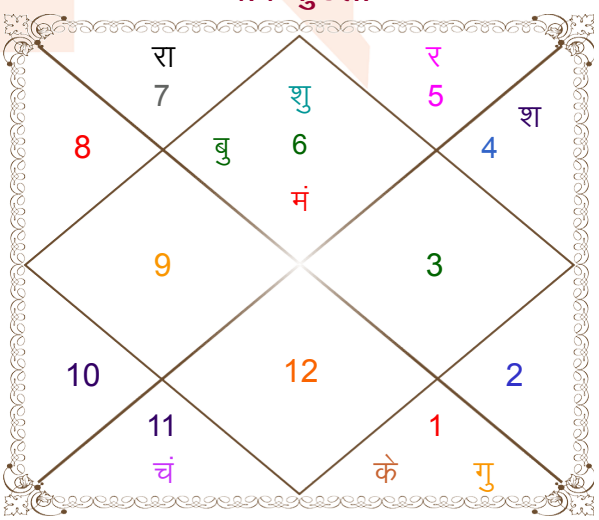

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	——— कारक ———		——— अवस्था ———				
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	आत्मा	पितृ	वृद्ध	स्वस्थ	उपवेशन	4.00	25 %
चंद्र	भ्रातृ	मातृ	युवा	शक्त	भोजन	2.60	59 %
मंगळ	मातृ	भ्रातृ	युवा	खल	निद्रा	0.53	33 %
बुध	पुत्र	ज्ञाति	युवा	दीप्त	गमन	14.94	87 %
गुरु	कलत्र	धन	वृद्ध	खल	आगमन	1.90	39 %
शुक्र	ज्ञाति	कलत्र	युवा	भीत	नेत्रपाणि	0.57	61 %
शनि	अमात्य	आयुष्य	कुमार	खल	नेत्रपाणि	0.98	31 %
राहु	———	ज्ञान	कुमार	मुदित	भोजन	0.00	94 %
केतु	———	मोक्ष	कुमार	मुदित	भोजन	0.00	94 %
एकुण						**25.52**	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा
आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा
स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा

चलित कुंडली

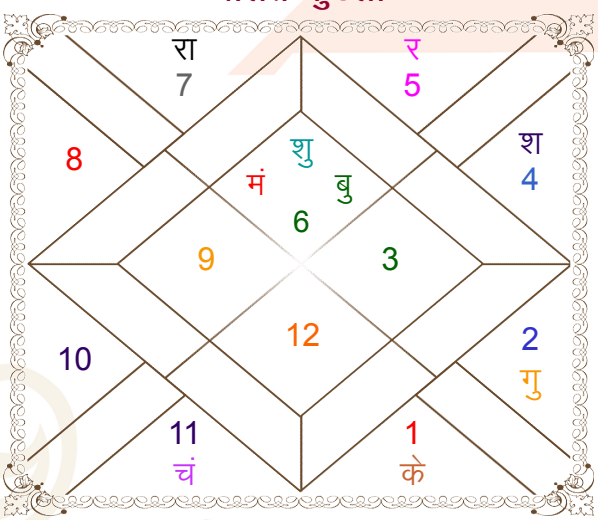

लग्न–चलित

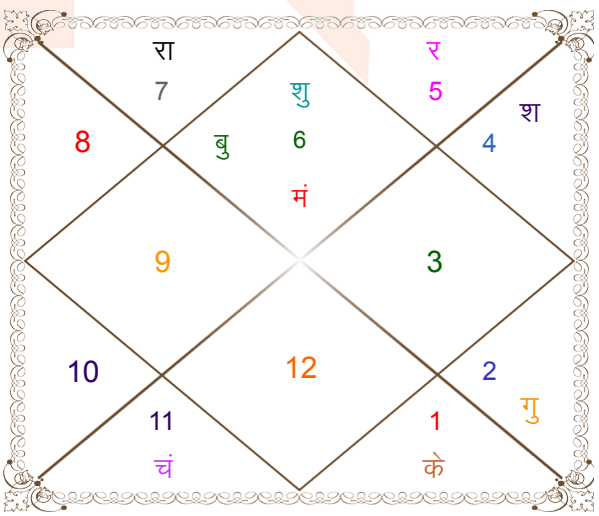

सुदर्शन चक्र

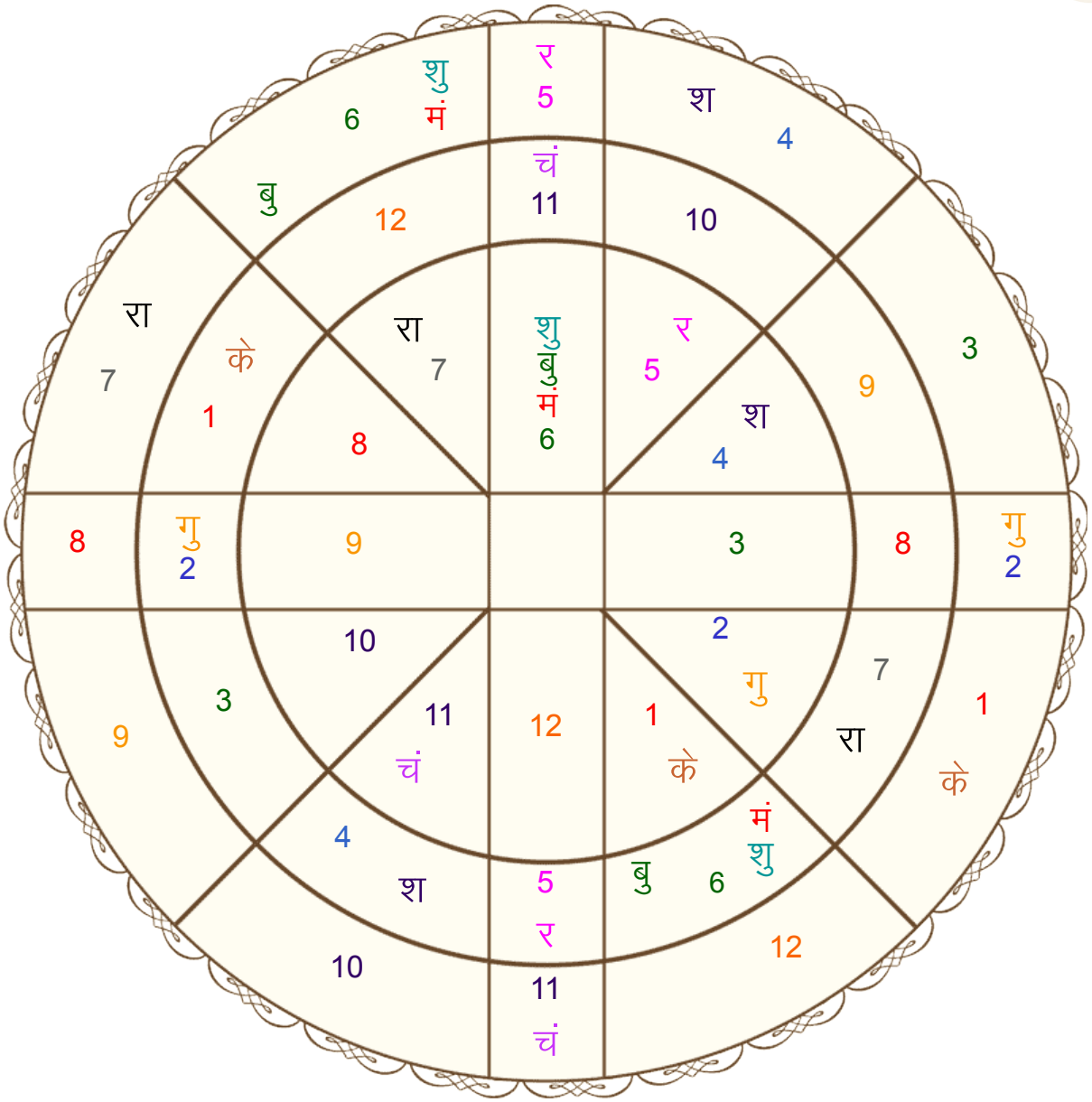

नोटः सुदर्शन चक्र क्रमानुसार बाहेरील वृत्ता पासून अन्तर वृत्ता पर्यंत रवि, चन्द्र व जन्मागं कुंडली मधील ग्रहांची तुलनात्मक स्थिती दर्शावित आहे. कोणत्या ही भावाचा विचार करन्या साठी त्या भावाला प्रकट करनारया तीनी राशिचां विचार करावा.

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा वेल : राहु 3 वर्ष 11 महिना 17 दिवस

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		सिंह	22:07:42	सूर्य	शुक्र	शनि	शनि
चंद्र		कुंभ	17:03:48	शनि	राहु	शुक्र	बुध
मंगळ		कन्या	16:09:17	बुध	चंद्र	शनि	बुध
बुध		कन्या	14:23:36	बुध	चंद्र	गुरु	शनि
गुरु		वृष	07:33:08	शुक्र	सूर्य	केतु	शनि
शुक्र		कन्या	14:22:50	बुध	चंद्र	गुरु	शनि
शनि		कर्क	18:09:17	चंद्र	बुध	बुध	गुरु
राहु	व	तुला	11:06:33	शुक्र	राहु	शनि	केतु
केतु	व	मेष	11:06:33	मंगळ	केतु	शनि	राहु
हर्ष		तुला	11:02:39	शुक्र	राहु	शनि	बुध
नेप		वृश्चि	17:50:15	मंगळ	बुध	बुध	राहु
प्लूटो		कन्या	17:09:11	बुध	चंद्र	शनि	मंगळ

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	कन्या	10:19:14	बुध	चंद्र	चंद्र	राहु
2	तुला	09:47:02	शुक्र	राहु	गुरु	शुक्र
3	वृश्चि	10:01:08	मंगळ	शनि	शुक्र	बुध
4	धनु	10:12:15	गुरु	केतु	शनि	शुक्र
5	मक	10:32:02	शनि	चंद्र	चंद्र	शनि
6	कुंभ	10:58:36	शनि	राहु	शनि	बुध
7	मीन	10:19:14	गुरु	शनि	शुक्र	केतु
8	मेष	09:47:02	मंगळ	केतु	शनि	बुध
9	वृष	10:01:08	शुक्र	चंद्र	चंद्र	चंद्र
10	मिथु	10:12:15	बुध	राहु	गुरु	राहु
11	कर्क	10:32:02	चंद्र	शनि	सूर्य	राहु
12	सिंह	10:58:36	सूर्य	केतु	शनि	राहु

के.पी. अयनांश : 23:25:45

फॉरच्युना : मीन 05:15:20

लग्न कुंडली

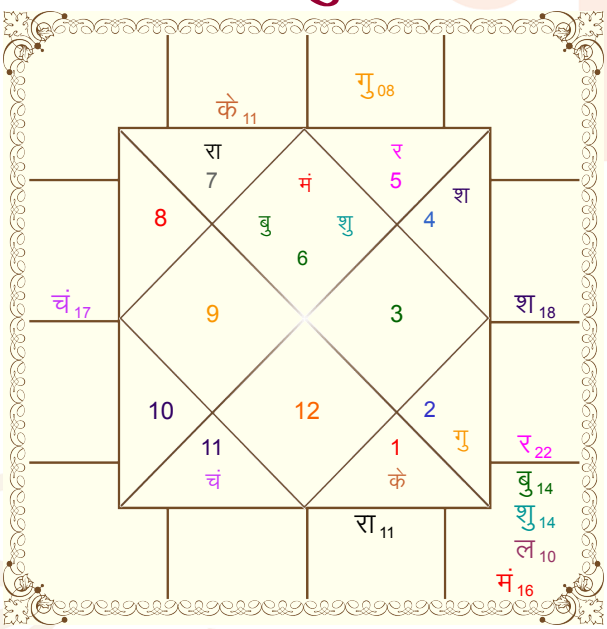

भाव कुंडली

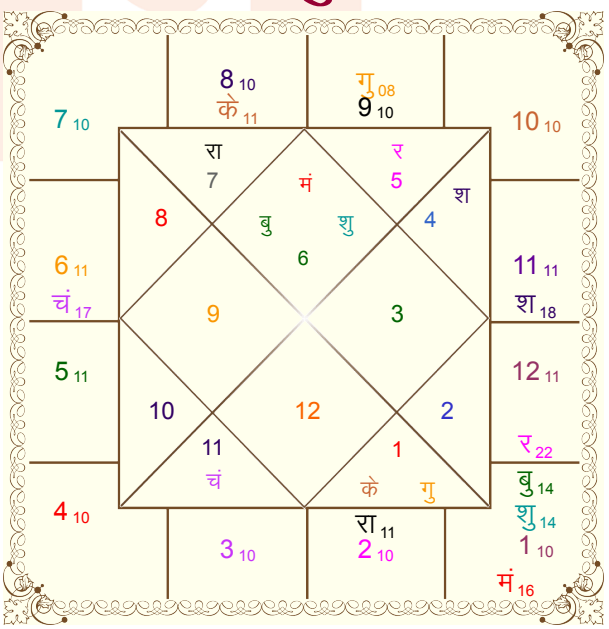

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	सूर्य, मंगळ, बुध, शुक्र, शनि+
2	सूर्य– चंद्र, शुक्र– राहु+
3	मंगळ–
4	गुरु–
5	शनि–
6	चंद्र, मंगळ, बुध, शुक्र, शनि–
7	गुरु–
8	मंगळ– गुरु, केतु+
9	सूर्य– शुक्र–
10	बुध– शनि–
11	चंद्र– मंगळ– बुध– शुक्र– शनि,
12	सूर्य, गुरु+

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	1, 2- 9- 12,
चंद्र	2, 6, 11-
मंगळ	1, 3- 6, 8- 11-
बुध	1, 6, 10- 11-
गुरु	4- 7- 8, 12+
शुक्र	1, 2- 6, 9- 11-
शनि	1+ 5- 6- 10- 11,
राहु	2+
केतु	8+

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	चन्द्र
लग्न राशि स्वामी	बुध
राशि नक्षत्र स्वामी	राहु
राशि स्वामी	शनि
वार स्वामी	बुध
लग्न अन्तर स्वामी	चन्द्र
राशि अन्तर स्वामी	शुक्र

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न चा विस्तार होत आहेत. प्रत्येक कुंडली चा एक विशेष लक्ष्य होत आहेत, खालील पत्रिका मदी वर्णन दिले आहेत. हे कुंडलिया कुटला विषय चा प्रतिनिधित्व करते ते आपण समझु शकते. हे चा अध्ययन मूल जन्मपत्रिका बरोबर केला पाहिजे. पूर्ण लक्ष देउन हे पत्रिकाचा अभ्यास करायचे, कारण ईथे ग्रहांची दृष्टि नाहीं होती. साधारणपणे ग्रहांचा आचरण ते राशि चा भाव पर्यंत सिमित राहतो, ते हे वर्गीय पत्रिकेत स्थित आहे.

रवि कुंडली

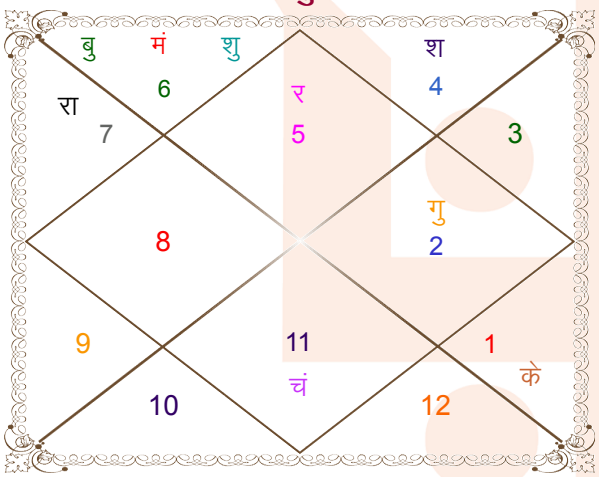

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

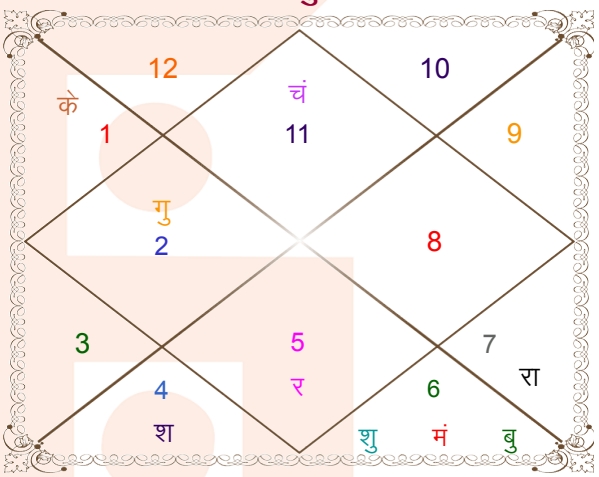

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

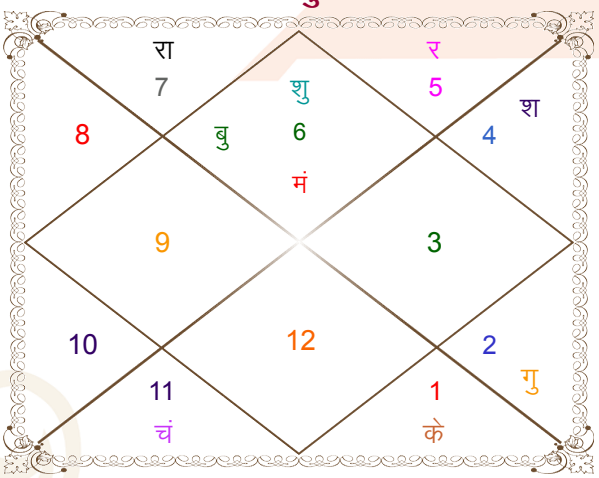

देह विचारः

होरा कुंडली

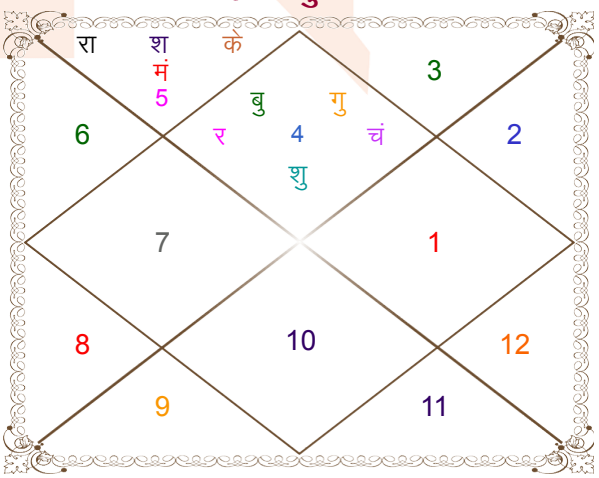

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

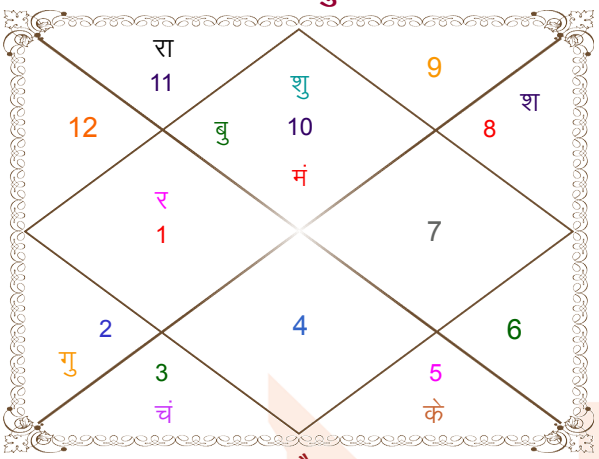

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

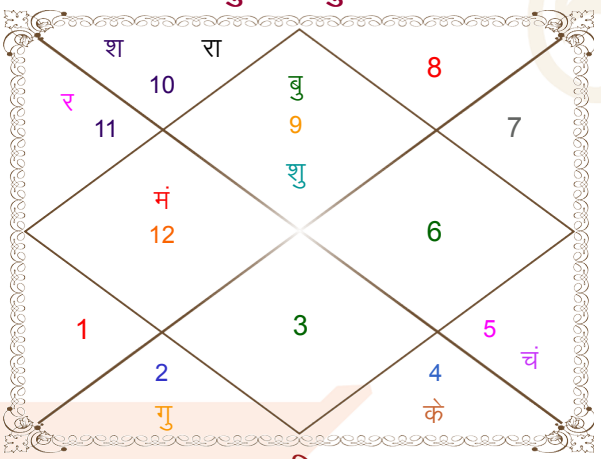

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

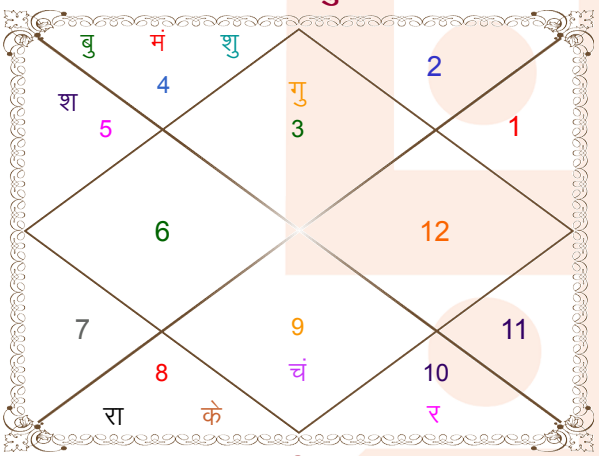

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

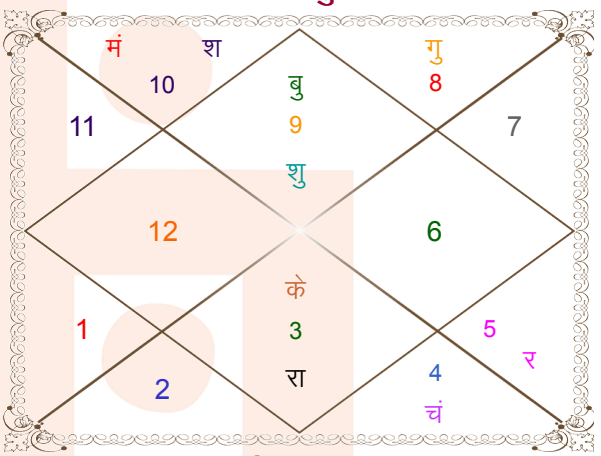

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

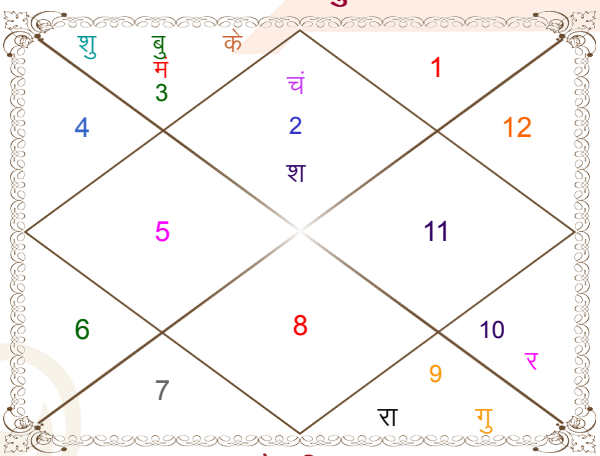

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

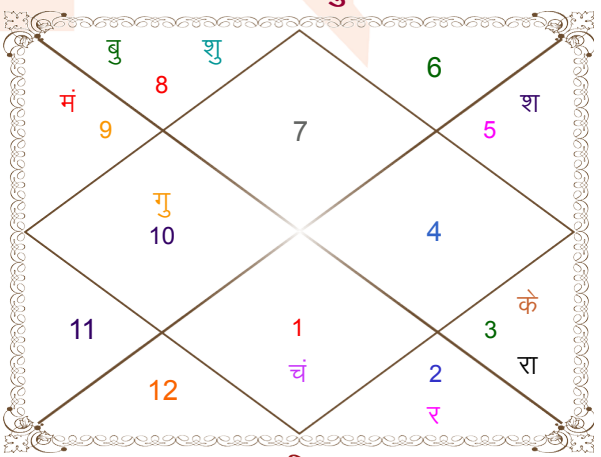

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

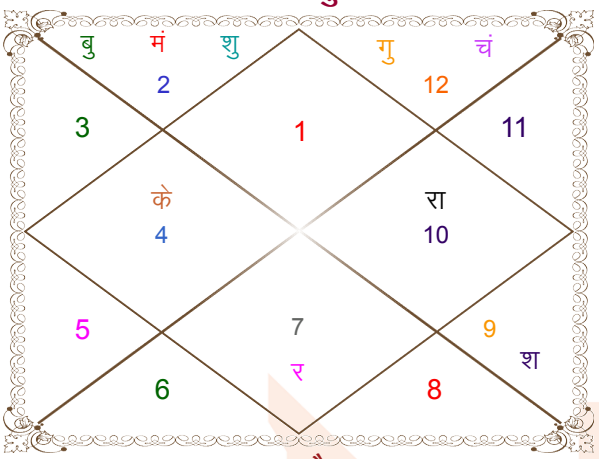

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

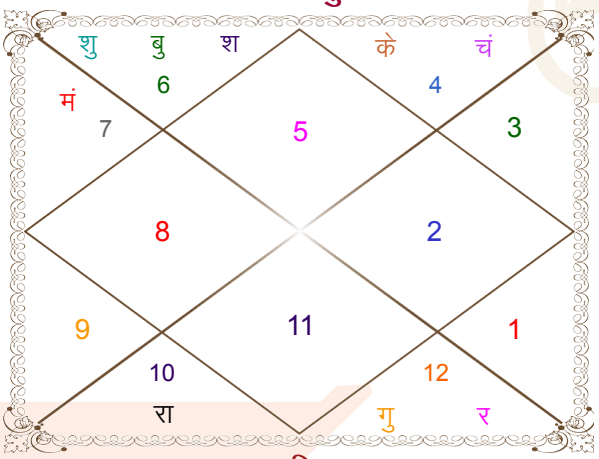

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

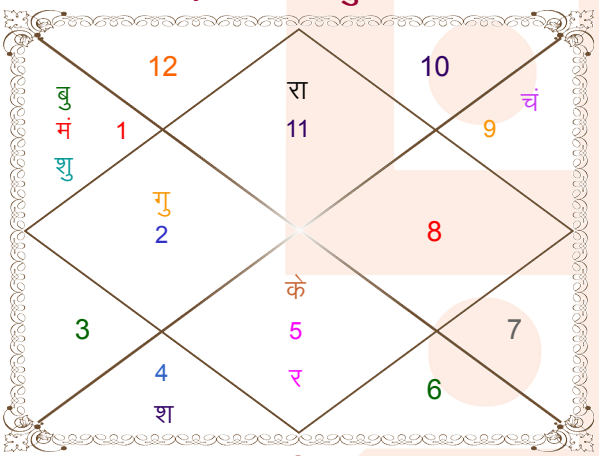

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

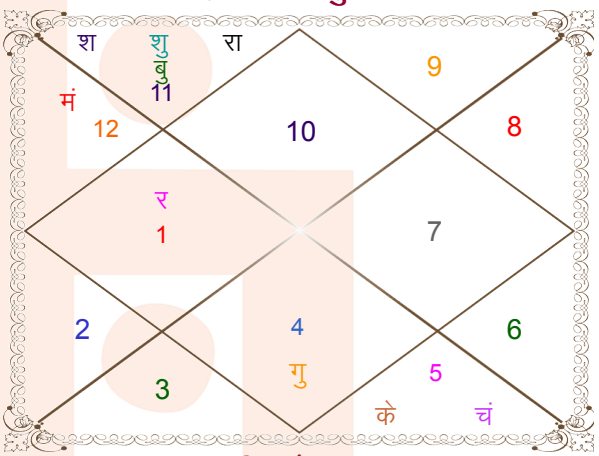

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

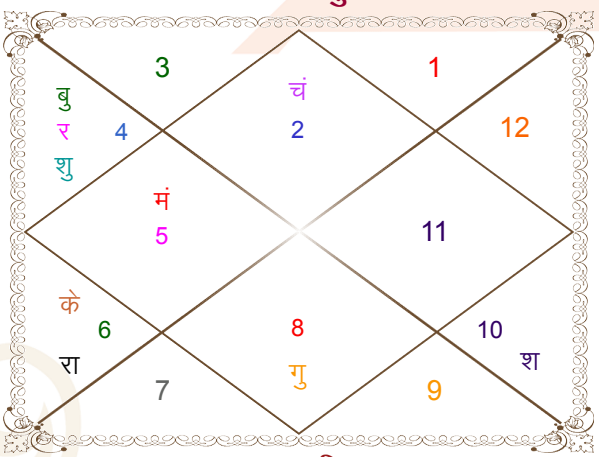

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

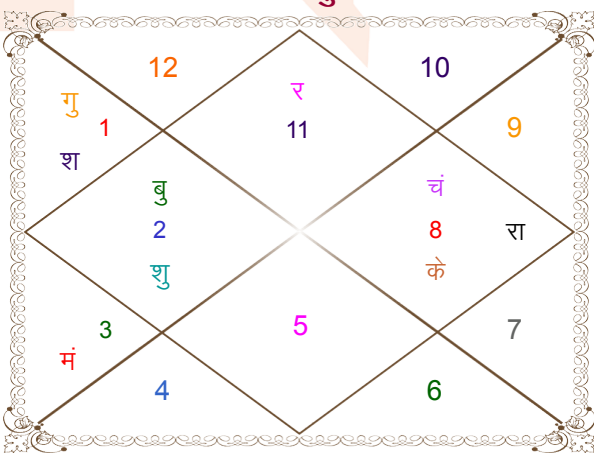

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

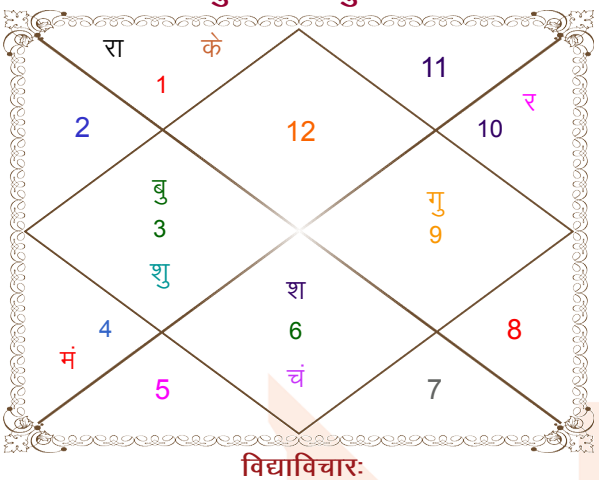

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

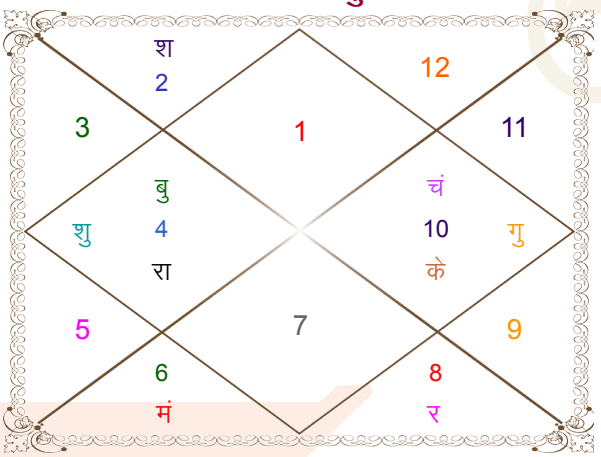

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

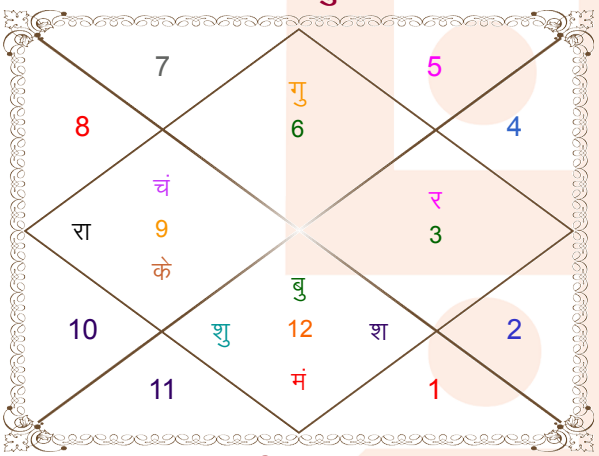

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

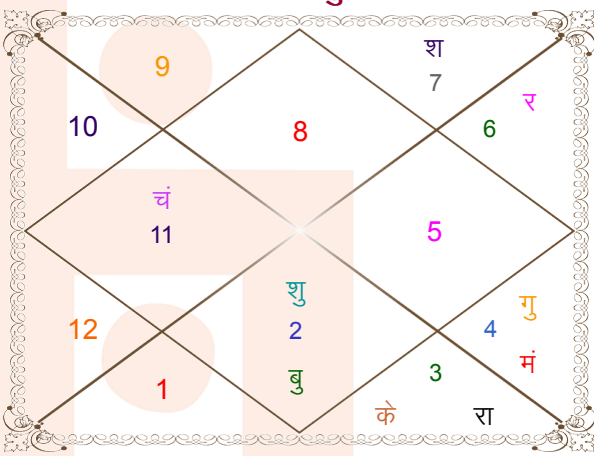

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

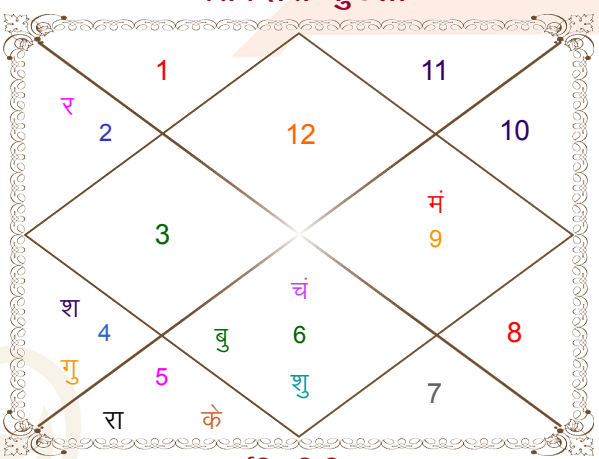

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

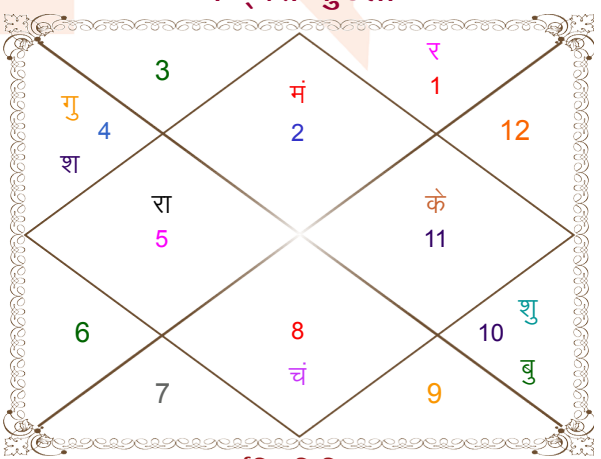

सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	कन्या	सिंह	कुंभ	कन्या	कन्या	वृष	कन्या	कर्क	तुला	मेष
होरा	कर्क	कर्क	कर्क	सिंह	कर्क	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह
द्रेष्काण	मक	मेष	मिथु	मक	मक	वृष	मक	वृश्चि	कुंभ	सिंह
चतुर्थांश	धनु	कुंभ	सिंह	मीन	धनु	वृष	धनु	मक	मक	कर्क
सप्तमांश	वृष	मक	वृष	मिथु	मिथु	धनु	मिथु	वृष	धनु	मिथु
नवमांश	मेष	तुला	मीन	वृष	वृष	मीन	वृष	धनु	मक	कर्क
दशमांश	सिंह	मीन	कर्क	तुला	कन्या	मीन	कन्या	कन्या	मक	कर्क
द्वादशांश	मक	मेष	सिंह	मीन	कुंभ	कर्क	कुंभ	कुंभ	कुंभ	सिंह
षोडशांश	वृष	कर्क	वृष	सिंह	कर्क	वृश्चि	कर्क	मक	कन्या	कन्या
विंशांश	कुंभ	कुंभ	वृश्चि	मिथु	वृष	मेष	वृष	मेष	वृश्चि	वृश्चि
चतुर्विंशांश	मीन	मक	कन्या	कर्क	मिथु	धनु	मिथु	कन्या	मेष	मेष
सप्तविंशांश	मेष	वृश्चि	मक	कन्या	कर्क	मक	कर्क	वृष	कर्क	मक
त्रिंशांश	कन्या	मिथु	धनु	मीन	मीन	कन्या	मीन	मीन	धनु	धनु
खवेदांश	वृश्चि	कन्या	कुंभ	कर्क	वृष	कर्क	वृष	तुला	मिथु	मिथु
अक्षवेदांश	मीन	वृष	कन्या	धनु	कन्या	कर्क	कन्या	कर्क	सिंह	सिंह
षष्ट्यंश	वृष	मेष	वृश्चि	वृष	मक	कर्क	मक	कर्क	सिंह	कुंभ

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
रवि	3 व्यंजन	3 व्यंजन	4 गोपुर	4 नागपुष्प
चन्द्र	1 ———	2 किंसुक	4 गोपुर	4 नागपुष्प
मंगळ	1 ———	1 ———	1 ———	1 ———
बुध	1 ———	2 किंसुक	3 उत्तम	5 कन्दुक
गुरु	3 व्यंजन	4 चामर	6 पारवत	9 पूर्णचन्द
शुक्र	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	4 नागपुष्प
शनि	1 ———	1 ———	2 पारिजात	4 नागपुष्प
राहु	0 ———	0 ———	1 ———	2 भेदक
केतु	1 ———	1 ———	1 ———	1 ———

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	15.65	11.60	9.55	13.85	11.35	14.25	11.00	16.65	8.25
सप्तवर्ग	14.75	11.25	9.00	14.35	12.85	13.60	12.13	15.28	8.13
दशवर्ग	15.68	10.60	9.25	14.03	13.95	12.98	11.45	13.53	8.80
षोडशवर्ग	14.73	10.03	9.08	13.03	13.48	13.10	11.50	13.88	9.05

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	———	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	———	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगळ	मित्र	मित्र	———	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	———	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	———	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	———	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	———	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	———	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	———

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	———	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
चंद्र	शत्रु	———	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
मंगळ	मित्र	शत्रु	———	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु
बुध	मित्र	शत्रु	शत्रु	———	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु
गुरु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	———	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र
शुक्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	———	मित्र	मित्र	शत्रु
शनि	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	———	मित्र	मित्र
राहु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	———	शत्रु
केतु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	———

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	———	सम	अधिमित्र	मित्र	अधिमित्र	सम	सम	सम	अधिशत्रु
चंद्र	सम	———	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	अधिशत्रु	सम
मंगळ	अधिमित्र	सम	———	अधिशत्रु	सम	शत्रु	मित्र	सम	सम
बुध	अधिमित्र	अधिशत्रु	शत्रु	———	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	शत्रु
गुरु	अधिमित्र	अधिमित्र	सम	अधिशत्रु	———	अधिशत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र
शुक्र	सम	अधिशत्रु	शत्रु	सम	शत्रु	———	अधिमित्र	अधिमित्र	सम
शनि	सम	अधिशत्रु	सम	अधिमित्र	मित्र	अधिमित्र	———	अधिमित्र	सम
राहु	सम	अधिशत्रु	सम	मित्र	शत्रु	अधिमित्र	अधिमित्र	———	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	सम	सम	शत्रु	मित्र	सम	सम	अधिशत्रु	———

षट्बल आणि भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	16	35	16	60	41	4	29
सप्तवर्गज बल	128	83	60	118	111	96	99
ओजयुग्मक बल	30	15	0	0	0	30	15
केन्द्र बल	15	15	60	60	15	60	30
द्रेष्काण बल	0	0	0	15	15	0	15
एकुण स्थान बल	188	147	136	253	181	190	189
एकुण दिग्बल	36	38	28	59	19	31	17
नतोन्नत बल	36	24	24	60	36	36	24
पक्ष बल	2	117	2	2	58	58	2
त्रिभाग बल	0	0	0	60	60	0	0
अब्द बल	0	15	0	0	0	0	0
महिना बल	0	0	0	0	0	0	30
वार बल	0	0	0	45	0	0	0
होरा बल	0	60	0	0	0	0	0
अयन बल	75	40	25	34	56	26	8
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
एकुण कालबल	112	256	51	201	210	120	63
एकुण चेष्टाबल	0	0	11	54	38	15	14
एकुण नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
एकुण दृग्बल	23	-22	21	22	-22	22	7
एकुण षट्बल	420	470	264	613	461	420	299
रूप षट्बल	7.0	7.8	4.4	10.2	7.7	7.0	5.0
किमान आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
प्रमाण	1.4	1.3	0.9	1.5	1.2	1.3	1.0
तौलनिक स्थिति	2	3	7	1	5	4	6

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	23.60	44.95	13.23	56.58	39.24	7.86	19.94
कष्ट फल	33.29	6.54	46.46	1.24	20.67	50.33	37.73

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	613	420	264	461	299	299	461	264	420	613	470	420
भावदिग्बल	60	50	20	30	10	10	30	40	50	30	10	40
भावदृष्टि बल	67	-9	60	75	73	-4	32	36	20	25	21	55
एकुण भाव बल	740	461	343	566	381	305	523	340	490	668	502	515
रूप भाव बल	12.3	7.7	5.7	9.4	6.4	5.1	8.7	5.7	8.2	11.1	8.4	8.6
तौलनिक स्थिति	1	8	10	3	9	12	4	11	7	2	6	5

उपग्रह आणि आरूढ

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	कन्या	10:12:54	––	––	हस्त	1	13
गुलिक	गु	वृश्चि	17:04:17	––	––	ज्येष्ठा	1	18
काल	का	धनु	08:00:50	––	––	मूल	3	19
मृत्यु	मृ	मक	25:14:13	––	––	धनिष्ठा	1	23
यमघंटक	यम	तुला	04:57:35	––	––	चित्रा	4	14
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	कन्या	13:09:39	––	––	हस्त	1	13
धूम	धू	मक	05:21:22	––	मूल	उत्तराषाढ़ा	3	21
व्यतिपात	व्य	मिथु	24:38:38	––	मूल	पुनर्वसु	2	7
परिवेश	परि	धनु	24:38:38	नीच	मूल	पूर्वाषाढ़ा	4	20
इन्द्रचाप	इ	कर्क	05:21:22	––	मूल	पुष्य	1	8
उपकेतु	उप	कर्क	22:01:22	––	मूल	आश्लेषा	2	9

प्राणपद	:	मिथु	03:49:11	कारकाँश लग्न	:	तुला	18:12:20
भाव लग्न	:	तुला	00:18:17	होरा लग्न	:	तुला	20:23:41
घटी लग्न	:	धनु	02:28:19	वर्णद लग्न	:	मेष	00:36:35

उपग्रह कुंडली

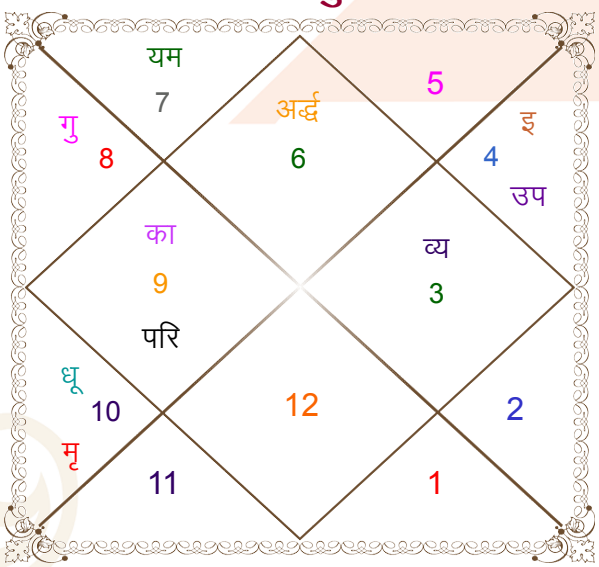

आरूढ़ कुंडली

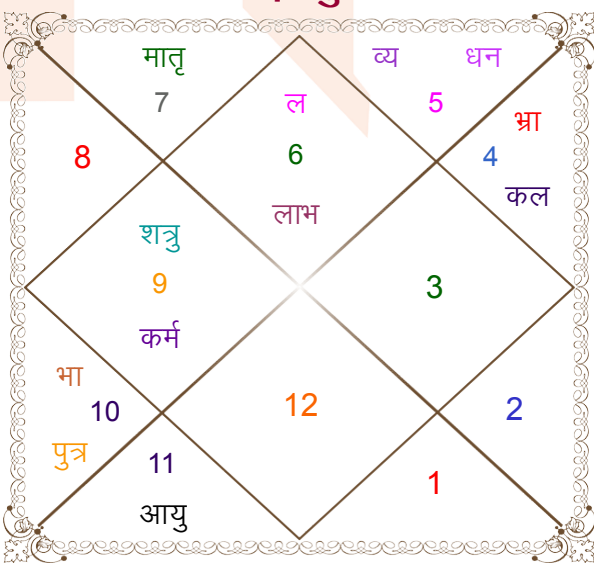

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्कुण
शनि	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1 8
गुरु	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	0	0 4
मंगळ	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1 8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0 8
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0 3
बुध	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1 7
चंद्र	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1 4
लग्न	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1 6
एकुण	**5**	**3**	**3**	**4**	**3**	**3**	**5**	**5**	**4**	**4**	**4**	**5 48**

चंद्र का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	मकुण
शनि	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0 4
गुरु	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0 7
मंगळ	1	0	0	0	1	1	0	0	1	1	0	1 6
सूर्य	1	1	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1 6
शुक्र	0	1	0	1	1	1	0	0	0	1	1	1 7
बुध	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	1	1 8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0 7
लग्न	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0 4
एकुण	**5**	**4**	**2**	**4**	**6**	**5**	**2**	**2**	**3**	**7**	**5**	**4 49**

मंगळ का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिंकुण
शनि	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0 7
गुरु	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	0	0 4
मंगळ	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0 7
सूर्य	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0 5
शुक्र	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1 4
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0 4
चंद्र	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0 3
लग्न	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0 5
एकुण	**2**	**4**	**2**	**3**	**3**	**5**	**3**	**5**	**2**	**3**	**6**	**1 39**

बुद्ध का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिंकुण
शनि	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1 8
गुरु	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0 4
मंगळ	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0 8
सूर्य	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	0 5
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0 8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1 8
चंद्र	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0 6
लग्न	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0 7
एकुण	**5**	**5**	**3**	**6**	**4**	**3**	**4**	**6**	**5**	**4**	**7**	**2 54**

गुरू का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मेंकुण
शनि	0	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0 4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0 8
मंगळ	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1 7
सूर्य	1	1	0	1	1	1	1	0	0	1	1	1 9
शुक्र	1	1	1	0	0	1	0	0	1	1	0	0 6
बुध	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	0	0 8
चंद्र	0	1	0	1	0	1	0	1	0	0	1	0 5
लग्न	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0 9
एकुण	**5**	**8**	**5**	**3**	**5**	**6**	**3**	**6**	**3**	**5**	**5**	**2 56**

शुक्र का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिंकुण
शनि	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0 7
गुरु	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	0	0 5
मंगळ	0	0	1	1	0	1	0	0	1	0	1	1 6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	0 3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0 9
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0 5
चंद्र	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	0	0 9
लग्न	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0 8
एकुण	**5**	**4**	**5**	**5**	**5**	**5**	**4**	**4**	**6**	**3**	**5**	**1 52**

शनि का अष्टकवर्ग

	कर्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मिंकुण
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0 4
गुरु	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0 4
मंगळ	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1 6
सूर्य	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1 7
शुक्र	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0 3
बुध	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	1	1 6
चंद्र	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0 3
लग्न	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1 6
एकुण	**5**	**4**	**4**	**1**	**4**	**3**	**1**	**5**	**2**	**3**	**3**	**4 39**

लग्न का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिंकुण
शनि	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0 6
गुरु	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1 9
मंगळ	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0 5
सूर्य	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0 6
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	0	0 7
बुध	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0 7
चंद्र	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	0 5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0 4
एकुण	**5**	**5**	**6**	**4**	**4**	**4**	**1**	**4**	**4**	**5**	**6**	**1 49**

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	एकुण
शनि	3	3	4	5	4	4	1	4	3	1	5	2	39
गुरु	2	5	8	5	3	5	6	3	6	3	5	5	56
मंगळ	5	2	3	6	1	2	4	2	3	3	5	3	39
सूर्य	4	4	4	5	5	3	3	4	3	3	5	5	48
शुक्र	4	6	3	5	1	5	4	5	5	5	5	4	52
बुध	6	5	4	7	2	5	5	3	6	4	3	4	54
चंद्र	2	4	6	5	2	2	3	7	5	4	5	4	49
बिन्दु	26	29	32	38	18	26	26	28	31	23	33	27	337
रेखा	30	27	24	18	38	30	30	28	25	33	23	29	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	एकुण
शनि	0	2	3	3	1	3	0	2	0	0	4	0	18
गुरु	0	2	3	2	1	2	1	0	4	0	0	2	17
मंगळ	4	0	0	4	0	0	1	0	2	1	2	1	15
सूर्य	1	1	1	1	2	0	0	0	0	0	2	1	9
शुक्र	3	1	0	1	0	0	1	1	4	0	2	0	13
बुध	4	1	1	4	0	1	2	0	4	0	0	1	18
चंद्र	0	2	3	1	0	0	0	3	3	2	2	0	16
रेखा	12	9	11	16	4	6	5	6	17	3	12	5	106

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	एकुण
शनि	0	2	0	3	1	3	0	2	0	0	4	0	15
गुरु	0	2	1	2	1	2	0	0	2	0	0	2	12
मंगळ	4	0	0	4	0	0	1	0	1	0	2	1	13
सूर्य	1	1	1	1	2	0	0	0	0	0	2	1	9
शुक्र	2	1	0	1	0	0	0	1	4	0	2	0	11
बुध	4	1	0	4	0	1	1	0	3	0	0	1	15
चंद्र	0	2	3	1	0	0	0	3	3	0	2	0	14
रेखा	11	9	5	16	4	6	2	6	13	0	12	5	89

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	83	121	94	105	98	94	117
ग्रह पिंड	35	35	30	50	75	25	120
शोध्य पिंड	118	156	124	155	173	119	237

अष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

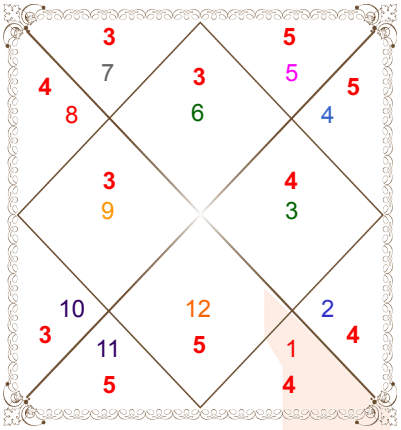

सर्वाष्टकवर्ग

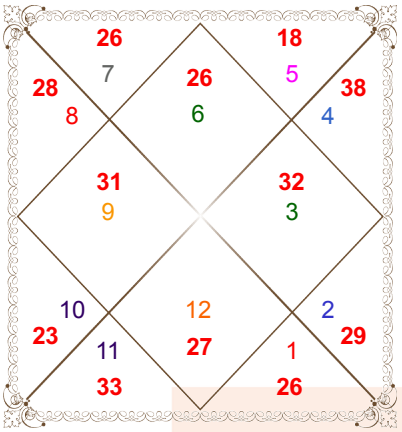

चंद्र का अष्टकवर्ग

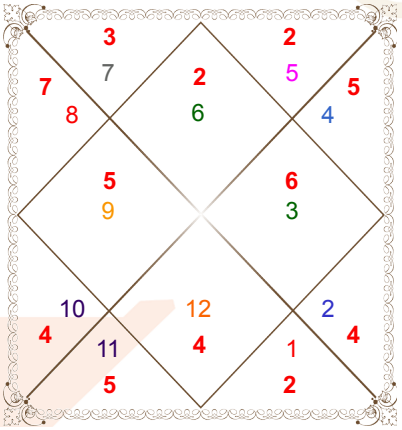

मंगळ का अष्टकवर्ग

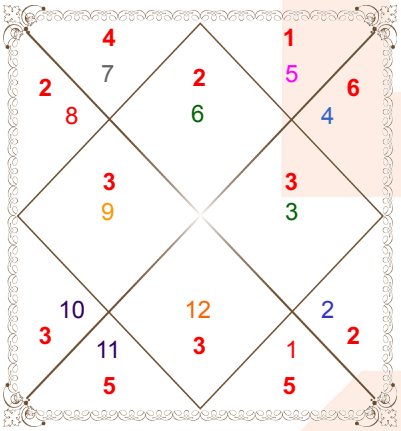

बुद्ध का अष्टकवर्ग

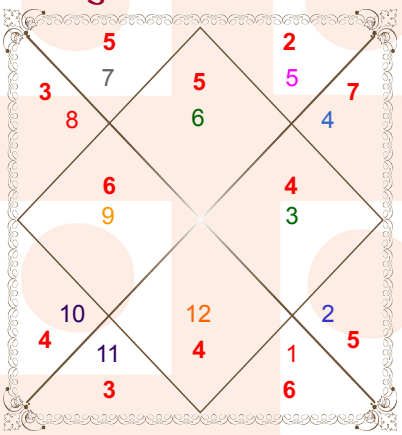

गुरू का अष्टकवर्ग

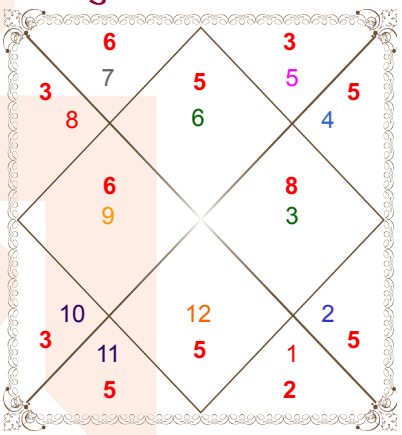

शुक्र का अष्टकवर्ग

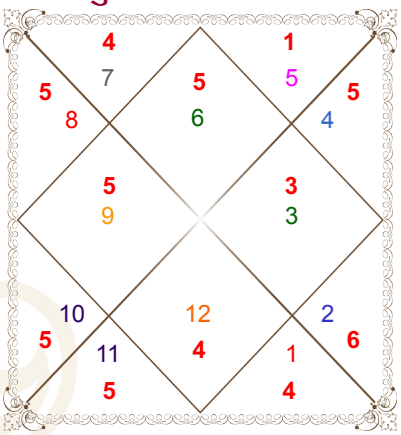

शनि का अष्टकवर्ग

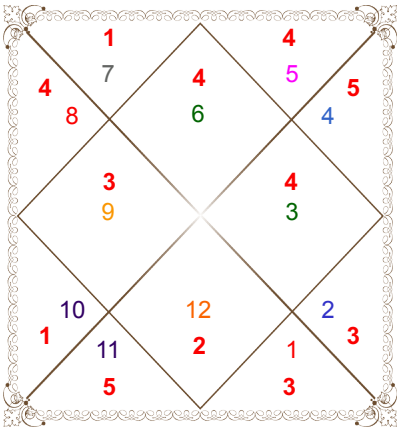

लग्न का अष्टकवर्ग

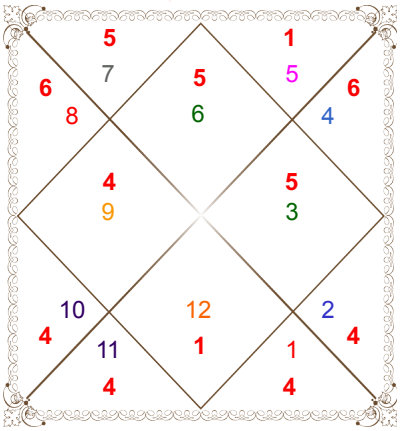

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा वेल : राहु 4 वर्ष 1 महिना 8 दिवस

राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष	
08/09/1976		17/10/1980		17/10/1996		18/10/2015		17/10/2032	
17/10/1980		17/10/1996		18/10/2015		17/10/2032		18/10/2039	
	00/00/0000	गुरु	05/12/1982	शनि	21/10/1999	बुध	15/03/2018	केतु	15/03/2033
	00/00/0000	शनि	17/06/1985	बुध	30/06/2002	केतु	12/03/2019	शुक्र	15/05/2034
	00/00/0000	बुध	23/09/1987	केतु	09/08/2003	शुक्र	10/01/2022	सूर्य	20/09/2034
	00/00/0000	केतु	29/08/1988	शुक्र	08/10/2006	सूर्य	17/11/2022	चंद्र	21/04/2035
	08/09/1976	शुक्र	30/04/1991	सूर्य	20/09/2007	चंद्र	17/04/2024	मंगळ	17/09/2035
शुक्र	06/05/1977	सूर्य	16/02/1992	चंद्र	20/04/2009	मंगळ	14/04/2025	राहु	05/10/2036
सूर्य	30/03/1978	चंद्र	17/06/1993	मंगळ	30/05/2010	राहु	02/11/2027	गुरु	11/09/2037
चंद्र	29/09/1979	मंगळ	24/05/1994	राहु	05/04/2013	गुरु	07/02/2030	शनि	20/10/2038
मंगळ	17/10/1980	राहु	17/10/1996	गुरु	18/10/2015	शनि	17/10/2032	बुध	18/10/2039

शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगळ 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष	
18/10/2039		18/10/2059		17/10/2065		18/10/2075		17/10/2082	
18/10/2059		17/10/2065		18/10/2075		17/10/2082		00/00/0000	
शुक्र	16/02/2043	सूर्य	04/02/2060	चंद्र	17/08/2066	मंगळ	15/03/2076	राहु	29/06/2085
सूर्य	16/02/2044	चंद्र	05/08/2060	मंगळ	18/03/2067	राहु	02/04/2077	गुरु	23/11/2087
चंद्र	17/10/2045	मंगळ	11/12/2060	राहु	16/09/2068	गुरु	09/03/2078	शनि	29/09/2090
मंगळ	17/12/2046	राहु	04/11/2061	गुरु	16/01/2070	शनि	18/04/2079	बुध	17/04/2093
राहु	17/12/2049	गुरु	24/08/2062	शनि	18/08/2071	बुध	14/04/2080	केतु	06/05/2094
गुरु	17/08/2052	शनि	06/08/2063	बुध	16/01/2073	केतु	10/09/2080	शुक्र	08/09/2096
शनि	18/10/2055	बुध	11/06/2064	केतु	17/08/2073	शुक्र	10/11/2081		00/00/0000
बुध	17/08/2058	केतु	17/10/2064	शुक्र	18/04/2075	सूर्य	18/03/2082		00/00/0000
केतु	18/10/2059	शुक्र	17/10/2065	सूर्य	18/10/2075	चंद्र	17/10/2082		00/00/0000

- वरील दशा चन्द्रमा चे अंशा चे आधार वर्ती दीलेली आहे. भयात भभोग चे आधार अनुसार दशाच्या भोग्यकाल राहु 4 वर्ष 1 मा 19 दि होता आहेत.
- वरील दिनांक दशा समाप्ति चा समय दाखवते. विंशोत्तरी दशा पूर्ण 120 वर्षाची बिना आयुनिर्णय दिलेली आहे.

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगळ		गुरु - गुरु	
08/09/1976		06/05/1977		30/03/1978		29/09/1979		17/10/1980	
06/05/1977		30/03/1978		29/09/1979		17/10/1980		05/12/1982	
	00/00/0000	सूर्य	22/05/1977	चंद्र	15/05/1978	मंगळ	22/10/1979	गुरु	29/01/1981
	00/00/0000	चंद्र	19/06/1977	मंगळ	16/06/1978	राहु	18/12/1979	शनि	01/06/1981
	00/00/0000	मंगळ	08/07/1977	राहु	06/09/1978	गुरु	07/02/1980	बुध	19/09/1981
	00/00/0000	राहु	26/08/1977	गुरु	18/11/1978	शनि	08/04/1980	केतु	04/11/1981
	00/00/0000	गुरु	09/10/1977	शनि	13/02/1979	बुध	01/06/1980	शुक्र	14/03/1982
	08/09/1976	शनि	30/11/1977	बुध	02/05/1979	केतु	24/06/1980	सूर्य	22/04/1982
शनि	29/09/1976	बुध	15/01/1978	केतु	03/06/1979	शुक्र	27/08/1980	चंद्र	26/06/1982
बुध	03/03/1977	केतु	04/02/1978	शुक्र	02/09/1979	सूर्य	15/09/1980	मंगळ	10/08/1982
केतु	06/05/1977	शुक्र	30/03/1978	सूर्य	29/09/1979	चंद्र	17/10/1980	राहु	05/12/1982

गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य	
05/12/1982		17/06/1985		23/09/1987		29/08/1988		30/04/1991	
17/06/1985		23/09/1987		29/08/1988		30/04/1991		16/02/1992	
शनि	01/05/1983	बुध	13/10/1985	केतु	13/10/1987	शुक्र	07/02/1989	सूर्य	15/05/1991
बुध	09/09/1983	केतु	30/11/1985	शुक्र	09/12/1987	सूर्य	28/03/1989	चंद्र	08/06/1991
केतु	02/11/1983	शुक्र	17/04/1986	सूर्य	26/12/1987	चंद्र	17/06/1989	मंगळ	25/06/1991
शुक्र	04/04/1984	सूर्य	28/05/1986	चंद्र	23/01/1988	मंगळ	13/08/1989	राहु	08/08/1991
सूर्य	20/05/1984	चंद्र	05/08/1986	मंगळ	12/02/1988	राहु	06/01/1990	गुरु	16/09/1991
चंद्र	05/08/1984	मंगळ	23/09/1986	राहु	03/04/1988	गुरु	16/05/1990	शनि	01/11/1991
मंगळ	28/09/1984	राहु	25/01/1987	गुरु	19/05/1988	शनि	17/10/1990	बुध	13/12/1991
राहु	14/02/1985	गुरु	15/05/1987	शनि	12/07/1988	बुध	04/03/1991	केतु	30/12/1991
गुरु	17/06/1985	शनि	23/09/1987	बुध	29/08/1988	केतु	30/04/1991	शुक्र	16/02/1992

गुरु - चंद्र		गुरु - मंगळ		गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध	
16/02/1992		17/06/1993		24/05/1994		17/10/1996		21/10/1999	
17/06/1993		24/05/1994		17/10/1996		21/10/1999		30/06/2002	
चंद्र	28/03/1992	मंगळ	07/07/1993	राहु	03/10/1994	शनि	09/04/1997	बुध	08/03/2000
मंगळ	25/04/1992	राहु	27/08/1993	गुरु	28/01/1995	बुध	11/09/1997	केतु	04/05/2000
राहु	07/07/1992	गुरु	12/10/1993	शनि	15/06/1995	केतु	15/11/1997	शुक्र	15/10/2000
गुरु	10/09/1992	शनि	05/12/1993	बुध	18/10/1995	शुक्र	17/05/1998	सूर्य	03/12/2000
शनि	26/11/1992	बुध	22/01/1994	केतु	08/12/1995	सूर्य	11/07/1998	चंद्र	23/02/2001
बुध	03/02/1993	केतु	11/02/1994	शुक्र	02/05/1996	चंद्र	10/10/1998	मंगळ	22/04/2001
केतु	04/03/1993	शुक्र	09/04/1994	सूर्य	15/06/1996	मंगळ	13/12/1998	राहु	16/09/2001
शुक्र	24/05/1993	सूर्य	26/04/1994	चंद्र	27/08/1996	राहु	27/05/1999	गुरु	25/01/2002
सूर्य	17/06/1993	चंद्र	24/05/1994	मंगळ	17/10/1996	गुरु	21/10/1999	शनि	30/06/2002

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगळ	
30/06/2002		09/08/2003		08/10/2006		20/09/2007		20/04/2009	
09/08/2003		08/10/2006		20/09/2007		20/04/2009		30/05/2010	
केतु	23/07/2002	शुक्र	17/02/2004	सूर्य	26/10/2006	चंद्र	07/11/2007	मंगळ	14/05/2009
शुक्र	29/09/2002	सूर्य	15/04/2004	चंद्र	23/11/2006	मंगळ	11/12/2007	राहु	14/07/2009
सूर्य	19/10/2002	चंद्र	21/07/2004	मंगळ	14/12/2006	राहु	07/03/2008	गुरु	06/09/2009
चंद्र	22/11/2002	मंगळ	26/09/2004	राहु	04/02/2007	गुरु	23/05/2008	शनि	09/11/2009
मंगळ	15/12/2002	राहु	18/03/2005	गुरु	22/03/2007	शनि	23/08/2008	बुध	05/01/2010
राहु	14/02/2003	गुरु	20/08/2005	शनि	16/05/2007	बुध	12/11/2008	केतु	29/01/2010
गुरु	09/04/2003	शनि	19/02/2006	बुध	04/07/2007	केतु	16/12/2008	शुक्र	06/04/2010
शनि	12/06/2003	बुध	02/08/2006	केतु	24/07/2007	शुक्र	23/03/2009	सूर्य	27/04/2010
बुध	09/08/2003	केतु	08/10/2006	शुक्र	20/09/2007	सूर्य	20/04/2009	चंद्र	30/05/2010

शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र	
30/05/2010		05/04/2013		18/10/2015		15/03/2018		12/03/2019	
05/04/2013		18/10/2015		15/03/2018		12/03/2019		10/01/2022	
राहु	02/11/2010	गुरु	07/08/2013	बुध	19/02/2016	केतु	05/04/2018	शुक्र	01/09/2019
गुरु	21/03/2011	शनि	31/12/2013	केतु	10/04/2016	शुक्र	05/06/2018	सूर्य	23/10/2019
शनि	02/09/2011	बुध	11/05/2014	शुक्र	04/09/2016	सूर्य	23/06/2018	चंद्र	17/01/2020
बुध	28/01/2012	केतु	04/07/2014	सूर्य	18/10/2016	चंद्र	23/07/2018	मंगळ	17/03/2020
केतु	28/03/2012	शुक्र	05/12/2014	चंद्र	30/12/2016	मंगळ	13/08/2018	राहु	19/08/2020
शुक्र	18/09/2012	सूर्य	21/01/2015	मंगळ	20/02/2017	राहु	06/10/2018	गुरु	04/01/2021
सूर्य	09/11/2012	चंद्र	08/04/2015	राहु	02/07/2017	गुरु	24/11/2018	शनि	17/06/2021
चंद्र	04/02/2013	मंगळ	01/06/2015	गुरु	27/10/2017	शनि	20/01/2019	बुध	11/11/2021
मंगळ	05/04/2013	राहु	18/10/2015	शनि	15/03/2018	बुध	12/03/2019	केतु	10/01/2022

बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगळ		बुध - राहु		बुध - गुरु	
10/01/2022		17/11/2022		17/04/2024		14/04/2025		02/11/2027	
17/11/2022		17/04/2024		14/04/2025		02/11/2027		07/02/2030	
सूर्य	26/01/2022	चंद्र	30/12/2022	मंगळ	08/05/2024	राहु	01/09/2025	गुरु	20/02/2028
चंद्र	21/02/2022	मंगळ	29/01/2023	राहु	02/07/2024	गुरु	03/01/2026	शनि	30/06/2028
मंगळ	11/03/2022	राहु	17/04/2023	गुरु	19/08/2024	शनि	31/05/2026	बुध	26/10/2028
राहु	26/04/2022	गुरु	25/06/2023	शनि	15/10/2024	बुध	10/10/2026	केतु	13/12/2028
गुरु	07/06/2022	शनि	15/09/2023	बुध	06/12/2024	केतु	03/12/2026	शुक्र	30/04/2029
शनि	26/07/2022	बुध	27/11/2023	केतु	27/12/2024	शुक्र	07/05/2027	सूर्य	10/06/2029
बुध	08/09/2022	केतु	27/12/2023	शुक्र	25/02/2025	सूर्य	23/06/2027	चंद्र	18/08/2029
केतु	26/09/2022	शुक्र	22/03/2024	सूर्य	15/03/2025	चंद्र	08/09/2027	मंगळ	05/10/2029
शुक्र	17/11/2022	सूर्य	17/04/2024	चंद्र	14/04/2025	मंगळ	02/11/2027	राहु	07/02/2030

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र	
07/02/2030		17/10/2032		15/03/2033		15/05/2034		20/09/2034	
17/10/2032		15/03/2033		15/05/2034		20/09/2034		21/04/2035	
शनि	12/07/2030	केतु	26/10/2032	शुक्र	25/05/2033	सूर्य	21/05/2034	चंद्र	08/10/2034
बुध	29/11/2030	शुक्र	19/11/2032	सूर्य	15/06/2033	चंद्र	01/06/2034	मंगळ	20/10/2034
केतु	25/01/2031	सूर्य	27/11/2032	चंद्र	21/07/2033	मंगळ	09/06/2034	राहु	21/11/2034
शुक्र	08/07/2031	चंद्र	09/12/2032	मंगळ	15/08/2033	राहु	28/06/2034	गुरु	19/12/2034
सूर्य	26/08/2031	मंगळ	18/12/2032	राहु	18/10/2033	गुरु	15/07/2034	शनि	22/01/2035
चंद्र	16/11/2031	राहु	09/01/2033	गुरु	13/12/2033	शनि	04/08/2034	बुध	21/02/2035
मंगळ	12/01/2032	गुरु	29/01/2033	शनि	19/02/2034	बुध	22/08/2034	केतु	06/03/2035
राहु	08/06/2032	शनि	22/02/2033	बुध	20/04/2034	केतु	30/08/2034	शुक्र	10/04/2035
गुरु	17/10/2032	बुध	15/03/2033	केतु	15/05/2034	शुक्र	20/09/2034	सूर्य	21/04/2035

केतु - मंगळ		केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध	
21/04/2035		17/09/2035		05/10/2036		11/09/2037		20/10/2038	
17/09/2035		05/10/2036		11/09/2037		20/10/2038		18/10/2039	
मंगळ	30/04/2035	राहु	14/11/2035	गुरु	19/11/2036	शनि	14/11/2037	बुध	11/12/2038
राहु	22/05/2035	गुरु	04/01/2036	शनि	12/01/2037	बुध	10/01/2038	केतु	01/01/2039
गुरु	11/06/2035	शनि	05/03/2036	बुध	01/03/2037	केतु	03/02/2038	शुक्र	02/03/2039
शनि	05/07/2035	बुध	28/04/2036	केतु	21/03/2037	शुक्र	11/04/2038	सूर्य	20/03/2039
बुध	26/07/2035	केतु	20/05/2036	शुक्र	17/05/2037	सूर्य	01/05/2038	चंद्र	19/04/2039
केतु	03/08/2035	शुक्र	23/07/2036	सूर्य	03/06/2037	चंद्र	04/06/2038	मंगळ	11/05/2039
शुक्र	28/08/2035	सूर्य	11/08/2036	चंद्र	02/07/2037	मंगळ	28/06/2038	राहु	04/07/2039
सूर्य	05/09/2035	चंद्र	12/09/2036	मंगळ	21/07/2037	राहु	27/08/2038	गुरु	21/08/2039
चंद्र	17/09/2035	मंगळ	05/10/2036	राहु	11/09/2037	गुरु	20/10/2038	शनि	18/10/2039

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगळ		शुक्र - राहु	
18/10/2039		16/02/2043		16/02/2044		17/10/2045		17/12/2046	
16/02/2043		16/02/2044		17/10/2045		17/12/2046		17/12/2049	
शुक्र	07/05/2040	सूर्य	06/03/2043	चंद्र	07/04/2044	मंगळ	11/11/2045	राहु	31/05/2047
सूर्य	07/07/2040	चंद्र	06/04/2043	मंगळ	13/05/2044	राहु	14/01/2046	गुरु	24/10/2047
चंद्र	17/10/2040	मंगळ	27/04/2043	राहु	12/08/2044	गुरु	12/03/2046	शनि	14/04/2048
मंगळ	27/12/2040	राहु	21/06/2043	गुरु	01/11/2044	शनि	18/05/2046	बुध	16/09/2048
राहु	27/06/2041	गुरु	09/08/2043	शनि	05/02/2045	बुध	17/07/2046	केतु	19/11/2048
गुरु	07/12/2041	शनि	05/10/2043	बुध	03/05/2045	केतु	11/08/2046	शुक्र	21/05/2049
शनि	18/06/2042	बुध	26/11/2043	केतु	07/06/2045	शुक्र	21/10/2046	सूर्य	15/07/2049
बुध	07/12/2042	केतु	17/12/2043	शुक्र	17/09/2045	सूर्य	12/11/2046	चंद्र	14/10/2049
केतु	16/02/2043	शुक्र	16/02/2044	सूर्य	17/10/2045	चंद्र	17/12/2046	मंगळ	17/12/2049

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य	
17/12/2049		17/08/2052		18/10/2055		17/08/2058		18/10/2059	
17/08/2052		18/10/2055		17/08/2058		18/10/2059		04/02/2060	
गुरु	26/04/2050	शनि	16/02/2053	बुध	12/03/2056	केतु	11/09/2058	सूर्य	23/10/2059
शनि	27/09/2050	बुध	30/07/2053	केतु	12/05/2056	शुक्र	21/11/2058	चंद्र	01/11/2059
बुध	12/02/2051	केतु	05/10/2053	शुक्र	31/10/2056	सूर्य	13/12/2058	मंगळ	08/11/2059
केतु	10/04/2051	शुक्र	16/04/2054	सूर्य	22/12/2056	चंद्र	17/01/2059	राहु	24/11/2059
शुक्र	19/09/2051	सूर्य	13/06/2054	चंद्र	18/03/2057	मंगळ	11/02/2059	गुरु	09/12/2059
सूर्य	07/11/2051	चंद्र	17/09/2054	मंगळ	17/05/2057	राहु	16/04/2059	शनि	26/12/2059
चंद्र	27/01/2052	मंगळ	24/11/2054	राहु	20/10/2057	गुरु	12/06/2059	बुध	10/01/2060
मंगळ	24/03/2052	राहु	16/05/2055	गुरु	07/03/2058	शनि	18/08/2059	केतु	17/01/2060
राहु	17/08/2052	गुरु	18/10/2055	शनि	17/08/2058	बुध	18/10/2059	शुक्र	04/02/2060

सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगळ		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि	
04/02/2060		05/08/2060		11/12/2060		04/11/2061		24/08/2062	
05/08/2060		11/12/2060		04/11/2061		24/08/2062		06/08/2063	
चंद्र	19/02/2060	मंगळ	12/08/2060	राहु	29/01/2061	गुरु	13/12/2061	शनि	17/10/2062
मंगळ	01/03/2060	राहु	31/08/2060	गुरु	14/03/2061	शनि	29/01/2062	बुध	06/12/2062
राहु	28/03/2060	गुरु	17/09/2060	शनि	05/05/2061	बुध	11/03/2062	केतु	26/12/2062
गुरु	22/04/2060	शनि	08/10/2060	बुध	20/06/2061	केतु	28/03/2062	शुक्र	22/02/2063
शनि	21/05/2060	बुध	26/10/2060	केतु	10/07/2061	शुक्र	16/05/2062	सूर्य	11/03/2063
बुध	16/06/2060	केतु	02/11/2060	शुक्र	02/09/2061	सूर्य	30/05/2062	चंद्र	09/04/2063
केतु	26/06/2060	शुक्र	24/11/2060	सूर्य	19/09/2061	चंद्र	24/06/2062	मंगळ	29/04/2063
शुक्र	27/07/2060	सूर्य	30/11/2060	चंद्र	16/10/2061	मंगळ	11/07/2062	राहु	20/06/2063
सूर्य	05/08/2060	चंद्र	11/12/2060	मंगळ	04/11/2061	राहु	24/08/2062	गुरु	06/08/2063

सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगळ	
06/08/2063		11/06/2064		17/10/2064		17/10/2065		17/08/2066	
11/06/2064		17/10/2064		17/10/2065		17/08/2066		18/03/2067	
बुध	18/09/2063	केतु	18/06/2064	शुक्र	17/12/2064	चंद्र	11/11/2065	मंगळ	30/08/2066
केतु	07/10/2063	शुक्र	10/07/2064	सूर्य	04/01/2065	मंगळ	29/11/2065	राहु	01/10/2066
शुक्र	27/11/2063	सूर्य	16/07/2064	चंद्र	03/02/2065	राहु	14/01/2066	गुरु	29/10/2066
सूर्य	13/12/2063	चंद्र	27/07/2064	मंगळ	25/02/2065	गुरु	23/02/2066	शनि	02/12/2066
चंद्र	08/01/2064	मंगळ	03/08/2064	राहु	20/04/2065	शनि	13/04/2066	बुध	01/01/2067
मंगळ	26/01/2064	राहु	22/08/2064	गुरु	08/06/2065	बुध	26/05/2066	केतु	14/01/2067
राहु	12/03/2064	गुरु	08/09/2064	शनि	05/08/2065	केतु	12/06/2066	शुक्र	18/02/2067
गुरु	23/04/2064	शनि	29/09/2064	बुध	26/09/2065	शुक्र	02/08/2066	सूर्य	01/03/2067
शनि	11/06/2064	बुध	17/10/2064	केतु	17/10/2065	सूर्य	17/08/2066	चंद्र	18/03/2067

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु	
18/03/2067		16/09/2068		16/01/2070		18/08/2071		16/01/2073	
16/09/2068		16/01/2070		18/08/2071		16/01/2073		17/08/2073	
राहु	09/06/2067	गुरु	20/11/2068	शनि	18/04/2070	बुध	30/10/2071	केतु	29/01/2073
गुरु	21/08/2067	शनि	05/02/2069	बुध	09/07/2070	केतु	29/11/2071	शुक्र	05/03/2073
शनि	15/11/2067	बुध	15/04/2069	केतु	12/08/2070	शुक्र	23/02/2072	सूर्य	16/03/2073
बुध	01/02/2068	केतु	14/05/2069	शुक्र	16/11/2070	सूर्य	20/03/2072	चंद्र	02/04/2073
केतु	04/03/2068	शुक्र	03/08/2069	सूर्य	15/12/2070	चंद्र	02/05/2072	मंगळ	15/04/2073
शुक्र	03/06/2068	सूर्य	27/08/2069	चंद्र	01/02/2071	मंगळ	02/06/2072	राहु	17/05/2073
सूर्य	01/07/2068	चंद्र	07/10/2069	मंगळ	07/03/2071	राहु	18/08/2072	गुरु	14/06/2073
चंद्र	15/08/2068	मंगळ	04/11/2069	राहु	02/06/2071	गुरु	26/10/2072	शनि	18/07/2073
मंगळ	16/09/2068	राहु	16/01/2070	गुरु	18/08/2071	शनि	16/01/2073	बुध	17/08/2073

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगळ - मंगळ		मंगळ - राहु		मंगळ - गुरु	
17/08/2073		18/04/2075		18/10/2075		15/03/2076		02/04/2077	
18/04/2075		18/10/2075		15/03/2076		02/04/2077		09/03/2078	
शुक्र	27/11/2073	सूर्य	27/04/2075	मंगळ	26/10/2075	राहु	11/05/2076	गुरु	18/05/2077
सूर्य	27/12/2073	चंद्र	12/05/2075	राहु	18/11/2075	गुरु	01/07/2076	शनि	11/07/2077
चंद्र	16/02/2074	मंगळ	23/05/2075	गुरु	08/12/2075	शनि	31/08/2076	बुध	28/08/2077
मंगळ	23/03/2074	राहु	19/06/2075	शनि	31/12/2075	बुध	24/10/2076	केतु	17/09/2077
राहु	23/06/2074	गुरु	14/07/2075	बुध	21/01/2076	केतु	16/11/2076	शुक्र	13/11/2077
गुरु	12/09/2074	शनि	12/08/2075	केतु	30/01/2076	शुक्र	19/01/2077	सूर्य	30/11/2077
शनि	17/12/2074	बुध	06/09/2075	शुक्र	24/02/2076	सूर्य	07/02/2077	चंद्र	28/12/2077
बुध	13/03/2075	केतु	17/09/2075	सूर्य	02/03/2076	चंद्र	11/03/2077	मंगळ	17/01/2078
केतु	18/04/2075	शुक्र	18/10/2075	चंद्र	15/03/2076	मंगळ	02/04/2077	राहु	09/03/2078

मंगळ - शनि		मंगळ - बुध		मंगळ - केतु		मंगळ - शुक्र		मंगळ - सूर्य	
09/03/2078		18/04/2079		14/04/2080		10/09/2080		10/11/2081	
18/04/2079		14/04/2080		10/09/2080		10/11/2081		18/03/2082	
शनि	12/05/2078	बुध	08/06/2079	केतु	23/04/2080	शुक्र	20/11/2080	सूर्य	17/11/2081
बुध	09/07/2078	केतु	29/06/2079	शुक्र	18/05/2080	सूर्य	12/12/2080	चंद्र	27/11/2081
केतु	01/08/2078	शुक्र	29/08/2079	सूर्य	25/05/2080	चंद्र	16/01/2081	मंगळ	05/12/2081
शुक्र	08/10/2078	सूर्य	16/09/2079	चंद्र	07/06/2080	मंगळ	10/02/2081	राहु	24/12/2081
सूर्य	28/10/2078	चंद्र	16/10/2079	मंगळ	15/06/2080	राहु	15/04/2081	गुरु	10/01/2082
चंद्र	01/12/2078	मंगळ	06/11/2079	राहु	08/07/2080	गुरु	11/06/2081	शनि	30/01/2082
मंगळ	24/12/2078	राहु	30/12/2079	गुरु	28/07/2080	शनि	17/08/2081	बुध	17/02/2082
राहु	23/02/2079	गुरु	17/02/2080	शनि	20/08/2080	बुध	17/10/2081	केतु	25/02/2082
गुरु	18/04/2079	शनि	14/04/2080	बुध	10/09/2080	केतु	10/11/2081	शुक्र	18/03/2082

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

बुध - राहु - गुरु	
01/09/2025 14:15	
03/01/2026 18:41	
गुरु	18/09/2025 03:39
शनि	07/10/2025 19:33
बुध	25/10/2025 09:47
केतु	01/11/2025 15:38
शुक्र	22/11/2025 08:22
सूर्य	28/11/2025 13:24
चंद्र	08/12/2025 21:46
मंगळ	16/12/2025 03:38
राहु	03/01/2026 18:41

बुध - राहु - शनि	
03/01/2026 18:41	
31/05/2026 05:58	
शनि	27/01/2026 03:05
बुध	17/02/2026 00:28
केतु	25/02/2026 14:56
शुक्र	22/03/2026 04:49
सूर्य	29/03/2026 13:46
चंद्र	10/04/2026 20:43
मंगळ	19/04/2026 11:10
राहु	11/05/2026 14:04
गुरु	31/05/2026 05:58

बुध - राहु - बुध	
31/05/2026 05:58	
10/10/2026 04:41	
बुध	18/06/2026 22:35
केतु	26/06/2026 15:18
शुक्र	18/07/2026 15:06
सूर्य	25/07/2026 05:26
चंद्र	05/08/2026 05:19
मंगळ	12/08/2026 22:03
राहु	01/09/2026 17:03
गुरु	19/09/2026 07:17
शनि	10/10/2026 04:41

बुध - राहु - केतु	
10/10/2026 04:41	
03/12/2026 12:37	
केतु	13/10/2026 08:45
शुक्र	22/10/2026 10:04
सूर्य	25/10/2026 03:16
चंद्र	29/10/2026 15:56
मंगळ	01/11/2026 19:59
राहु	09/11/2026 23:35
गुरु	17/11/2026 05:26
शनि	25/11/2026 19:54
बुध	03/12/2026 12:37

बुध - राहु - शुक्र	
03/12/2026 12:37	
07/05/2027 18:10	
शुक्र	29/12/2026 09:33
सूर्य	06/01/2027 03:50
चंद्र	19/01/2027 02:17
मंगळ	28/01/2027 03:37
राहु	20/02/2027 10:27
गुरु	13/03/2027 03:11
शनि	06/04/2027 17:04
बुध	28/04/2027 16:51
केतु	07/05/2027 18:10

बुध - राहु - सूर्य	
07/05/2027 18:10	
23/06/2027 07:50	
सूर्य	10/05/2027 02:03
चंद्र	13/05/2027 23:12
मंगळ	16/05/2027 16:24
राहु	23/05/2027 16:03
गुरु	29/05/2027 21:04
शनि	06/06/2027 06:02
बुध	12/06/2027 20:22
केतु	15/06/2027 13:34
शुक्र	23/06/2027 07:50

बुध - राहु - चंद्र	
23/06/2027 07:50	
08/09/2027 22:37	
चंद्र	29/06/2027 19:04
मंगळ	04/07/2027 07:44
राहु	15/07/2027 23:09
गुरु	26/07/2027 07:31
शनि	07/08/2027 14:27
बुध	18/08/2027 14:21
केतु	23/08/2027 03:01
शुक्र	05/09/2027 01:29
सूर्य	08/09/2027 22:37

बुध - राहु - मंगळ	
08/09/2027 22:37	
02/11/2027 06:33	
मंगळ	12/09/2027 02:41
राहु	20/09/2027 06:16
गुरु	27/09/2027 12:08
शनि	06/10/2027 02:35
बुध	13/10/2027 19:19
केतु	16/10/2027 23:22
शुक्र	26/10/2027 00:42
सूर्य	28/10/2027 17:54
चंद्र	02/11/2027 06:33

बुध - गुरु - गुरु	
02/11/2027 06:33	
20/02/2028 15:50	
गुरु	16/11/2027 23:48
शनि	04/12/2027 11:16
बुध	20/12/2027 02:35
केतु	26/12/2027 13:07
शुक्र	13/01/2028 22:40
सूर्य	19/01/2028 11:08
चंद्र	28/01/2028 15:54
मंगळ	04/02/2028 02:27
राहु	20/02/2028 15:50

बुध - गुरु - शनि	
20/02/2028 15:50	
30/06/2028 17:51	
शनि	12/03/2028 09:57
बुध	30/03/2028 23:39
केतु	07/04/2028 15:10
शुक्र	29/04/2028 11:30
सूर्य	06/05/2028 00:48
चंद्र	16/05/2028 22:58
मंगळ	24/05/2028 14:29
राहु	13/06/2028 06:23
गुरु	30/06/2028 17:51

बुध - गुरु - बुध	
30/06/2028 17:51	
26/10/2028 00:43	
बुध	17/07/2028 08:38
केतु	24/07/2028 04:50
शुक्र	12/08/2028 17:58
सूर्य	18/08/2028 14:43
चंद्र	28/08/2028 09:17
मंगळ	04/09/2028 05:29
राहु	21/09/2028 19:43
गुरु	07/10/2028 11:02
शनि	26/10/2028 00:43

बुध - गुरु - केतु	
26/10/2028 00:43	
13/12/2028 07:47	
केतु	28/10/2028 20:20
शुक्र	05/11/2028 21:30
सूर्य	08/11/2028 07:27
चंद्र	12/11/2028 08:03
मंगळ	15/11/2028 03:39
राहु	22/11/2028 09:31
गुरु	28/11/2028 20:04
शनि	06/12/2028 11:35
बुध	13/12/2028 07:47

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

बुध - गुरु - शुक्र	
13/12/2028 07:47	
30/04/2029 07:23	
शुक्र	05/01/2029 07:43
सूर्य	12/01/2029 05:17
चंद्र	23/01/2029 17:15
मंगळ	31/01/2029 18:26
राहु	21/02/2029 11:10
गुरु	11/03/2029 20:43
शनि	02/04/2029 17:03
बुध	22/04/2029 06:12
केतु	30/04/2029 07:23

बुध - गुरु - सूर्य	
30/04/2029 07:23	
10/06/2029 16:51	
सूर्य	02/05/2029 09:03
चंद्र	05/05/2029 19:50
मंगळ	08/05/2029 05:48
राहु	14/05/2029 10:49
गुरु	19/05/2029 23:17
शनि	26/05/2029 12:35
बुध	01/06/2029 09:19
केतु	03/06/2029 19:17
शुक्र	10/06/2029 16:51

बुध - गुरु - चंद्र	
10/06/2029 16:51	
18/08/2029 16:39	
चंद्र	16/06/2029 10:50
मंगळ	20/06/2029 11:26
राहु	30/06/2029 19:48
गुरु	10/07/2029 00:34
शनि	20/07/2029 22:44
बुध	30/07/2029 17:19
केतु	03/08/2029 17:54
शुक्र	15/08/2029 05:52
सूर्य	18/08/2029 16:39

बुध - गुरु - मंगळ	
18/08/2029 16:39	
05/10/2029 23:43	
मंगळ	21/08/2029 12:16
राहु	28/08/2029 18:08
गुरु	04/09/2029 04:40
शनि	11/09/2029 20:11
बुध	18/09/2029 16:23
केतु	21/09/2029 12:00
शुक्र	29/09/2029 13:11
सूर्य	01/10/2029 23:08
चंद्र	05/10/2029 23:43

बुध - गुरु - राहु	
05/10/2029 23:43	
07/02/2030 04:09	
राहु	24/10/2029 14:47
गुरु	10/11/2029 04:10
शनि	29/11/2029 20:05
बुध	17/12/2029 10:18
केतु	24/12/2029 16:10
शुक्र	14/01/2030 08:54
सूर्य	20/01/2030 13:56
चंद्र	30/01/2030 22:18
मंगळ	07/02/2030 04:09

बुध - शनि - शनि	
07/02/2030 04:09	
12/07/2030 20:03	
शनि	03/03/2030 19:40
बुध	25/03/2030 20:56
केतु	03/04/2030 22:51
शुक्र	29/04/2030 21:30
सूर्य	07/05/2030 16:18
चंद्र	20/05/2030 15:37
मंगळ	29/05/2030 17:33
राहु	22/06/2030 01:56
गुरु	12/07/2030 20:03

बुध - शनि - बुध	
12/07/2030 20:03	
29/11/2030 02:42	
बुध	01/08/2030 13:36
केतु	09/08/2030 16:35
शुक्र	01/09/2030 21:42
सूर्य	08/09/2030 20:49
चंद्र	20/09/2030 11:23
मंगळ	28/09/2030 14:22
राहु	19/10/2030 11:46
गुरु	07/11/2030 01:27
शनि	29/11/2030 02:42

बुध - शनि - केतु	
29/11/2030 02:42	
25/01/2031 11:05	
केतु	02/12/2030 10:59
शुक्र	12/12/2030 00:23
सूर्य	14/12/2030 21:12
चंद्र	19/12/2030 15:54
मंगळ	23/12/2030 00:12
राहु	31/12/2030 14:39
गुरु	08/01/2031 06:10
शनि	17/01/2031 08:06
बुध	25/01/2031 11:05

बुध - शनि - शुक्र	
25/01/2031 11:05	
08/07/2031 07:37	
शुक्र	21/02/2031 18:30
सूर्य	01/03/2031 23:08
चंद्र	15/03/2031 14:51
मंगळ	25/03/2031 04:14
राहु	18/04/2031 18:07
गुरु	10/05/2031 14:27
शनि	05/06/2031 13:06
बुध	28/06/2031 18:13
केतु	08/07/2031 07:37

बुध - शनि - सूर्य	
08/07/2031 07:37	
26/08/2031 11:22	
सूर्य	10/07/2031 18:36
चंद्र	14/07/2031 20:55
मंगळ	17/07/2031 17:44
राहु	25/07/2031 02:42
गुरु	31/07/2031 16:00
शनि	08/08/2031 10:47
बुध	15/08/2031 09:55
केतु	18/08/2031 06:44
शुक्र	26/08/2031 11:22

बुध - शनि - चंद्र	
26/08/2031 11:22	
16/11/2031 09:38	
चंद्र	02/09/2031 07:13
मंगळ	07/09/2031 01:55
राहु	19/09/2031 08:52
गुरु	30/09/2031 07:02
शनि	13/10/2031 06:21
बुध	24/10/2031 20:54
केतु	29/10/2031 15:36
शुक्र	12/11/2031 07:19
सूर्य	16/11/2031 09:38

बुध - शनि - मंगळ	
16/11/2031 09:38	
12/01/2032 18:01	
मंगळ	19/11/2031 17:55
राहु	28/11/2031 08:23
गुरु	05/12/2031 23:54
शनि	15/12/2031 01:49
बुध	23/12/2031 04:49
केतु	26/12/2031 13:06
शुक्र	05/01/2032 02:30
सूर्य	07/01/2032 23:19
चंद्र	12/01/2032 18:01

योगिनी दशा

भोग्य दशा वेल : धान्या 0 वर्ष 8 महिना 6 दिवस

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
08/09/1976		16/05/1977		16/05/1981		16/05/1986		16/05/1992	
16/05/1977		16/05/1981		16/05/1986		16/05/1992		16/05/1999	
	00/00/0000	भ्राम	25/10/1977	भद्रि	24/01/1982	उल्क	16/05/1987	सिद्ध	25/09/1993
	00/00/0000	भद्रि	16/05/1978	उल्क	25/11/1982	सिद्ध	15/07/1988	संक	16/04/1995
	00/00/0000	उल्क	15/01/1979	सिद्ध	15/11/1983	संक	14/11/1989	मंग	26/06/1995
	00/00/0000	सिद्ध	26/10/1979	संक	25/12/1984	मंग	14/01/1990	पिंग	15/11/1995
	08/09/1976	संक	14/09/1980	मंग	14/02/1985	पिंग	16/05/1990	धान्य	15/06/1996
संक	14/02/1977	मंग	25/10/1980	पिंग	26/05/1985	धान्य	15/11/1990	भ्राम	26/03/1997
मंग	16/03/1977	पिंग	14/01/1981	धान्य	25/10/1985	भ्राम	16/07/1991	भद्रि	16/03/1998
पिंग	16/05/1977	धान्य	16/05/1981	भ्राम	16/05/1986	भद्रि	16/05/1992	उल्क	16/05/1999

संकटा 8 वर्ष		मंगळा 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
16/05/1999		16/05/2007		16/05/2008		16/05/2010		16/05/2013	
16/05/2007		16/05/2008		16/05/2010		16/05/2013		16/05/2017	
संक	24/02/2001	मंग	26/05/2007	पिंग	25/06/2008	धान्य	15/08/2010	भ्राम	25/10/2013
मंग	16/05/2001	पिंग	16/06/2007	धान्य	25/08/2008	भ्राम	15/12/2010	भद्रि	16/05/2014
पिंग	25/10/2001	धान्य	16/07/2007	भ्राम	14/11/2008	भद्रि	16/05/2011	उल्क	15/01/2015
धान्य	26/06/2002	भ्राम	26/08/2007	भद्रि	24/02/2009	उल्क	15/11/2011	सिद्ध	26/10/2015
भ्राम	16/05/2003	भद्रि	16/10/2007	उल्क	25/06/2009	सिद्ध	15/06/2012	संक	14/09/2016
भद्रि	25/06/2004	उल्क	15/12/2007	सिद्ध	14/11/2009	संक	14/02/2013	मंग	25/10/2016
उल्क	25/10/2005	सिद्ध	24/02/2008	संक	26/04/2010	मंग	16/03/2013	पिंग	14/01/2017
सिद्ध	16/05/2007	संक	16/05/2008	मंग	16/05/2010	पिंग	16/05/2013	धान्य	16/05/2017

नोट :– योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :–

मंगला : चन्द्र पिंगला : सूर्य धान्या : गुरु भ्रामरी : मंगल

भद्रिका : बुध उल्का : शनि सिद्धा : शुक्र संकटा : राहु/केतु

वरील दिनांक दशा समाप्ति चा समय दाखवते.

योगिनी दशा पूर्ण 36 वर्षाची बिना आयुनिर्णय दिलेली आहे.

योगिनी दशा

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगळा 1 वर्ष	
16/05/2017		16/05/2022		16/05/2028		16/05/2035		16/05/2043	
16/05/2022		16/05/2028		16/05/2035		16/05/2043		16/05/2044	
भद्रि	24/01/2018	उल्क	16/05/2023	सिद्ध	25/09/2029	संक	24/02/2037	मंग	26/05/2043
उल्क	25/11/2018	सिद्ध	15/07/2024	संक	16/04/2031	मंग	16/05/2037	पिंग	16/06/2043
सिद्ध	15/11/2019	संक	14/11/2025	मंग	26/06/2031	पिंग	25/10/2037	धान्य	16/07/2043
संक	25/12/2020	मंग	14/01/2026	पिंग	15/11/2031	धान्य	26/06/2038	भ्राम	26/08/2043
मंग	14/02/2021	पिंग	16/05/2026	धान्य	15/06/2032	भ्राम	16/05/2039	भद्रि	16/10/2043
पिंग	26/05/2021	धान्य	15/11/2026	भ्राम	26/03/2033	भद्रि	25/06/2040	उल्क	15/12/2043
धान्य	25/10/2021	भ्राम	16/07/2027	भद्रि	16/03/2034	उल्क	25/10/2041	सिद्ध	24/02/2044
भ्राम	16/05/2022	भद्रि	16/05/2028	उल्क	16/05/2035	सिद्ध	16/05/2043	संक	16/05/2044

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
16/05/2044		16/05/2046		16/05/2049		16/05/2053		16/05/2058	
16/05/2046		16/05/2049		16/05/2053		16/05/2058		16/05/2064	
पिंग	25/06/2044	धान्य	15/08/2046	भ्राम	25/10/2049	भद्रि	24/01/2054	उल्क	16/05/2059
धान्य	25/08/2044	भ्राम	15/12/2046	भद्रि	16/05/2050	उल्क	25/11/2054	सिद्ध	15/07/2060
भ्राम	14/11/2044	भद्रि	16/05/2047	उल्क	15/01/2051	सिद्ध	15/11/2055	संक	14/11/2061
भद्रि	24/02/2045	उल्क	15/11/2047	सिद्ध	26/10/2051	संक	25/12/2056	मंग	14/01/2062
उल्क	25/06/2045	सिद्ध	15/06/2048	संक	14/09/2052	मंग	14/02/2057	पिंग	16/05/2062
सिद्ध	14/11/2045	संक	14/02/2049	मंग	25/10/2052	पिंग	26/05/2057	धान्य	15/11/2062
संक	26/04/2046	मंग	16/03/2049	पिंग	14/01/2053	धान्य	25/10/2057	भ्राम	16/07/2063
मंग	16/05/2046	पिंग	16/05/2049	धान्य	16/05/2053	भ्राम	16/05/2058	भद्रि	16/05/2064

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगळा 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
16/05/2064		16/05/2071		16/05/2079		16/05/2080		16/05/2082	
16/05/2071		16/05/2079		16/05/2080		16/05/2082		00/00/0000	
सिद्ध	25/09/2065	संक	24/02/2073	मंग	26/05/2079	पिंग	25/06/2080	धान्य	15/08/2082
संक	16/04/2067	मंग	16/05/2073	पिंग	16/06/2079	धान्य	25/08/2080	भ्राम	15/12/2082
मंग	26/06/2067	पिंग	25/10/2073	धान्य	16/07/2079	भ्राम	14/11/2080	भद्रि	16/05/2083
पिंग	15/11/2067	धान्य	26/06/2074	भ्राम	26/08/2079	भद्रि	24/02/2081	उल्क	15/11/2083
धान्य	15/06/2068	भ्राम	16/05/2075	भद्रि	16/10/2079	उल्क	25/06/2081	सिद्ध	15/06/2084
भ्राम	26/03/2069	भद्रि	25/06/2076	उल्क	15/12/2079	सिद्ध	14/11/2081	संक	08/09/2084
भद्रि	16/03/2070	उल्क	25/10/2077	सिद्ध	24/02/2080	संक	26/04/2082		00/00/0000
उल्क	16/05/2071	सिद्ध	16/05/2079	संक	16/05/2080	मंग	16/05/2082		00/00/0000

शुभाशुभ ज्ञान

शुभाशुभ ज्ञान करण्याची आपणास आपल्या मित्र व शत्रुविषयी बोध करते. मूलांक, भाग्यांक व, मित्रांकद्वारे मैत्री व भागीदारी करण्यात फायदा होईल, त्याच प्रमाणे शुभ दिवस व शुभवर्ष प्रगतिकारक ठरेल, शुभग्रहांची, दशा सुद्धा लाभकारक धरते, मित्रलग्न व मित्रराशि लाभदायक अस्ते.

शुभरत्न व धातु तसेच रंग धारण केल्याने शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य लाभते, भाग्य रत्न धारण केल्याने भाग्यवृद्धि होते. शुभ वेली कोणत्याही कार्यांचा आरम्भ केल्याने अपेक्षित यश मिलते. इष्टदेव–देवतांचे ध्यान व जप केल्याने मानसिक शक्ति वाढते व यश लवकर मिलते. शुभ पदार्थ, अन्न, द्रव्य इत्यादि चे दान केल्याने ही शुभफल मिलते. व्यापार–उधोग शुभ दिशेला केल्यास त्यात भरभराट होउन अपेक्षत लाभ होतो. शुभ–अशुभ ज्ञानाचा प्रयोग दैनंदिन जीवनात शुभफलदायी ठरतो.

मूलांक	8
भाग्यांक	4
मित्र अंक	1, 2, 8, 4
शत्रु अंक	3, 7, 9
शुभ वर्ष	26,35,44,53,62
शुभ दिवस	बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र
मित्र राशि	वृषभ, तुला
मित्र लग्न	धनु, वृषभ, कर्क
अनुकूल देवता	कुबेर
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, ओपल
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सकाली के बाद
दान पदार्थ	हत्ती दाँत, काफुर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	तूप

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं. वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं. यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है. ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो. यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो. मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है. बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है. चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है. उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है. साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है. विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है. जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए. जिन्हें 50–75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए. जो रत्न केवल 25–50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए. अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	100%	स्वास्थ्य, व्यावसायिक उन्नति
हीरा	शुक्र	95%	स्वास्थ्य, भाग्योदय, धन
गोमेद	राहु	73%	धन, स्वास्थ्य
पुष्कराज	गुरु	66%	भाग्योदय, सुख, दम्पति
नीलम	शनि	62%	धनार्जन, सन्तति सुख, शत्रु व रोग मुक्ति
लहसुनिया	केतु	47%	दुर्घटना, रोग
मोती	चंद्र	38%	शत्रु व रोग, हानि
पोवले	मंगळ	6%	रोग, दुर्घटना, पराक्रम हानि
माणिक्य	सूर्य	0%	व्यय

रत्न की शुभता

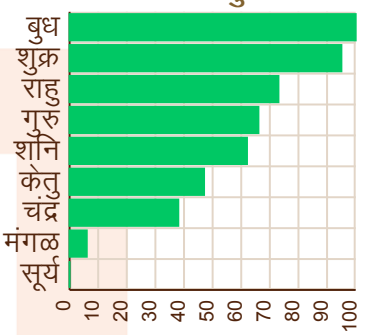

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	पोवले	पन्ना	पुष्कराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
राहु	17/10/1980	0%	12%	0%	100%	66%	100%	69%	86%	22%
गुरु	17/10/1996	0%	50%	19%	100%	78%	83%	62%	73%	47%
शनि	18/10/2015	0%	12%	0%	100%	66%	100%	75%	80%	22%
बुध	17/10/2032	0%	12%	6%	100%	66%	100%	62%	73%	47%
केतु	18/10/2039	0%	12%	19%	100%	66%	100%	50%	61%	61%
शुक्र	18/10/2059	0%	12%	6%	100%	66%	100%	69%	80%	55%
सूर्य	17/10/2065	9%	50%	19%	100%	72%	83%	50%	61%	22%
चंद्र	18/10/2075	0%	56%	6%	100%	66%	95%	62%	61%	22%
मंगळ	17/10/2082	0%	50%	31%	100%	72%	95%	62%	61%	55%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह–नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए पन्ना व हीरा रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

पन्ना आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

हीरा आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए गोमेद, पुखराज एवं नीलम रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

लहसुनिया व मोती रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

मूंगा व माणिक्य रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध लग्न भाव में स्थित है। इसलिए आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। बुध रत्न पन्ना आपकी बौद्धिक योग्यता, ज्ञान क्षमता एवं शिक्षा के प्रति आपकी अभिरुचि को जागृत करेगा। तथा पन्ना रत्न लेखन एवं कला का विकास करेगा। यह रत्न भाई-बहनों का स्नेह देगा एवं आप शत्रुओं को चातुर्य से परास्त कर सकेंगे। यह रत्न व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति एवं लाभ प्राप्ति के सुअवसर देकर व्यापार में आपको अच्छी सफलता देगा। पन्ना रत्न मित्रों से संबंध मजबूत करेगा। संचार क्षेत्रों से आय मार्ग शुभफलकारी होंगे।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में बुध लग्नेश एवं दशमेश है। लग्नेश बुध की शुभता प्राप्ति के लिए आप पन्ना रत्न धारण कर सकते है। पन्ना रत्न आपको बौद्धिक क्षेत्रों से संबंधित कार्यक्षेत्र दे सकता है। रत्न शुभता से आपको आजीविका क्षेत्र में सुख-सम्मान की प्राप्ति हो सकती है। लग्नेश बुध रत्न आपकी विवेक योग्यता को बढ़ाएगा। पन्ने की शुभता से आप में व्यापारिक बुद्धि, लेखन योग्यता का विकास कर सकता है। पन्ना रत्न लग्नेश का रत्न होने के कारण अपनी शुभता से आपको स्वास्थ्य सुख भी प्रदान करेगा। जीवन को आरोग्य रखने में भी पन्ना रत्न आपके लिए शुभ फलदायी रत्न है। पन्ना रत्न आपको गणितीय कौशल भी देगा।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का ९ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र लग्न भाव में स्थित है। आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। यह रत्न प्रेम, आकर्षण एवं विपरीत लिंग विषयों में सफलता देगा। हीरा रत्न से धन संचय करना आपके लिए सहज होगा। शुक्र लग्न भाव से सप्तम भाव को प्रभावित कर रहे है। इसलिए शुक्र रत्न हीरा धारण कर आप वैवाहिक जीवन को अनुकूल बनाये रख सकते है। यह हीरा रत्न पारिवारिक सुख-समृद्धि, स्वतंत्र व्यापार में लाभदायक सिद्ध होगा। नियमानुसार धारण किया गया हीरा आपको सुख, ऐश्वर्य, सम्मान, वैभव, विलासिता आदि दे सकता है।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में शुक्र द्वितीय और नवम भाव के स्वामी है। लग्नेश बुध के मित्र व त्रिकोण भाव के स्वामी होने के कारण आपके लिए विशेष शुभ हो गए है। शुक्र की शुभता में बढ़ोतरी करने के लिए आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते है। हीरा रत्न आपके लिए धन-धान्य, कुटुंब सुख, संचित धन एवं यश प्रदायक सिद्ध हो सकता है। भाग्य, धर्म व दूर स्थानों की यात्रा के लिए भी आप शुक्र रत्न हीरा अवश्य धारण करें। यह रत्न आपका भाग्योदय करेगा। हीरा रत्न धारण से आपकी उन्नति सहज हो सकती है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

गोमेद

आपकी कुंड़ली में राहु दूसरे भाव में स्थित है। राहु रत्न गोमेद धारण करना आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा। यह रत्न धारण कर आप धन संचय के प्रति सचेत रहेंगे। धन के प्रति आपका मोह बढ़ेगा। सत्य बोलने की ओर आप अग्रसर होंगे। गोमेद रत्न की शुभता चातुर्य एवं नीति निर्माण से धन संचय करने में आपको सफलता देगी। गोमेद आपके स्वभाव को सौम्य बनाए रखेगा। गोमेद रत्न धारण कर आप पारिवारिक संस्कारों का नियम से पालन करेंगे। यह रत्न आपको विचार अभिव्यक्ति का कौशल देगा।

राहु तुला राशि में स्थित है व इसका स्वामी शुक्र प्रथम भाव में स्थित है। अतः गोमेद धारण करने से आप शत्रुओं के बल को नष्ट कर उन पर विजय प्राप्त करेंगे। यह रत्न आपको अत्यन्त साहसी और विपुल पराक्रमी बनाएगा तथा रत्न शुभता आपको अपने कुल में मुख्य प्रतापी बनाएगी। आप भूमि का संचय करेंगे। स्वास्थ्य सुख को यह रत्न बेहतर करेगा। जीवन में सफलता प्राप्ति के लिए आपके द्वारा गलत तरीकों का प्रयोग हो सकता है। यह रत्न आपको दृढ़-निश्चयी एवं अधिक बोलने वाला बनाएगा। रत्न शुभता आपकी चातुर्य शक्ति को बढ़ा रही है। इसे धारण करने पर आपका दांपत्य जीवन सुखद होगा।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं

जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु नवम भाव में स्थित है। गुरु रत्न पुखराज धारण करना आपके लिए शुभफल प्रदान करेगा। पुखराज रत्न की शुभता से आप नीतिमान, विचारशील और माननीय व्यक्ति बनेंगे। देवताओं, ब्राह्मणों और गुरुजनों में आपकी श्रद्धा का विस्तार होगा। रत्न शुभता आपको दान-पुण्य कार्यों में सहभागिता देगी। पुखराज रत्न प्रभाव से आप शांत, सदाचारी, और उच्च विचार वाले व्यक्ति बनेंगे। रत्न शक्तियां आपको तीर्थ यात्रा और धार्मिक कार्यों से जोड़े रखेगी। आपको विदेश गमन से लाभ प्राप्त हो सकता है।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में गुरु चतुर्थेश और सप्तमेश है। गुरु चतुर्थेश का पुखराज रत्न धारण करने से आपको सुख-सौभाग्य की प्राप्ति हो सकती है। पुखराज रत्न आपको धार्मिक और संस्कारी जीवन साथी दे सकता है। यह रत्न चतुर्थ भाव के स्वामी का रत्न होने के कारण आपको संपत्ति व माता सुख, विद्या, बुद्धि व संतान पक्ष को सुखी रखने में लाभकारी सिद्ध हो सकता है। गुरु रत्न पुखराज आपको धनी, भाग्य व धर्म के क्षेत्र में सम्मान दिला सकता है। आप पुखराज रत्न धारण कर गुरु ग्रह की शुभता प्राप्त कर सकते है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ऊँ बृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरुरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थों का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार है- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर 8 रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि एकादश भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न धारण कर आप निर्लोभी और सुखी व्यक्ति बनेंगे। आपको दीर्घकाल के लिए रोग अपने प्रभाव में नहीं पायेंगे। आपके पास पर्याप्त मात्रा में धन-संपति होगी। सरकार की कृपा से भी धन, मान की प्राप्ति होगी। यह रत्न आपके लिए शुभ होकर आपको

वाहनों का सुख देगा। धन संचय में सहयोग करेगा। नौकर चाकरों का सुख देगा। तथा नीलम रत्न प्रभाव से संतान प्राप्ति का विलम्ब दूर होगा। अनेक प्रकार के सुखों को आप प्राप्त करेंगे।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में शनि पंचमेश और षष्ठेश है। शनि त्रिकोण भाव के स्वामी है और लग्नेश बुध के मित्र भी है। अतः नीलम रत्न आपके लिए अनुकूल और शुभ रत्न सिद्ध हो सकता है। नीलम रत्न धारण करने से आपकी संतान का स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा। यह रत्न संतान सुख भी प्रदान कर सकता है। नीलम रत्न धारण से आपको विद्या ग्रहण या शैक्षिक क्षेत्र में शुभता प्राप्त हो सकती है। भूमि व संपति से लाभ पाने के लिए भी आप नीलम रत्न धारण कर सकते है। यह रत्न शत्रुओं पर विजय पाने में सहयोगी रत्न सिद्ध हो सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु रत्न लहसुनिया धारण करने आप कुछ विषयों में आप लोभी और चालाक हो सकते है। आपके द्वारा दूसरों को शारीरिक और मानसिक कष्ट हो सकते है। अनजाने में आपसे पाप हो सकते है। आपके द्वारा किये गये कार्यो से विवेकहीनता परिलक्षित हो सकती है। रत्न प्रतिकूलता से आपको मुखरोग या दंत रोग हो सकता है। केतु रत्न आपको अकस्मात हानि करा सकता है। यह रत्न आपका ऑपरेशन करा सकता है। आपको विरासत मिलने में तकलीफ हो सकती है। सरकार के द्वारा आपकी धन हानि हो सकती है।

केतु मेष राशि में स्थित है व इसका स्वामी मंगल प्रथम भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपमें लापरवाही की प्रवृत्ति विकसित हो सकती है। आप अपने उत्तरदायित्वों से विमुख होंगे। यह रत्न आपके स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत रत्न सिद्ध होगा। तथा रत्न आपमें अत्यधिक क्रोध भाव और चतुरता भाव लाएगा। साथ ही इस रत्न पहनने पर आपके व्यवहार में विश्वास भाव की कमी होगी। व आपके साहस में कमी होगी। आपमें क्रोध और अहंकार भाव बढ़ेगा। एवं यह रत्न आपके दांपत्य जीवन को तनावपूर्ण करेगा। रत्न की प्रतिकूलता आपको अस्थिर विचारधारा देगी। जीवन में सफलता और सुख प्राप्ति में यह रत्न बाधक बन सकता है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र षष्ठ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्रमा का मोती रत्न धारण करने पर किसी विशेष मामले में आपको अपमानित होना पड सकता है। आपके अपने मामा-मौसी से संबंध प्रतिकूल हो सकते है। अपने शत्रुओं की पहचान करना आपके लिए सरल नहीं होगा। यह रत्न आपको कफ रोगी, नेत्र रोगी, अल्पायु, आसक्त, व्ययी बना सकता है। इसके प्रभाव से आप अस्वस्थ्यता का अनुभव करेंगें। बढ़ते कर्ज आपको मानसिक चिंताएं दे सकते है। कर्ज का भुगदान ज्यादा आपके लिए कष्टकारी हो सकता है। कार्यो को शीघ्रता से करने की प्रवृर्ति कार्यो में गुणवत्ता का अभाव ला सकती है। मोती रत्न आपमें असंतोष का भाव ला सकता है। आपको आंखों और पेट से संबंधित परेशानियां हो सकती हैं।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में चंद्र एकादशेश भाव के स्वामी है। चंद्र का रत्न मोती धारण करने पर आपको धनार्जन एवं धन संचय करने में कष्ट की स्थिति आ सकती है। मोती रत्न आपकी सामाजिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में उन्नति को बाधित कर सकता है। यह रत्न आपकी व्यापारी कुशलता में भी कमी कर सकता है। रत्न प्रभाव आपके वैवाहिक जीवन को दुःखद कर सकता है। मोती रत्न धारण से आय में अस्थिरता की स्थिति बन सकती है। शिक्षा और समाज से आपकी द्वेष भाव की स्थिति बन सकती है। मोती रत्न आपको प्रवास और गुप्त चिंताएं दे सकता है। जीवन लक्ष्य प्राप्ति के लिए आपमें संकल्प शक्ति की कमी हो सकती है।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल प्रथम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मंगल रत्न मूंगा धारण से आप दुस्साहसी हो सकते है। जिसके कारण दुर्घटनाओं और चोटों की स्थिति बन सकती हैं। अत्यधिक दबाव में कार्य करने में आप असमर्थ हो सकते है। मूंगा रत्न आपको सिर दर्द दे सकता है। रत्न प्रभाव से वाणी पर नियंत्रण कम और आपका अत्यधिक क्रोध का स्वभाव हो सकता है। इसके अलावा यह रत्न धारण करने पर आपको अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में विशेष प्रयास करने पड़ सकते हैं। स्वास्थ्य की कमी के चलते बुखार आपको अपने प्रभाव में ले सकता है। इसके अतिरिक्त लग्न भाव में मंगल चतुर्थ, सप्तम एवं अष्टम भाव को देख रहा है। अतः इस रत्न को यदि आप धारण करते है तो सुख, ग्रहस्थ जीवन एवं बाधाओं का सामना भी आपको करना पड़ सकता है।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में मंगल तृतीयेश एवं अष्टमेश है। मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर पराक्रम भाव आपके काम नहीं आ पाएगा। साहस और जोखिम से काम लेना आपके लिए लाभदायक नहीं रहेगा। मूंगा रत्न आपको शत्रुओं से पराजित करा सकता है। रत्न प्रभाव से आपमें स्वार्थ भावना प्रवेश कर सकती है। मूंगा रत्न आपको पैतृक सम्पति से वंचित कर सकता है। रत्न प्रभाव से आपको घर का सुख प्राप्त नहीं हो पाएगा। इस रत्न को धारण करने पर आपको कठिनता से धन प्राप्त होगा। स्पष्ट वक्ता होने के कारण आपको मित्रों में उचित सम्मान नहीं मिल पाएगा। यह रत्न आपको तार्किक बुद्धि देगा। रत्न प्रभाव से आप आलोचनात्मक लेखन की ओर आप अग्रसित हो सकते है। यह रत्न आपको नौकरी में शीघ्र

बदलाव दे सकता है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपको धर्मार्थ कार्यों में सुरुचि की कमी हो सकती है। आप दिखावों के लिए अत्यधिक व्यय कर सकते है। यह व्यय परोपकार से हटकर अन्य कार्यों पर हो सकते है। माणिक्य रत्न प्रभाव से व्यय व्यर्थ के कार्यों पर भी अधिक हो सकते है। आंखों के रोग आपको नज़र दोष दे सकते है। आपको चश्में का प्रयोग करना पड़ सकता है। माणिक्य रत्न धारण करने पर गेहूं, सोना एवं चांदी इत्यादि क्षेत्रों का चयन आजीविका क्षेत्र के रूप में करने से आपको बचना होगा। इसके अलावा बिजली का काम, कच्चा कोयला या हाथी दांत से जुड़े क्षेत्रों में कार्य करना भी आपके लिए आंशिक रूप से अनुकूल नहीं रहेगा।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में सूर्य द्वादश भाव के स्वामी है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपको स्वास्थ्य सुख की कमी हो सकती है। यह रत्न आपके धन संचय में कमी करेगा। माणिक्य रत्न धारण से आपके व्ययों में वृद्धि होगी। यह रत्न आपको बन्धु विरोधी बना सकता है। रत्न प्रभाव से आप व्यापार क्षेत्र में विफल हो सकते है। माणिक्य रत्न धारण से आपमें धर्म कार्यों में श्रद्धा से अधिक पाखंड भाव हो सकता है। यह रत्न विदेश में भाग्योदय में विलम्ब देगा। इस रत्न से आपकी दृष्टि मंद हो सकती है। यह रत्न आपके पिता का स्वास्थ्य पीड़ित कर पिता सुख में कमी करेगा। आप पिता के विरोधी हो सकते है। माणिक्य रत्न आपको विदेशगमन में धन का व्यय करा सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

बुध
(18/10/2015 - 17/10/2032)

बुध की दशा में आपका पन्ना व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, पुखराज व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और मोती, मूंगा व माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(17/10/2032 - 18/10/2039)

केतु की दशा में आपका पन्ना व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, गोमेद, लहसुनिया व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा, मोती व माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(18/10/2039 - 18/10/2059)

शुक्र की दशा में आपका पन्ना, हीरा व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, पुखराज व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती, मूंगा व माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(18/10/2059 - 17/10/2065)

सूर्य की दशा में आपका पन्ना व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, गोमेद, मोती व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया, मूंगा व माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(17/10/2065 - 18/10/2075)

चन्द्र की दशा में आपका पन्ना व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, नीलम, गोमेद व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया, मूंगा व माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(18/10/2075 - 17/10/2082)

मंगल की दशा में आपका पन्ना व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, नीलम, गोमेद, लहसुनिया व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - गोमेद

आपका जन्म कन्या राशि के लग्न में हुआ है। जिसका स्वामी ग्रह बुध होता है। गोमेद रत्न राहु ग्रह के लिये धारण किया जाता है जो शनि के समान होता है और शनि कन्या राशि के लग्न के जातकों के लिये कारक रत्न होता है। क्योंकि शनि की मकर राशि कन्या लग्न से पंचम भाव में स्थित होती है। किसी भी जातक के लिये पंचमेश का प्रबल होना बहुत अधिक महत्वपूर्ण होता है क्योंकि विद्या प्राप्ति के लिए किये गये प्रयास या कार्य के लिये पंचमेश का रत्न धारण करना श्रेष्ठ होता है साथ ही यह प्रेम संबंधों का भाव भी होता है। बुद्धि, बल का आकलन पंचम भाव से देखते हैं। संतान सुख से वंचित जातकों के लिए या संतान होने में देरी होने वाले जातकों के लिये पंचमेश का रत्न संतान सुख में वृद्धि करता है।

अतः कन्या राशि के लग्न वाले जातकों को गोमेद रत्न धारण करके राहु या शनि को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को संतान, बुद्धि, प्रेम संबंध व विद्या से संबंधित सभी लाभ मिलेंगे और जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी राहु या शनि न्याय व आध्यात्म का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को आत्मिक बल की प्राप्ति तथा अपने अधीनस्थ कर्मचारी व सेवकों का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को सेवकों की शुभ कामनाऐं भी प्राप्त होती हैं। राहु ग्रह मन की असमंजस स्थिति से दूर करता है। यह दादा-दादी का प्रतिनिधि ग्रह है। उनका आशीर्वाद प्राप्त होता है। जिसको त्वचा संबंधी रोग या कोढ़ जैसी बीमारी भी हो गयी हो तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा संशय की स्थिति में संशय से मुक्ति दिलाता है।

गोमेद को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि मध्यमा अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में शनि की अंगुली मानी जाती है तथा राहु ग्रह शनि के समान माना जाता है। गोमेद राहु का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात शनिवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय सांयकाल शनि की होरा में श्रेष्ठ होता है। गोमेद को यदि शनिवार के साथ-साथ राहु के नक्षत्र अर्थात् आर्द्रा, स्वाती और शतभिषा में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

गोमेद को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर काले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, राहु के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए।

राहु का मंत्र - ऊँ रां राहुवे नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि राहु से संबंधित पदार्थ जैसे काले तिल, सरसों का तेल, सवा मीटर नीले कपड़े का दान करें तो गोमेद की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन राहु का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें और सरस्वती जी की आराधना करें तो यह गोमेद की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रतिदिन प्रातःकाल कबूतरों को दाना, चीरियों को आटा व मछलियों को आटे की गोली खिलायें तो और अधिक शुभकारी होगा।

कन्या लग्न वाले जातक यदि गोमेद की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन भाग्यशाली व्यक्ति के रूप में सुखी, समृद्धिशाली एवं संतान सुख से परिपूर्ण जीवन प्राप्त करते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली कन्या लग्न की है। कन्या लग्न पर बुध का प्रभाव होने से आप अत्यंत बुद्धिमान होते हैं। आपका व्यक्तित्व ऐसा होता है कि कोई भी सहजता से आपकी ओर आकर्षित हो जाता है। आपका मस्तिष्क अत्यंत रचनात्मक होता है। पृथ्वी तत्त्व होने से जिस प्रकार पृथ्वी सभी को धारण करती है उसी प्रकार आपके अन्दर भी सहनशीलता कूट-कूट कर भरी होती है। वायु प्रकृति होने से आप स्वयं को हर परिस्थिति में ढाल लेते हैं। सभी को माफ करने का स्वभाव, विपरीत परिस्थितियों में धैर्य रखना एवं समस्याओं का समाधान निकालना की क्षमता आपको विशिष्ठ व्यक्तित्व बनाता है। लग्नेश बुध के कारण भाषा पर अच्छी पकड़ एवं वाणी की कुशलता तथा किसी भी बात का तर्कपूर्ण तथ्य आप चाहते हैं।

कुंडली का 6, 8 व 12 वां भाव त्रिक भाव होने के कारण विशेष अशुभता लिए होते हैं। आपकी कुंडली में पंचमेश व षष्टेश शनि है, अष्टमेश व तृतीयेश मंगल तथा द्वादशेश सूर्य हैं। इन भावों की अशुभता आपके जीवन में रोग, ऋण, शत्रु, आयु, बाधाएं, शोक, स्वास्थ्य हानि, अस्पताल, कोर्ट-कचहरी, जेल, व्यय और हानियों का विश्लेषण किया जाता है। त्रिक भाव के स्वामी जिस भाव में जाते हैं, उसके शुभ फलों का कुछ न कुछ नाश अवश्य करते है। जिसके फलस्वरूप आपको मानसिक, सामाजिक, आर्थिक या पारिवारिक कष्टों का सामना करना पड़ता हैं। 6, 8 व 12 भावों में से 8 वां भाव सबसे अधिक दुष्ट/अशुभ होता हैं।

आपकी कुंडली में पंचमेश व षष्टेश शनि है, पंचमेश- षष्ठेश शनि आपको विद्या, बुद्धि, विवेक, वाणी, संतान, भय, ऋण, रोग, पाप कर्म, संघर्ष, कष्ट, परिश्रम, धैर्य, मामा व ननिहाल पक्ष के लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता हैं।

अष्टमेश व तृतीयेश मंगल आपके पराक्रम, पुरुषार्थ में कमी करता हैं, साथ ही बाहुबल, भाई-बहन के सुखों में कमी, अस्पताल, पुलिस-कोर्ट कचहरी के मामले परेशानियों का कारण बन सकते हैं।

द्वादशेश सूर्य, द्वादश भाव का स्वामी सूर्य नेत्र रोग, व्यय, हानि, सरकारी दंड, कारागार, सम्बन्ध विच्छेद का कारक बन सकता हैं।

आपकी कुंडली में चन्द्र षष्ठ भाव में स्थित हैं। इसके परिणाम से शत्रुओं से कष्टों का सामना करना पड़ सकता हैं। आप रोग पीड़ित, चिंताग्रस्त, व्याधिक्य करने की प्रवृति से ग्रस्त हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त चन्द्र की अशुभता से आपके ऋण लेन-देन में बाधाएं आ सकती हैं।

अष्टम भाव में केतु अशुभ फलदायक होते है। आपको अपनी बुद्धि को गलत कार्यो में लगाने से बचना चाहिए। आपका उद्यम बाधित हो सकता है। साथ ही यह योग आपको परिश्रम का उचित प्रतिफल नहीं देता। जीवन साथी से शत्रुता भाव उत्पन्न हो सकता है। स्वजनों से संबंधों को मधुर बनाए रखने के लिए आपको विशेष प्रयास करने पड़ सकते है।

सूर्य आपके द्वादश भाव में शत्रुओं की बहुलता, परन्तु शत्रुओं पर विजय, धन-धान्य से युक्त, कुशल राजनीतिज्ञ, उतम प्रशासक, नेत्र प्रकाश में कमी, मामा को कष्ट, और वाहनों से शारीरिक कष्ट की संभावना उत्पन्न करता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 2, 3, 7, 9 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विषयी माहिती

गोचर शनि जेव्हां कुंडलीतीत चंद्राला बारावा, पहिला व दूसरा येईल, तेव्हा साडेसाती सुरु होते. कुंडलीतीत चन्द्राला गोचर शनि चौथा व आठवा आला असता, ढैय्या म्हणजे अडीचकी सुरु होते. साडेसाती चा प्रभाव साडेसात वर्ष व ढैय्या चा प्रभाव अडीच वर्षें मानला गेला आहे साडेसाती चा प्रभाव सामान्यापणे शारिरीक, मानसिक व आर्थिक त्रासाचा जातो तर काहीवेलप आश्चर्यचकित प्रगतिही या कालात होते.

सामान्यापणे मनुष्याच्या जीवनात साडेसाती तीन वेला एते– पहिल्यांदा बालपणि, दूस्रयांदा तरुणपणि व तीस्रयांदा म्हातारपणि. पहिलया साडेसाती चा प्रभाव शिक्षण व आई–वडिलावर पडतो. दुस्रया साडेसाती चा प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति व कुटुंबावर पड़तो. तिसरया साडेसाती चा प्रभाव शारिरीक आरोग्यावर पडतो.

खाली दिलेल्या कोष्टकवरुन साडेसाती चा काल व प्रत्येक अडीचकी (ढय्या) चे शुभाशुभ फलासंबंधीची माहिती समजू शकेल.

प्रथम चक्रः

अष्टमस्थान चरण	04/11/1979-15/03/1980	27/07/1980-06/10/1982	----------
साढ़ेसातीचा पहला चरण	21/03/1990-20/06/1990	15/12/1990-05/03/1993	15/10/1993-10/11/1993
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	05/03/1993-15/10/1993	10/11/1993-02/06/1995	10/08/1995-16/02/1996
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	----------
चतुर्थस्थान चरण	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	----------

द्वितीय चक्रः

अष्टमस्थान चरण	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	----------
साढ़ेसातीचा पहला चरण	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	----------
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
चतुर्थस्थान चरण	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	----------

तृतीय चक्रः

अष्टमस्थान चरण	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
साढ़ेसातीचा पहला चरण	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	----------
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
चतुर्थस्थान चरण	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	----------

शनि चा ढैया फल

ढैया चा प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टमस्थान चरण	सम	स्वास्थ्य
साढ़ेसातीचा पहला चरण	शुभ	सन्तति सुख
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	शुभ	शत्रु व रोग मुक्ति
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	शुभ	दम्पति
चतुर्थस्थान चरण	शुभ	भाग्योदय

साढेसाती वर उपाय

शनि च्या साडेसाती दरम्यान होणार्या अशुभ प्रभावांची तीव्रता कमी होना साठी दान, पूजन व्रत, मंत्रोच्चार आदि उपाय आहेत. शनिवारी काली काम्बल, काली उड़द, काले–तिल, कालयारंगाची चर्मची चप्पल, काले कापड़, लोखंडाचे दान करावे. शनिदेवाची पूजा, दर्शन व शनिवार चा उपवास करावा उपावास च्या दिवशी फले उड़द चा खाध वस्तु, हरभरे, बेसन, काले तिल, काले मीठ या वस्तुंचेच सेवन करावे पाईजे. स्वतः किवां योग्य गुरुजीकड्न खालील शनिमंत्रचा 19000 जप करुन ध्यावा.

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि चा साडेसातीत शारीरिक, मानसिक व कौटुंबिक शान्ति आणि समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता व अंगीकृत कार्यात प्रगति होण्या साठी खालील महामृत्युंजय मंत्रचा 125000 जप स्वतः करावा किंवा योग्य पूरोहिताकड्न करवून ध्यावा.

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

किवां खालील मंत्रचा कमीत कमी 108 वेला जप करावौं.

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

साढ़ेसाती च अशुभत्व कमी करुन् शुभत्व वाढवण्या साठी 5–1/4 रत्ती वजना च नीलम रत्न पंचधातु उजव्या हाताचा मध्ल्या बोटात धारण करावे. घोडायाच्या नालेची किंवा बोटीच्या कीलची अंगठी मधल्या बोटात वापरवी.

अंगठी किंवा पेन्डन्ट शुक्ल पक्षा चा शनिवारी सायंकाली सूयदृस्ता चा अर्धातास पूवदृ धारण करावी. पुष्य, अनुराधा किंवा उतरा भाद्रपदा या नक्षत्र पैकी जे नक्षत्र शनिवारी असेल त्या दिवशी अंगठी धारण करावी. अंगठी धारण करण्या पूवदृ शुद्ध निरसे दूध व गंगाजलानें अंगठीस अभिषेक करावा. धूप–दीप लावून पूजा करावी व खालील मंत्र 108 वेला जपून अंगुठी धारण करावी.

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगठी धारण केल्या नंतर शनि च्या वस्तूंचे दान करावे या मुले शनिचा अशुभ परिणामांची तीव्रता कमी होईल व आपल्या सुख–शान्ति–समृद्धि ची वाढ़ होईल.

मांगलिक विचार

जेह्वा वर किंवा कन्या ची कुंडलीत मंगल–लग्नात् चतुर्थ अष्टम् द्वादश भावात असेल तर असा मांगलिक दोष होतात.।। यथोक्तम्।। लग्ने ब्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे. स्त्री भर्तुविनाशाय भर्तुः पत्नी विनाशयेत. मांगळिक दोष लग्न पासून जास्ती प्रबल होतात, पण चंद्रमा पासून यांचा दोष कम आहे. जर शस्त्रनुसार वर अणि कन्या चा मांगळिक दोष भंग होतात तर यांचे दम्पती जीवन सुखी अणि प्रसन्नता युद्ध होतात. यांचे विपरीत बगैर दोष भंग झाले, मांगळिक वर कन्या ला जीवनां चे अनेक अनावश्यक त्रास तसेच अडचणांचे सामना होणार. अतः विवाहा पूर्वी शुद्ध कुंडली मिलान करून हा दोष उचित निवारण करून दांपत्य जीवन शुरू कराय ला पहिजे. ज्यापासून जीवनात शान्ती तसेच संपन्नता होणारी.

****

तुमची जन्म कुण्डलीत मंगळ लग्न मधे स्थित आहे, अतः आपण मांगळिक कन्या आहेत मंगळ प्रभाव पासून तुमचा स्वास्थ्य सामान्य बरा होणार पण कधी–मधी पित किंवा उष्णता पासून काही त्रास होउ सकतो. पण यांचा दुष्प्रभाव नाय होणार. स्वाभिमान तेज अणि परिश्रम पासून आपण सांसारिक विशेष कार्य सम्पन्न करणारी मंगळ चा प्रभाव पासून तुमचा विवाह काही उशीर होणार तसेच संबन्धातील कोणी वार्ता असफल होउ सकतो. पण विवाह निश्चित होणार, तसेच विवाह नंतर नवरे चा स्वास्थ्य पण सामान्य अनुकूल रहणार तसेच सुखी जीवन वर यांचा कोणी पण प्रभाव नाय होणार. तुमची कुंडली मधे प्रथम भावात मंगळ आहे यांची दृष्टि पासून सुखाचे साधन कराय साठी काही परिश्रम होणार सप्तम भाव चे पूर्ण दृष्टि चा प्रभाव होण्या मुळे जीवन साथी चा स्वभाव मध्यम होणार आणि परस्पर चांगला संबन्ध रहणार मंगळ ची दृष्टि अष्टम भाव वर होण्या मुळे सांसारिक कार्या मधे त्रास अडचणे विशेष नाय होणारी. अतः मंगळ चा दुष्प्रभाव कम कराय साठी तसेच शुभ प्रभाव साठी मांगळिक पुरूष बरोबर विवाह कराय ला पाहिजे असा मंगळ दोष परस्पर भंग होउ सकणार किंवा पुरूष ची कुंडली मधे मांगळिक भाव प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम आणि द्वादश भाव मधे शनि राहु किंवा पाप ग्रह होणार पाहिजे असा मांगळिक दोष भंग होतात. असा करून नंतर विवाह करणारी तर शारीरिक स्वास्थ्य चांगला रहणार तसेच जीवना मधे समस्त सामाग्री अर्जित करणारी आणि धन यैश्वर्य युद्ध होउन सुखी जीवन व्यतीत करणारी.

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में कुलिक नामक कालसर्प योग विद्यमान है। परन्तु यह केवल आंशिक रूप में ही विद्यमान है। परिणामस्वरूप जातक के जीवन में समय-समय पर आर्थिक स्थिति नाजुक रहती है जिस कारण थोड़ा बहुत कष्ट जातक को सहन करना पड़ता है और अपयश का भय बना रहता है।

इस योग के कारण जातक का विद्याध्ययन सामान्य रहता है और वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी दुःखमय हो जाता है। परिवारिक सदस्यों से समय-समय पर थोड़ा बहुत मनमुटाव हो जाता है। मित्रगण समय पर धोखा एवं कष्ट पहुँचाते हैं। जीवन में आगे बढ़ने के लिए विशेष रूप से संघर्ष नहीं करना पड़ता है। सन्तान सुख में किंचित बाधा आती है। पुत्र आज्ञा का पालन करने में असमर्थ होता है। वह थोड़ा बहुत क्रूर एवं दुष्ट स्वभाव का होता है तथा मनमानी करता रहता है, जिससे जातक प्रभावित हो जाता है। सामाजिक मान-सम्मान व प्रतिष्ठा में आंशिक नुकसान होता है और जातक भूत प्रेतों से कभी कभी परेशान हो जाता है।

इस योग के कारण जातक को कभी-कभी रोग व्याधि भी घेर लेती है जिससे स्वास्थ्य असामान्य हो जाता है और मानसिक रूप से चिन्तित होना पड़ता है। जातक अपनी वृद्धावस्था को लेकर चिन्तित रहता है और वह समय आने पर कष्ट को भोगता है। जातक परोपकार की भावना से ओतप्रोत रहता है, परन्तु लोग इसका नाजायज फायदा उठाते हैं, जिससे इन्हें थोड़ा बहुत क्षति ही मिलती है। जीवन यापन मध्यम रहता है और जातक पराक्रमहीन हो जाता है। सुखभोग का आंशिक अभाव रहता है। लेकिन इतना सब कुछ होते हुए भी जातक व्यापार में मनोभिलषित (इच्छित) सफलता प्राप्त करता है और जातक के जीवन में मान-सम्मान भी मिलता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ऊँ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।

9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ऊँ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव का स्वामी नीचस्थ है और उस पर शनि का प्रभाव है।
- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुडली में शुक्र के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंकविज्ञान फलित

तुमचा जन्म दिनांक आठ होण्या मुळे मूलांक आठ आहे, शनि प्रभाव पासून अंक आठ हळू–हळू उन्नति देणार. अडचणे आणि त्रास युक्त सफळता प्राप्त होणारी, पण या पासून आपण घाबरणार नाय आणि कधीं–मधीं निराशा होणारी. आलस तुमचा मोठा शत्रु रहणार म्हणून सफळता साठी त्रास होणारी, जीवन मधे शनि ग्रह प्रभाव पासून फार महत्व पूर्ण कार्य करणारी ज्यामुळे नाव, यश कीर्ति प्राप्त होणारी,. तुमची कार्य शैली वेगळी होणारी आणि लवकर कोणी नाय समझणार ह्या पासून शत्रु उत्पन्न होणारे. तुमचा मधे दिखऊपणा जास्ती नाय होणारी म्हणून काही माणूष कठोर समझणारे, पण आपण भावुक दयवान आणि कोमल होणारी. जास्ती समय स्वतः चे कार्य मधे खर्च करणारी असी नेहमी संवय होणारी पण तुमचे असे ब्यवहार पासून आलोचक पण होणारे. आणि टीका करणारे. तुमचा मधे त्याग भावना जास्ती होणारी आणि फार परिश्रम करायची संवय, कोण पण कार्य साठी त्याग बलिदान श्रम पासून सफळ करायची भावना आणि क्षमता होणारी. या मुळे फार त्रास पासून पुढ़े जाणारी आणि स्वतः ची मंजिळ प्राप्त करणारी शनि प्रभाव पासून आपण संघर्ष वान होणारी उन्नती हळू–हळू होणारी पण स्थाई होणारी.

भाग्यांक 4 चा स्वामी भारतीय मतानुसार राहू आणि पाश्चात्य मतानुसार हर्षल आहे हर्षळ ग्रह प्रभाव पासून तुमचा भाग्योदय एका एकी होणार जीवनात काही कार्य असफळ होणारी आणि परिश्रम पण असफळ होणार. पण एक दिवसी असा कार्य आपळे कार्य क्षेत्रात परिवर्तन करणार आणि जुने फायदे ला परिवर्तन तुमची नेहमी संवय होणारीज्ञान–विज्ञान क्षेत्रातीळ रुचि रहणारी आणि असे कार्य सम्पन्न करणारे ज्यामधे अन्य सर्व त्रास आणि दुष्कर समझतात, आपळे कार्य मधे लवकर प्रसिद्ध होणारी पण परिवर्तन पासून उन्नति मधे अडचण होणार. एकाएकी सफळता–असफळता पासून अनुभव होणार किं भाग्य परिवर्तनशीळ आहे अतः तुम्हाला जास्ती जोखम कार्य पासून दूर रहायला पाहिजे असा भाग्य बृद्धि कारक होणार.

तुमचा मूळांक 8 आणि भाग्यांक 4 आहे मूळांक 8 चा स्वामी शनि आणि भाग्यांक 4 चा स्वामी हर्षळ आहे, मूळांक 8 आणि भाग्यांक 4 चा संवन्ध मित्र सारख्या आहे. यांच्या प्रभाव मूळांक आणि भाग्यांक वर पूर्ण होणार रोजगार व्यापार क्षेत्रा मधे तुमची उन्नति हळू–हळू शुरु होउन आपळे कार्य क्षेत्र मधे जास्ती परिश्रम होणार. आपळी उन्नति सीडी दर सीडी होणारी नंतर दुसरी सफळते भेंटणारी. तुमचे जास्ती कार्य उशीर होणार तसेच कार्य मधे अवरोध येणार ज्या मुळे धैर्य सह परिश्रम पासून कार्य कराय साठी लक्ष्य ठेवा, शुरुआती ची आर्थिक स्थिति विशेष बरी नाय होणारी पण मध्य आयुष्य मधे सुधार होणार धन सम्पत्ति साठी कोणी पण कार्य मधे अवरोध नाय येणार. तुमचा स्वाभिमान फार जास्ती आहे आपळे सिद्धान्त वर चलणारी असी संवय होणारी सामाजिक स्थित अनुकूल आणि मान सम्मान प्राप्त होइल. जीवनांची अखेर आयुष्य वर सम्मान भेंटणार. तुमचे मूळांक 8 चा 1 आणि 4 वर मित्रता आहे तसेच भाग्यांक 4 ची 1 आणि 8 वर अतः तुमचे जीवनां मधे– 1, 4, 8, अंक विशेष महत्वपूर्ण आहे असे अंका चे समयावर जीवनां चे प्रमुख घटणे घटणारी. तुमचे मूळांक आणि भाग्यांक ची मित्रता होण्या मुळे भाग्यांक फळ आपळे अनुकूल होणार, तुमचे जीवना ची प्रमुख घटणे असी अंका ची तारीख मास

ईस्वी सन् किंवा आयुष्य चे वर्षा तीळ होणारी जेह्वा कधी असे अंका ची तारीख, मास, ईस्वी सन् किंवा आयुष्य चा वर्षा सह वार पण मेळ करतात तर असा समया वर आपळे विशेष कार्य होतात तसेच कोण पण कार्य कराय साठी–पत्र लेखन नवीन, कार्य, मोठे अधिकारयां ची भेंट वगेरे शुभ होतात, तुमचे जीवनां ची गेळेला दिवसा चा अवलोकन करा असा अंका चा समयावर आपळे काही घटणे झाळी असेळ. आपण गेळेला दिवसा ची अवलोकन करुन नंतर लक्षात ठेवा जेह्वा अंक आपळे विशेष अनुकूल आहे तर असी अंका चे आधार वर विशेष प्रयोजने ठेवा असा शुभ होणार. जनवरी, अप्रैल, अगस्त, महिना विशेष लाभ साठी आहे आपण कोण पण नवीन कार्य असा दिवसी शुरु करा जेह्वा दिवस, तारीख, मास तसेच वर्ष आपळे मूळांक–भाग्यांक सह मेळ स्थापित करतात असा समयावर सर्व शुभ आहे. मूळांक 8 आणि भाग्यांक 4 चा प्रभाव पासून ईस्वी सन् ज्यांचा योग– 1, 4, 8 आहे, हे विशेष घटणे साठी आहे. तुमचे आयुष्य चे विशेष घटणे चा वर्ष. 1 – 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73. 4 – 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67, 76. 8 – 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71, 80वर लिहेला वर्ष तुमचे आयुष्य चा विशेष घटणे चा वर्ष आहे हा वर्षा मधी काही विशेष घटणे होणारी आणि जीवनां चा परिवर्तन होणार तसेच काही घटणे स्मारक होणारी.

ग्रह फल

सूर्य

बारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक वाम नेत्र तथा मस्तक रोगी ,आलसी, उदासीन, परदेशवासी, मित्र-द्वेषी एवं कृश शरीर होता है।

सिंह राशि में रवि हो तो जातक सत्संगी पुरुषार्थी, योगाभ्यासी, वनविहारी, क्रोधी, गम्भीर, उत्साही, तेजस्वी एवं धैर्यशाली होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी सहायता करते रहेंगे। साथ ही उनकी प्रवृति पुण्य एवं दान संबंधी कार्यों को करने की रहेगी अतः आपको भी वे पुण्य कार्यों की ओर प्रेरित करेंगे। साथ ही धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण आदर की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों से संबंधों में कटुता या तनाव उत्पन्न होगा परन्तु कुछ समय के बाद स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। जीवन में आप उनके सुख दुःख का भी ध्यान रखेंगी एवं समयानुसार उनको पूर्ण सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कोई कष्ट नहीं होने देंगी।

चन्द्र

षष्ठभाव में चन्द्रमा हो तो जातक अल्पायु, आसक्त, कफरोगी, खर्चीले स्वभाववाला, नेत्ररोगी एवं भृत्यप्रिय होता है।

कुम्भ राशि में चन्द्रमा हो तो जातक, उन्मत, सूक्ष्मदेही, शिल्पी, नीति दक्ष, दूरदर्शी, विद्वान्, गुप्तविद्याओं में रुचि, अच्छा अन्तर्ज्ञान, साधना करने वाला, धार्मिक प्रवृत्ति वाला एवं मध्यावस्था में संन्यास के प्रति झुकाव होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठभाव में स्थित है। अतः आप माता की प्रिय रहेंगी उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक रूप से वे दुर्बलता की अनुभूति करेंगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगी तथा जीवन में आपको पूर्ण रूप से हर सम्भव सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। इसके साथ ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में यदि कोई व्यवधान आएंगे तो उन्हें दूर करने में सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगी तथा आपकी सफलता की सर्वदा इच्छुक होंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान की भावना रखेंगी तथा हमेशा उनकी सेवा करने के लिए तत्पर रहेंगी परन्तु आपके मध्य कभी कभी मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे अप्रिय स्थितियां भी उत्पन्न होंगी लेकिन फिर भी सामान्य संबंध मधुर ही रहेंगे। साथ ही उनको

जीवन में वांछित सहायता एवं सहयोग प्रदान करने की भी आप इच्छुक रहेंगी।

मंगल

लग्न (प्रथम) में मंगल हो तो जातक, चपल, क्रूर, महत्वाकांक्षी, विचार रहित, गुप्तरोगी, उतावला, लौहधातु एवं व्रणजन्य, कष्ट से युक्त, व्यवसायहानि, दुर्घटना की सम्भावना, दुःखी, निर्धन एवं साहसी होता है।

कन्या राशि में मंगल हो तो जातक सुखी, शिल्पज्ञ, पापभीरु, लोकमान्य एवं व्यवहार कुशल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक व्याकुलता से वे पीड़ित रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह का भाव भी विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे तथा जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से समय समय पर आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आपके हृदय में भी उनके प्रति स्नेह एवं सम्मान की भावना विद्यमान रहेगी। आपके संबंध प्रायः मधुर ही होंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण अल्प समय के लिए संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होंगे परन्तु कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। आप एक दूसरे से प्रायः सहमत रहेंगे एवं विश्वास भी करेंगे। इसके साथ ही आप भी हमेशा सुख दुःख में यथाशक्ति उनकी सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगी।

बुध

लग्न (प्रथम) में बुध हो तो जातक आस्तिक, गणितज्ञ, दीर्घायु, उदार-विनोदी, वैद्य, विद्वान, स्त्रीप्रिय, मितव्ययी एवं मधुरभाषी होता है।

कन्या राशि में बुध हो तो जातक वक्ता, कवि, साहित्यिक, लेखक, सम्पादक, ज्योतिषी, खगोलशास्त्री, गणितज्ञ, अध्यापक, उदार, सुखी एवं अच्छा चरित्र वाला होता है।

गुरु

नवमभाव में गुरु हो तो जातक पराक्रमी, धर्मात्मा, पुत्रवान, बुद्धिमान, राजपूज्य, तपस्वी, विद्वान्, योगी, वेदान्ती, यशस्वी, भक्त, भाग्यवान् संन्यास की ओर प्रवृति एवं प्रचुर सन्तान होता है।

वृष राशि में गुरु हो तो जातक पुष्टशरीर वाला, सदाचारी, धनवान्, आस्तिक, चिकित्सक, विद्वान, बुद्धिमान्, जीवन में स्थिरता, दृढ़विचार, दिखावा करने वाला एवं कामुक होता है।

शुक्र

लग्न (प्रथम) में शुक्र हो तो जातक सुन्दरदेही, दीर्घायु, राजप्रिय, कामी, उच्चसरकारी पद पर आसीन, विलासी, भोगी, विद्वान्, प्रवासी, मधुरभाषी, प्रसिद्ध सुखी एवं ऐश्वर्यवान् होता है।

कन्या राशि में शुक्र हो तो जातक, सुखी, भोगी, अतिकामी, सभापण्डित, रोगी, वीर्यहीन, सट्टे द्वारा धननाशक एवं अवैध सम्बन्ध रखने वाला होता है।

शनि

ग्यारहवें भाव में शनि हो तो जातक बलवान् विद्वान, दीर्घायु, शिल्पी, सुखी, चंचल, क्रोधी, योगाभ्यासी, नीतिवान् परिश्रमी, व्यवसायी, पुत्रहीन, कन्याप्रज्ञ एवं रोगहीन होता है।

कर्क राशि में शनि हो तो जातक, गरीब, कमसन्तान, बाल्यावस्था में दुखी, मातृरहित, प्राज्ञ, उन्नतिशील, विद्वान, हठी एवं स्वार्थी होता है।

राहु

द्वितीय भाव में राहु हो तो जातक संहशील, अल्पधनवान्, कठोरभाषी, कुटुम्बहीन, अल्पसन्तति, मात्सर्ययुक्त एवं परदेशगामी होता है।

तुला राशि में राहु हो तो जातक अल्पायु, दाँतों के रोग, विरासत में धन पाने वाला एवं कार्य कुशल होता है।

केतु

अष्टम भाव में केतु हो तो जातक दुर्बुद्धि, स्त्रीद्वेषी, चालाक, दुष्टजनसेवी, तेजहीन, नीच, स्त्री की कुण्डली में पति के लिए अशुभ एवं अल्पायु होता है।

मेष राशि में केतु हो तो जातक चंचल, बहुभाषी एवं सुखी होता है।

शारीरिक सौष्ठ, व्यक्तित्व आणि प्रकृति

कन्या लग्नामध्ये जन्म झाल्यामुळे आपले आरोग्य सामान्य असेल, पण स्वभावात चांचल्य असेल. आपले व्यक्तिमत्व लज्जा व शीलयुक्त असेल. त्यामुळे इतरांसमोर सादर होताना त्रास होईल पण एकदा मित्रत्व झाल्यावर मोकळ्या स्वभावाने सर्वांना प्रभावित व आकर्षित कराल. अभ्यासात रूची राहील व विभिन्न शास्त्रांचे अध्ययन करून त्याचे ज्ञान प्राप्त कराल. सद्‌गुण संपन्न असाल आणि सर्व लोक प्रभावित होतील. भाग्यशाली असाल आणि अधिकांश शुभ व महत्वाची कामे सौभाग्यानेच संपन्न होत राहतील, त्यासाठी खूपच कमी कष्ट करावे लागतील. स्त्रियांकडे जास्त आकर्षण असेल.

जीवनात मित्र कमी असतील. विचारी असाल आणि कलाकार, लेखक, वक्ता, मनोवैज्ञानिक किंवा टीकाकार आदि मध्ये यश प्राप्त करू शकता. बुद्धिमत्ता तीव्र असेल आणि गूढतम गूढ तत्वे प्राप्त करण्यात यश मिळेल. भौतिक सुख संसाधनांचे तीव्र आकर्षण असेल आणि कष्टाने ती प्राप्त करून त्याचा उपभोग घ्याल. आपल्या भावना गुप्त ठेवण्यात चतुर असाल आणि त्यामुळे पहिल्या भेटीतच तुम्हाला समजून घेण्यास लोक असमर्थ असतील. स्वतःहून पुढे होऊन एखादे कार्य करण्यास संकोच कराल त्यामुळे कधी कधी त्यातून हानी व त्रास होऊ शकतो.

राजकारणात रूची कमी असेल, पण राजकारण्यांचे सचिव किंवा सल्लागाराचे काम उत्तमरित्या करू शकाल. कारण आपली बुद्धि कठीणातील कठीण प्रश्नांचे उत्तर शोधण्यास समर्थ असेल. त्यामुळे नोकरी करण्यात आपल्याला फारशी अडचण येणार नाही. भावुकता कमी असेल आणि आपल्या सर्व कामामध्ये बुद्धि व विवेकचाच वापर कराल. त्यामुळे सर्व लोक आपल्या बुद्धि मत्तेची प्रशंसा करतील समाजामध्ये प्रतिष्ठा वाढेल. प्रेमाच्या क्षेत्रात पावित्र्य राखाल. व्यापार किंवा बॅंक आदि क्षेत्रात धनार्जन करू शकता. अशाप्रकारे आपल्या शांत स्वभाव, कष्टाळू, कार्यदक्ष, विवेकी, बुद्धिमान, गुणवान व विचारवंत या रूपांमध्ये आपला परिचय ठेवण्यात समर्थ राहाल व धनऐश्वर्य व वैभव प्राप्त कराल. यथोक्तम–

कामक्रीडा सद्‌गुणज्ञान सत्वकौशालाद्यैः संयुक्तः सुप्रसन्नः।
लग्न कन्या यस्य जन्या जघन्यां कन्यां क्षीराब्धेरवाप्नोति नित्यम्।।

– जातकाभरणम

म्हणजेच कन्या लग्नामध्ये जन्मलेला जातक कामक्रीडामध्ये निपुण, सद्‌गुणी, ज्ञानवान, कार्यकुशल, सर्वदा प्रसन्न व लक्ष्मीवान असतो.

धन, कुटुंब, डोळा आणि वाणी

आपल्या जन्मसमयी द्वितीय भावामध्ये शुक्राची तूळ राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपले कौटुंबिक जीवन सुख शांती व समृद्धियुक्त असेल आणि सर्व कुटुंब परस्पर प्रेमपूर्वक राहतील आणि एकमेकांना पूर्ण सुख व मदत करतील. वाक्चातुर्याने अनेक शुभ व महत्वाची कामे सिद्ध करण्यामध्ये सफळ व्हाल. प्रौढावस्थामध्ये काही प्रमाणात डोळ्यासंबंधी कष्ट होऊ शकतात.

धर्मावर आपल्या मनामध्ये आस्था असेल आणि वेळोवेळी धार्मिक व इतर शुभ मांगलिक कार्य संपन्न करत राहाल. त्याचबरोबर इतर उत्सवांचे आयोजन करण्यात रूची राहील. पैतृक संपत्ती प्राप्त होईल आणि अनेक प्रयत्न व कष्टाने वांछित धनऐश्वर्य व वैभव प्राप्त कराल. कुटुंबाला प्रसन्न व सुविधा देण्यासाठी नेहमी प्रयत्न करत राहाल. समाजामध्ये आदरणीय व्यक्ती असाल आणि सौभाग्याने आपले जीवन सुख व प्रसन्नपूर्वक व्यतित होईल. व्यापारातून वेळोवेळी लाभ होत राहील.

पराक्रम, संबंधी, प्रकाशन, लाहान–प्रवासं

आपल्या जन्मसमयी तृतीय भावामध्ये मंगळाची वृश्चिक राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपली स्मरणशक्ती प्रबळ असेल आणि कोणत्याही दीर्घकाळ लक्षात ठेवणे शक्य होईल. आपण एक आत्मविश्वासी, साहसी व पराक्रमी व्यक्ती असाल आणि या गुणांमुळे सर्व कौटुंबिक महत्वाची शुभ कार्य संपन्न करून त्यातून यश प्राप्त कराल. मंगळाच्या प्रभावामुळे आपल्यामध्ये निर्णय घेण्याची शक्ती घ्ढ असेल आणि मन नेहमी सक्रीय व सजग असेल.

मंगळ भाऊ–बहिण व भूमिसंबंधी मालमत्तेचा कारण असल्याने भावंडांसोबत राहून त्यांचे पूर्ण सुख, सहकार्य प्राप्त कराल आणि तेसुद्धा आपल्याला पूर्ण मदत व सन्मान प्रदान करतील तसेच आपल्यासंबंधी कर्तव्यपरायण व विश्वसनीय राहतील. त्यामुळे त्यांच्या चुकांना वेळोवेळी क्षमा कराल. त्याचबरोबर भूमि व मालमत्तेने युक्त असाल आणि त्यातून भरपूर लाभ व सुख प्राप्त होईल. आपण एक साहसी व पराक्रमी व्यक्ती असाल, त्यामुळे अडचणी, क्रोध व अनावश्यक वादविवाद यांना वेळीच नियंत्रित कराल. आपल्या नेतृत्व क्षमता तसेच सामाजिक गुणांमुळे लोकांवर वर्चस्व राखण्यात यशस्वी व्हाल. संचारसंबंधी उपकरणांची प्राप्ती होऊन त्याचा उपभोग घ्याल. संगीतावर रूची असेल. प्रवासामधून आपल्याला लाभ व मित्रप्राप्ती होत राहील. परंतु मित्रांपासून आपण सतर्क राहणे गरजेचे आहे. साहसी कार्ये कराल आणि इतरेजनांशी वादविवाद टाळावा.

आई, वाहन, भौतिक ऐश्वर्य, भूमि आणि शिक्षा

आपल्या जन्मसमयी चतुर्थ भावामध्ये गुरूची धनु राशी उदित होती. याचा प्रभावामुळे आपली आई उत्तम गृहिणी असेल आणि आपल्या वडिलांचा कामात ढवळाढवळ कमी करणारी असेल. त्याचबरोबर जोपर्यंत विचारत नाही तोपर्यंत कोणताही सल्ला देणार नाही. तिची प्रवृत्ती सामंजस्याने राहण्याची असेल. स्वभावाने शांत, चतुर व योग्य स्त्री असेल. पतीसंबंधी तिचा व्यवहार नम्रतेचा असेल आणि पतीने एखादा चुकीचा निर्णय घेतला तर त्यासंबंधी योग्य सल्ला देईल. त्याचबरोबर ती एक विश्वसनीय, कर्तव्यपरायण व प्रसन्न चित्ताची स्त्री असेल आणि बुद्धि मत्तेचा भाव असेल.

आपले घर सुंदर व आकर्षक असेल. छोट्या घरात राहणे आपल्याला चांगले वाटत नाही, त्यामुळे आपल्यासाठी एखाद्या समृद्ध जागेत घर निर्माण कराल. त्याचबरोबर भरपूर मोकळ्या जागेत राहाणे आवडेल जिथे मित्र व अतिथींबरोबर मनोरंजन करू शकाल. घरामध्ये आपण अनेक प्रकारची भौतिक उपकरणांची व्यवस्था कराल आणि त्यांनी घर सजवून सुंदर व आकर्षक ठेवाल. अशाप्रकारे सुसज्जित, आधुनिक घराची अपेक्षा ठेवाल. त्याचबरोबर उत्तम वाहनादिचा लाभ होईल व त्याचा उपभोग घ्याल. पैतृक संपत्ती प्राप्त होईल आणि त्यातून वेळोवेळी लाभ होईल. उच्च शिक्षण प्राप्त कराल. विज्ञान, साहित्य किंवा गणित विषयांमध्ये विशेष रूची राहील आणि तत्संबंधी उच्च शिक्षण प्राप्त होईल. त्याचबरोबर गुप्त धन किंवा विद्या पासून सुद्धा लाभ होत राहतील.

बुद्धि, सन्तान आणि लग्न सम्बन्ध

आपल्या जन्मसमयी पंचम भावामध्ये शनिची मकर राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपण बुद्धिमान, कूटनीतिज्ञ, चतुर आणि आपले काम करण्यास दक्ष असाल. सामान्यपणे शैक्षणिक कामासाठी विशेष कष्ट घ्याल आणि उच्च शिक्षण घेण्यात यश मिळेल. वैदिक साहित्य व ज्ञानामध्येसुद्धा आपल्याला रूची असेल आणि कष्टाने त्याचे तसेच ज्योतिषसंबंधी ज्ञान प्राप्त कराल. त्याचबरोबर जुने रीतिरिवाज मानणारे असाल.

संतती असेल आणि आयुष्यभर त्यांचे पूर्ण सुख व मदत मिळत राहील. कौटुंबिक कर्तव्ये पार पाडण्यात समर्थ असाल. पत्नी व मुलांवर माया असेल, पण त्याचे प्रदर्शन करू शकणार नाहीत, त्यामुळे पत्नी किंवा मुलांमध्ये आपल्या विषयी गैरसमज निर्माण होऊ शकतो. नंतर गैरसमज दूर होऊन कौटुंबिक सौख्य वाढेल. आपल्या अंतरातील भावना प्रगट करू शकणार नाहीत तसेच भावुकतेचे प्रमाण कमी असेल. हळूहळू व कष्टाने आपले काम पूर्ण कराल. प्रेमात अपयशी व्हाल पण संततीचे पूर्ण सुख लाभेल. मुले उच्च शिक्षण प्राप्त करतील व वाहनसुख लाभेल. चांगले विचार घेऊन कधी कधी कठीण काम पूर्ण करणारे तसेच मनाचा देखील कधी कधी कठोरपणा दाखवाल.

रोग, शत्रु, सेवक आणि मामा

आपल्या जन्मसमयी शनिची कुंभ राशी उदित होती. याचा प्रभावामुळे आपले आरोग्य सामान्यतः चांगले असेल तसेच दीर्घायुष्य लाभेल. आपण एक दयाळू व सद्प्रवृत्तीची व्यक्ती असाल, परंतु कधी कधी बोलताना कठोर शब्दांचा वापर आपल्याकडून होऊ शकतो, ज्यामुळे अनेक लोक आपल्याशी शत्रूत्व पत्करतील. त्याचबरोबर लोक आपली खुशी व वैभवाने ईर्षालू होऊन शत्रूत्व बाळगतील. आपल्याला उच्च सन्मान प्राप्त होतील, पण विरोधदेखील प्रबळ असेल. आपल्याला कुटुंबावर जास्त खर्च करण्याची बुद्धी असल्याने त्यासाठी कर्जबाजारी होण्याची पाळी येईल. त्यामुळे कधी कधी कर्जफेडण्यास विलंब झाल्यामुळे संबंधित व्यक्तीशी कटुत्व येईल. पण आपली प्रतिभा व अधिकाराच्या बळावर अशा प्रसंगांवर मात करण्यास समर्थ असाल.

आपले नोकर आज्ञाधारक असतील व प्रामाणिकपणे आपली सेवा करून आपल्याला संतुष्ट ठेवतील, पण त्यांच्यापासून मामुली नुकसान होण्याचा संभव असल्याने सावध राहावे. कोर्टकचेरीबाबतीत आपण बेफिकीर असल्याने अशा बाबतीत सावध राहावे व आपला हिशोब नीट ठेवावा. अशाप्रकारे जर सावधपणे आपली कामे केलात तर त्यात आपल्याला काही प्रमाणात यश लाभेल. फौजदारी बाबतीत आपल्याला यश मिळेल.

आपले मामा–मामीबरोबर संबंध विशेष चांगले असणार नाहीत. प्रत्यक्षपणे जरी आपलेपणाचा भाव त्यांनी दाखवला तरी अप्रत्यक्षपणे तुम्हाला मदत करण्याची त्यांची भावना असणार नाही. यासाठी संबंधामध्ये माधुर्य ठेवण्यासाठी बुद्धीचा वापर करावा. वृद्धावस्थेत पोट व गुदासंबंधी पीडा होण्याचा संभव आहे. यासाठी खाण्या–पिण्यावर नियंत्रण ठेवावे.

दम्पति, विवाह आणि साझेदार

आपल्या जन्मसमयी सप्तम भावामध्ये गुरूची मीन राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपला पती दिसायला सुंदर, बुद्धिमान व सुशिक्षित असेल. दोघांमध्ये परस्पर उत्तम सामंजस्य असल्यामुळे दाम्पत्य जीवन सुख व प्रसन्नतेने जाईल. दाम्पत्य जीवनाला सामाजिक गरज समजून स्वीकाराल. पतीच्या सुखसुविधांची आपण पूर्ण काळजी घ्याल आणि आपल्याकडून कोणतेही कष्ट होऊ देणार नाही.

व्यापार किंवा व्यवसाय क्षेत्रामध्ये आपल्याला अत्यंत सावधपूर्वक आपल्या भागीदाराची निवड करावी लागेल. आपण एक कष्टाळू व्यक्ती आहात आणि निरंतर काम करण्याची तयारी असते. एखादे काम किंवा योजनेला अंतिम रूप देताना तुम्हाला एकांताची गरज भासत असते. आपल्या कठीण परिश्रम व पात्रतेने जीवनामध्ये प्रगतीच्या मार्गावर अग्रेसर राहाल आणि व्यापारामध्ये शिखरावर किंवा नोकरीमध्ये एखाद्या उच्च पदावर जाल. बाहेर गुंतवणूक केलेला पैसा कष्टाने परत मिळेल. त्यामुळे व्यापारापेक्षा नोकरीवरच ध्यान देणे चांगले. याचा अर्थ व्यापार करण्याची इच्छा सोडून द्यावी असा नाही. फक्त सावधपणे व सतर्कतेने कामे करावीत. आपल्यासाठी किंवा पतीसाठी दलाली, लेखा आणि द्रव्यासंबंधी कामे किंवा सिंचन विभाग चांगला राहील. वृषभ, मकर, कर्क आणि वृश्चिक लग्नाच्या जातकाशी संबंध जोडावेत. सुखी जीवनासाठी यापैकी एखाद्या राशीचा जोडीदार निवडावा. याव्यतिरिक्त आपला पती बुद्धि मान, पुत्रवान परंपरेनुसार धर्मानुपालन करणारी, विश्वसनीय व कलाकार असेल.

हुण्डा, बीमा आयुष्य आणि आपघात

आपल्या जन्मसमयी अष्टम भावामध्ये मंगळाची मेष राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपल्याला ज्योतिष, तंत्र, मंत्र किंवा आध्यात्मिकतेमध्ये विशेष रूची किंवा श्रद्धा असणार नाही. याचे मुख्य कारण तुम्ही आपल्या कार्यक्षेत्रामध्ये व्यस्त असाल आणि परिश्रम व पराक्रमाने आपले कार्य संपन्न कराल. इतर अनेक कामांमध्येसुद्धा गुंतवून घेतल्याने आपल्याकडे वेळ असणार नाही. वेळ शिल्लक राहिला तर खेळामध्ये खर्च करणे पसंत कराल. पण कधी कधी आध्यात्मासंबंधी प्रवचनादि ऐकायला जाल. पैतृक संपत्तीचा निश्चित लाभ होईल. एक भाग्यवान व्यक्ती असल्याने विस्तृत जमीन मालमत्तेचे मालक बनाल. ही मालमत्ता विकायचा निर्णय घेतला तरी त्यातून भरपूर लाभ होईल.

आपल्या विवाहावेळी हुंडा किंवा तत्सम अहेराच्या स्वरूपात अपेक्षित लाभ होईल. आपल्या स्तरानुसार ते भरपूर नसले तरी आपल्या राहणीमानामध्ये वृद्धि करण्यास ते समर्थ असेल. वीम्यामधून लाभ होईल आणि वेळोवेळी स्वतःचा तसेच इतर वस्तूंचा वीमा उतरवाल. कुंडलीत घरामध्ये चोरीचे योग नाहीत. अशी घटना घडलीच तर ती सामान्य असेल आणि त्याबद्दल चिंता करण्यासारखे काही नसेल, कारण बहुमूल्य वस्तू सुरूवातीलाच सुरक्षित ठेवलेल्या असतील. दीर्घायु असाल आणि आनंदाने जीवन घालवाल.

सौभाग्य, प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा आणि लाम–प्रवास

आपल्या जन्मसमयी नवम भावामध्ये शुक्राची वृषभ राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपल्यामध्ये धार्मिक प्रवृत्ती असेल आणि ही धार्मिकता आपल्या वडिलोपार्जित किंवा कुटुंबामधून चालत आलेली असेल. धार्मिक कार्ये श्रद्धेने संपन्न कराल आणि दैनिक पूजापाठामध्ये रूची असेल. तरूणपणी दैनिक पूजापाठ कमीच कराल, पण देवावर पूर्ण विश्वास असेल. आध्यात्म तसेच ध्यान योगाकडे आकर्षण असेल आणि तत्संबंधित ग्रंथांचे आवडीने अध्ययन कराल.

अंतप्रज्ञा शक्ती चांगली असेल तसेच ज्योतिष, तंत्र, मंत्र किंवा हस्तविज्ञानाचे चांगले ज्ञान असेल किंवा त्यामध्ये रूची असेल. आपली भविष्यवाणी खरी ठरेल. अंतप्रज्ञा शक्ती वाढवण्यासाठी वेळोवेळी पूजापाठ कराल. उच्च शिक्षण प्राप्त कराल आणि त्यातून समाजामध्ये मानसन्मान व कीर्ती प्राप्त होईल. तीर्थयात्रा कराल आणि त्यातूनही लाभ होईल. वैदिक साहित्यामध्ये रूची राहील आणि वृद्धावस्थेत बहुतांशी काळ त्यातच जाईल. वैभवशाली आणि आरामशीर जीवन चांगले वाटेल. कष्टाने व भाग्याने ऐश्वर्यवान जीवन जगाल. नातवंडांची पूर्ण मदत व सुख लाभेल. वास्तवात पूर्वजन्मी अनेक पुण्यकार्ये केल्यामुळे या जन्मात सर्वप्रकारच्या सुखाचा लाभ घेत आहात. गरीबांची मदत करणारे, अलंकारयुक्त व अतिथीसेवा करण्यास तत्पर अशी धार्मिक प्रवृत्तीची व्यक्ती आहात.

पिता, व्यवसाय आणि सामाजिक स्थिति

आपल्या जन्मसमयी दशम भावामध्ये बुधाची मिथुन राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपल्या वडिलांचे आरोग्य चांगले असेल आणि आपल्या कौटुंबिक कार्यांना कष्टाने पूर्ण करण्यास तत्पर असतील. ते नेहमी घ्ढपणे आपल्या निश्चयावर ठाम असतील आणि अपेक्षित यश प्राप्त करूनच कामे पूर्ण करतील. सामान्यपणे ते निरंतर काम करणारे जिज्ञासू आणि उदार प्रवृत्तीचे असतील, पण त्यांच्या जीवनामध्ये अनेक परिवर्तने आलेली असतील.

व्यवसाय क्षेत्रामध्ये भागीदारीमध्ये विशेष लाभ होणार नाही, पण नोकरीतून उचित लाभ व संतुष्टि मिळेल. अपरिहार्यपणे भागीदारी करावीच लागली तर अतिशय सावधपणे व सतर्कतेने काम करावे. आपल्यासाठी उचित कार्य लेखा विभाग, कायदेसंबंधी कामे किंवा वकील किंवा पाण्यासंबंधित विभाग असेल. याव्यतिरिक्त शिक्षक, फिल्म वितरक, ज्योतिष किंवा तंत्र, मंत्र आणि क्षेत्रीय नेत्याच्या रूपातून सुद्धा लाभ व यश मिळू शकते. सरकारी स्रोतातून अपेक्षित मदत मिळे व सरकारकडून उचित लाभ व सन्मान प्राप्त होईल. याव्यतिरिक्त आपण कार्यदक्ष, वरिष्ठांचे आज्ञाधारक, धार्मिक किंवा पुण्यकार्य करणारे, प्रेमळ स्वभाव व प्रभावी व्यक्ती असाल आणि समाजामध्ये यथोचित मानसन्मान प्राप्त होईल.

लाभ, मित्र, समाज, मोठा भाऊ आणि आकांक्षा

आपल्या जन्मसमयी एकादश भावामध्ये चंद्राची कर्क राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपण स्वकष्ट व पराक्रमाने उचित प्रमाणात धनार्जन करण्यास समर्थ असाल आणि आर्थिक क्षेत्रात भाग्यशाली असाल. आईच्या माध्यमातून किंवा सहकार्याने उत्पन्नामध्ये वृद्धि होईल. तसेच समुद्रातून उत्पन्न होणाऱ्या पदार्थ किंवा रत्न आदिपासून देखील भरपूर लाभ होईल. एक महत्वाकांक्षी व्यक्ती असाल आणि मनामधील आकांक्षा पूर्ण करण्यास आपण समर्थ असाल.

आपल्या कुंडलीनुसार तुमचे मोठ्या भावांपेक्षा बहिणींशी चांगले संबंध असतील आणि त्यांच्याकडून पूर्ण सुख, सहयोग प्राप्त होईल. आईचे सुद्धा चांगली माया लाभेल व तिची कृपाघ्ष्टी तुमच्यावर नेहमी राहील. मित्रवर्गसुद्धा चांगला असेल आणि मित्रांमध्ये आपण सन्माननीय, प्रतिष्ठित मानले जाईल. तसेच सर्व मित्र गुणवान, शिक्षित व बुद्धिमान असतील. समाज, मित्र व इतरेजनांबाबतीत तुमच्या मनात आपुलकीची भावना असेल आणि त्यांच्यावर माया कराल. तेसुद्धा तसाच प्रतिसाद देतील. कौटुंबिक व्यक्ती या नात्याने फावला वेळ कुटुंबासोबत घालवणे आपल्याला आवडेल. सामाजिक सन्मान व कीर्तीचे योग बनतात. कार्यक्षेत्रात कधी कधी त्रास होईल, पण सामान्यतः जीवन सुख व आनंदपूर्वक घालवाल.

घाटे, बन्धन, कर्जे, आवास परिवर्तन आणि मोक्ष

आपल्या जन्मसमयी द्वादश भावामध्ये सूर्याची सिंह राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपला व्यापार सुध्द असेल आणि भूमिसंबंधित उत्पादनांमधून आपल्याला लाभ होत राहील. झटकन धनवान होण्याची मनामध्ये इच्छा राहील त्यामुळे उद्दिष्टप्राप्तीसाठी खूप कष्ट घ्याल. आर्थिक क्षेत्रात अतिशय सतर्क राहाल आणि पैसा कुठून, कसा जात आहे यावर बारीक लक्ष असेल. त्यामुळे खूप विचार करून योग्य तिथेच खर्च कराल. या प्रवृत्तीमुळे गुंतवणूक भरपूर असेल आणि बचतसुद्धा राहील. अशाप्रकारे मध्यायूपर्यंत धनवान व्यक्ती बनून समाजामध्ये स्वतःचे स्थान निर्माण कराल.

पैसा सदैव आपल्यापाशी राहील आणि बॅंकमध्ये आपल्याला सन्माननीय वर्तणूक मिळेल. व्यसन कमीच असेल, ज्यामुळे अनावश्यक खर्च टळेल. कुटुंबाची जबाबदारी उत्तमरित्या सांभाळत त्याच्या सुखसुविधांसाठी आवश्यक तिथे खर्च करत राहाल. मुलांच्या खाण्या–पिण्यावर तसेच शिक्षणासाठी विशेष खर्च कराल. प्रवास करणे आवडते. आपला व्यवसायसुद्धा प्रवासासंबंधितच असेल. कधी कधी पर्यटनासाठी सहकुटुंब प्रवास कराल. आयुष्यात एकदा विदेश भ्रमण करून याल. प्रवासातून आपल्याला लाभ व यश लाभेल.

फलादेश - 2025

यंदा गोचरीने गुरु पंचम भावात असेळ व त्याच्या प्रभावाने हे वर्ष तुमच्यासाठी सामान्यतः चांगळे असेळ. ज्योतिष, संगीत व साहित्याविषयी आवड निर्माण होईळ. व यत्नपूर्वक त्याचे ज्ञान मिळवाळ. ह्या काळात आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ व धनप्राप्तीचे योग संभवतात. महत्वाच्या राजकारणी ळोकांशी ओळखी होतीळ व त्यातून ळाभ संभवतो. व्यापार व कार्यक्षेत्रात उन्नतीपथावर असाळ. मुळांकडून सहकार्य मिळेळ. तुमची कार्यक्षमता वाढेळ. पण अन्य गोचरफळ व दशाफळ यंदा अशुभ असल्याने उपरोक्त चांगल्या फळात कधी–कधी कमतरता संभवते.

यंदा गोचरीने शनी द्वितीय भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने कौटुम्बिक सुख–शान्ती मध्यम स्वरूपाची असेळ. परस्पर मतभेद होतीळ. त्याचबरोबर सहकार्य कमी असेळ. ह्या काळात मानसिक स्थिती चांगळी नसेळ पण महत्वाची कार्ये परिभमपूर्वक करण्यास तत्पर असाळ. शत्रू किंवा विरोधक अडथळे आणतीळ. फळतः व्यापार किंवा नोकरीत उन्नतीमध्ये अडचणी येतीळ. त्याचबरोबर धनार्जन पण आवश्यक प्रमाणात कराळ.यंदा गोचर व अन्य दशाफळ अनुकूळ नाही. त्याचबरोबर साडेसातीची शेवटची वर्षे असल्याने कौटुम्बिक, सामाजिक स्तरावर, नोकरी व राजकारणाळ अडथळे येतीळ. पण कष्टाने त्यावर मात कराळ. शनीचा अशुभ प्रभाव कमी करण्यासाठी नियमितपणे शनीची पूजा व दान करावे. शनिवारी डाव्या हाताच्या मध्यल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे अशुभ फळे कमी होतीळ.

गोचरीने यंदा राहू लग्नी व केतू सप्तमात असेळ. त्याच्या प्रभावाने हे वर्ष चांगळे जाणार नाही. ह्या काळात शारीरिक कष्ट व त्रास अनुभवाळ. त्याचबरोबर दाम्पत्य संबंधात मतभेद व तणावाची शक्यता आहे. ह्या काळात आर्थि स्थिती विशेष चांगळी रहाणार नाही. धनप्राप्ती साठी कष्ट करावे ळागतीळ. परंतु खर्चाच्या अधिकतेमुळे अडचणी येतीळ. कार्यक्षेत्रातीळ उन्नती व सफळतेकरता परिश्रम व संघर्ष करावा ळागेळ. त्यानंतरच थोडेफार सुख मिळेळ. ह्या काळात नवीन संबंध जुळतीळ पण जुने संबंध कमी होतीळ. नवीन संपर्कातून भविष्यात ळाभ होण्याची शक्यता आहे. त्याचबरोबर यंदा अन्य गोचर व दशाफळ चांगळे नाही. त्यामुळे अडचणींना सामोरे जावे ळागेळ. व संघर्षानंतरच थोडीफार सफळता मिळेळ. म्हणून शुभ फळांच्या प्राप्तीकरता नियमिपणे राहूकेतूची पूजा व दान करावे. ज्यामुळे परीस्थिती अनुकूळ होईळ व मन :शांती मिळेळ.

बुध ची महादशा मधीं मंगळ चा अंतर 14/04/2025 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर राहु चा अंतर प्रारंभ होणार। मंगळ प्रथम भाव मधीं कन्या राशि मधी स्थित आहे। पण राहु द्वितीय भाव मधीं तुला राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि महत्वपूर्ण आहे अतः सगड़े शुभ परिणाम प्राप्त होणार. आत्मविश्वास आणि साहस मधे वृद्धी होणारी विषम परिस्थित मधे पण सफळ होउ सकतो. मोठे अधिकारयां पासून संबन्ध स्थापित होणार आणि सहयोग प्राप्त होणार. व्यापार किंवा नौकरी मधे उन्नती होणारी कोणी नवीन प्रयोजने शु करणारी तसेच सामाजिक यश प्रतिष्ठा प्राप्त होणार आणि समाज प्रभावित होणार. कुटुम्ब मधे परस्पर मधुर संवन्ध रहणार आणि सुख

शान्ती शत्रु वर विजय प्राप्त होणारी अतः असे समय चा सदुपयोग करावे.

हा समय तुमचा साठी मिळा–जुळा फळ देणार पण शुभ फळ जास्ती भेंटणार अतः परिश्रम आणि योग्यता पासून इच्छित परिणाम प्राप्त करणारी. ह्या वेळी प्रभाव युध माणूस बरोबर संपर्क स्थापित होणार जूने कार्य पण पूर्ण होणारे. समाजातीळ सहयोग आणि सम्मान प्राप्त होणार, कुटुम्ब सुख शान्ती आणि समृद्धी मधे उन्नति होणारी तसेच परस्पर मधुर सम्बन्ध रहणार. काही तरी प्रवास पासून फायदे होणार. ह्या वेळी आवास सम्बन्धातीळ परिवर्तन होउ सकतो. अतः समय सदुपयोग करावे. कुटुम्ब मधे कोणा चा स्वास्थ्य प्रभावित होउ सकतो.

फलादेश - 2026

गोचरीने यंदा गुरु सहाव्या भावात आहे. म्हणून हा काळ मध्यम स्वरूपाचा असेळ. ह्या काळात शारीरिक स्वास्थ्य चांगळे रहाणार नाही. तसेच मानसिक असंतोष पण राहीळ. म्हणून सांसारिक कार्यात परिश्रमानेच उन्नती मिळेळ. व्यापार किंवा नोकरीमध्ये पण उन्नतीकरता संघर्ष करावा ळागेळ. तेव्हाच सफळता मिळेळ. त्याचबरोबर शत्रू व विरोधक वारंवार अडथळे आणतीळ. पण त्यांचा सामना करण्यास तुम्ही समर्थ असाळ. ह्या काळात तुमचा खर्च जास्त होईळ. पण गरजेनुसार धनप्राप्ती होईळ. त्याचबरोबर मिळकत वाढण्याची शक्यता आहे. अन्य गोचर शुभ असळे तरी दशा चांगळी नसल्याने महत्वाची कामे सुरु करण्यात अडथळे येतीळ. पण नंतर स्वपराक्रम, कष्ट व बुद्धीने त्यावर मात कराळ. म्हणून हे वर्ष मध्यम स्वरूपाचे असून परिश्रम व पराक्रमाने तुम्हाळा यशप्राप्ती होईळ. म्हणून गुरुचा उपावास, पूजा व दान नियमितपणे करावे.

यंदा शनी गोचरीने द्वितीय भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने कौटुम्बिक सुखशान्ती मध्यम स्वरूपाची असेळ. आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ व आवश्यक प्रमाणाळ धन मिळवाळ. मानसिक शांती अनुभवाळ व सांसारिक जवाबदान्या पार पाडाळ. ह्या काळात विरोधक निर्बळ असत्याने व्यापार किंवा नोकरीत इच्छित उन्नती व सफळता मिळू शकते.अन्य गोचर शुभ व दशा सामान्य असेळ. साडेसातीची शेवटची वर्षे असत्याने वेळप्रसंगी उन्नतीमध्ये अडथळे येतीळ. पण कष्टाने त्यावर मात कराळ. त्याचबरोबर शनीचा दुष्परिणाम कमी करण्यासाठी नियमितपणे शनीची पूजा करावी. शनिवारी डाव्या हाताच्या मधल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे शुभ परिणाम वाढतीळ.

यंदा राहू गोचरीने लग्नी व केतू सप्तम स्थानात आहे. त्यामुळे हे वर्ष मध्यम स्वरूपाचे असेळ. ह्या काळात तुमची प्रकृती विशेष चांगळी रहाणार नाही. त्याचबरोबर मानसिक त्रास संभवतात. पती–पत्नीत मतभेद संभवतात. परंतु त्याचे दुष्परिणाम होणार नाहीत. संबंध सामान्य असतीळ. ह्या काळात आर्थिक स्थिती सामान्य असेळ. पराक्रम व कष्टाने धनप्राप्ती कराळ. पण खर्चही अधिक होतीळ. कार्यक्षेत्रातीळ उन्नती व सफळतेच्या दृष्टीने हे वर्ष संघर्षपूर्ण असेळ. कष्टानंतरच उन्नतीचे मार्ग प्रशस्त होतीळ. ह्या काळात जुने संबंध कमी होऊन नवीन संबंध स्थापित होतीळ ज्यापासून भविष्यात सफळता मिळू शकते.त्याचबरोबर अन्य गोचर अनुकूळ तर दशाफळ मध्यम स्वरूपाचे असेळ. त्यामुळे परिश्रम व संघर्षानंतरच कार्य सिद्ध होतीळ. त्यामुळे अशुभ फळे कमी करण्यासाठी नियमितपणे राहू केतूची पूजा, जप व दान करावे.

ह्या वर्ष बुध ची महादशा मधीं राहु चा अंतर रहणार। राहु द्वितीय भाव मधीं तुला राशि मधीं स्थित आहात पण बुध प्रथम भाव मधीं कन्या राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी सामान्य शुभ आणि अनुकूळ आहे. अतः शुभ अवसर प्राप्त होणार तसेच महत्वाकांक्षी प्रयोजने सफळ होणारी. व्यापार मधे लाभ होणार मोठे अधिकारयां बरोबर मधुर सम्बन्ध स्थापित होणार नोकरी मधे पदोन्नती होउ सकतो सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त होणारी आणि सम्मान भेंटणार. कुटुम्ब सुख शान्ती उत्तम रहणारी तसेच परस्पर सहयोग

भेंटणार धर्म मधे श्रद्धा उत्पन्न होणारी आणि धार्मिक कार्य सम्पन्न करणारी. अतः समय सदुपयोग करावे. शत्रु पासून हुसार रहाय ला पाहिजे, आणि वुद्धिमता पूर्ण पूंजी निवेश कराय ला पाहिजे काही तरी शत्रु पासून त्रास उत्पन्न होड सकतो.

फलादेश - 2027

यंदा गुरु गोचरीने सप्तम भावात असेळ. म्हणून हे वर्ष तुमच्यसाठी चांगळे असेळ. व्यापार किंवा नोकरीत वर्ष तुमच्यासाठी चांगळे असेळ. व्यापार किंवा नोकरीत उन्नती होईळ किंवा अचानक ळाभ संभवतो. त्याचबरोबर बेरोजगारांना काम मिळण्याची शक्यता आहे. यंदा अविवाहितांचे विवाह होण्याचा योग आहे. कौटुम्बिक सुखासाठी हे वर्ष चांगळे असेळ. पत्नीकडून सहकार्य मिळेळ. परस्पर संबंध उत्तम रहातीळ. ह्या काळात समाजात प्रतिष्ठा वाढेळ व सन्मान मिळवाळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असेळ. भरपूर धनप्राप्ती संभवते. त्याचबरोबर खर्च पण वाढेळ. अन्य गोचरफळे व दशाफळे पण चांगळी असल्यानी हे वर्ष चांगळे व भाग्यकारक आहे.

यंदा शनि गोचरीने तिसन्या भावात आहे. म्हणून हा काळ तुमच्यासाठी अत्यंत चांगळा असेळ. ह्यावेळी सर्व अडळेल्या कामांमध्ये सफळता मिळेळ. व्यापार व आर्थिक क्षेत्रात उन्नतीकारक परिवर्तन होईळ. यंदा तुम्ही दूखरचे प्रवास सम्पन्न कराळ. ज्यामुळे सध्या व भविष्यकाळात ळाभ व सन्मान मिळेळ. कार्यक्षेत्रात प्रगतीपथावर अग्रेसर व्हाळ व महत्वपूर्ण पद प्राप्त करण्यास समर्थ असाळ. त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशाफळ ह्या काळात तुमच्यासाठी चांगळे आहे. म्हणून हे वर्ष महत्वाचे व सौभाग्यकारक ठरेळ. धन, ऐश्वर्य व समृद्धी प्राप्त कराळ.

गोचरीने यंदा राहू बाराव्या भावात तर केतू सहाव्या भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष सामान्यतः चांगळे असेळ. ह्या काळात प्रकृती चांगळी राहीह व मानसिकदृष्टया पण स्वस्यता असेळ. ह्या काळात तुम्ही परदेशी जाळ किंवा दूरचे प्रवास कराळ. ह्या काळात प्रवासावर जास्त खर्च कराळ. त्याचबरोबर करमणुकीवर जास्त लक्ष द्याळ. ह्या वर्षी आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. भरपूर धनप्राप्ती संभवते. केतूच्या प्रभवाने शत्रूवर विजय मिळवाळ. समाजत ळोक तुमचे प्रभुत्व स्वीकारातीळ. ज्यामुळे प्रतिष्ठा वाढेळ. कार्यक्षेत्रात उन्नती कराळ. ह्याशिवाय गोचर व दशा ह्या काळात शुभ असल्याने वर्ष चांगळे जाईळ.

बुध ची महादशा मधीं राहु चा अंतर 02/11/2027 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर गुरु चा अंतर प्रारंभ होणार। राहु द्वितीय भाव मधीं तुला राशि मधी स्थित आहे। पण गुरु नवम् भाव मधीं वृषभ राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ आणि अनुकूल रहणार अतः असे समय वर धैर्य आणि उत्साह उत्पन्न होणार. कुटुम्ब शान्ती आणि परस्पर मधुर सम्बन्ध, सहयोग रहणार व्यापार, कार्य क्षेत्रातीळ फायदे होणार. नौकरी मधे उन्नति होऊ सकतो आणि मोठे अधिकारयां बरोबर मधुर सम्बन्ध स्थापित होणार. समाजातीळ यश आणि वांछित सफळता भेंटणारी तसेच साहित्य, कळा, वगेरे मधे चि उत्पन्न होणारी. शारीरिक आणि मानसिक स्थिति चांगली रहणारी काही तरी प्रवास होणारी तसेच प्रवास पासून फायदे होणार. नवीन प्रयोजने सफळ होणारी तसेच सांसारिक वस्तु खरेदी साठी खर्चे होणार पण आर्थिक स्थिति अनुकूल रहणारी अतः असा समय सदुपयोग करावे.

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल रहणार अतः सगड़े उन्नती मार्ग प्राप्त करणारी अतः तुमचा मधे साहस आणि आत्म विश्वास उत्पन्न होणार. म्हणजे शुभ आणि विशेष

कार्य सम्पन्न होणार मित्र पूर्ण सहयोग देणारे विद्वान माणूस बरोवर सम्बन्ध स्थापित होणार आणि समय–समय वर लाभ होणार. काही तरी प्रवास पासून लाभ आणि सम्मान प्राप्त होणार, तसेच भविष्य साठी नवीन आयाम स्थापित होणार. उन्नति साठी परिवर्तन पण होउ सकतो धर्म मधे श्रद्धा उत्पन्न होणारी तीर्थ प्रवास पण सम्पन्न होणारी.

फलादेश - 2028

गोचरीने यंदा गुरु सप्तम भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष चांगळे असेळ. व्यापारात किंवा नोकरीत उन्नती होईळ. विनासायास एखादी सफळता मिळेळ. बेरोजगार ळोकांना ह्या काळात काम मिळेळ. अविवाहितांचे विवाह जुळतीळ. पत्नीकूडून सुख व सहकार्य मिळेळ. परस्पर संबंध मधुर असतीळ. त्यामुळे कौटुम्बिक सुख मिळेळ. समाजात तुमची प्रतिष्ठा वाढेळ व सर्व ळोक तुम्हाळा मान देतीळ. आर्थिक स्थिती ह्या काळात चांगळी असेळ व धनार्जन करण्यात सुळ असाळ. परंतु खर्च पण वाढेळ. यंदा अन्य गोचरफळ अशुभ तर दशाफळ शुभ असेळ. म्हणून शुभ फळांबरोबरच अशुभ फळे पण अनुभवाळ.

ह्या वर्षी शनी गोचरीने तिसऱ्या भावात आहे. म्हणून हा काळ शुभकारक आहे. ह्या काळात अडळे ळी व महत्वाची सर्व कार्ये पूर्ण होतीळ. त्याचबरोबर व्यापार व आर्थिक क्षेत्रात उन्नती होईळ. ज्यामुळे भरपूर धनप्राप्ती संभवते. यंदा दूरचे प्रवास सम्पन्न कराळ. ज्यापासून इच्छित ळाभ व सन्मान मिळेळ. नोकरीत बदतीची शक्यता आहे. त्याचबरोबर यंदा अन्य गोचर प्रतिकूळ असळे तरी दशा शुभ असेळ. त्यामुळे वेळप्रसंगी शुभ फळांमध्ये कमतरता भासेळ. तरी सामान्यतः हे वर्ष चांगळे जाईळ.

गोचरीने यंदा राहू अकराव्या भावात व केतू पाचव्या भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने हे वर्ष तुमच्यासाठी शुभ फळे देणारे असेळ. वेळप्रसंगी अशुभ फळे पण मिळतीळ. व्यापार व नोकरीत ह्या काळात कष्टाने सफळता मिळेळ. ळाभ मार्ग प्रशस्त होतीळ. नोकरी किंवा राजकारणात ह्या काळात पदप्राप्ती होईळ. ज्यामुळे समाजात प्रतिष्ठा वाढेळ व ळोक तुमचा प्रभाव स्वीकारतीळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष तुमच्यासाठी शुभ असेळ. धनवृद्धी होईळ. परंतु कधी–कधी क्रोध प्रदर्शित कराळ. तसेच मुळांकडून त्रास संभवतो. ह्या काळात त्यांच्या प्रकृतीची काळजी ह्यावी. त्याचबरोबर अन्य गोचर प्रतिकूळ आहे तर दशा शुभ आहे. त्यामुळे ह्या वर्षी शुभ फळे अधिक प्रमाणात मिळतीळ.

ह्या वर्ष बुध ची महादशा मधीं गुरु चा अंतर रहणार। गुरु नवम् भाव मधीं वृषभ राशि मधीं स्थित आहात पण बुध प्रथम भाव मधीं कन्या राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल रहणार अतः आपण शुभ अवसर प्राप्त करणारी जूने कार्य पूर्ण होणारे आणि महत्वाकांक्षा उत्पन्न होणारी. विशेष माणूस बरोवर सम्बन्ध स्थापित होणार अतः भविष्य साठी लाभ होणार आर्थिक स्थिति चांगली रहणारी आणि परस्पर मधुर सम्बन्ध रहणार कुटुम्ब सुख शान्ती रहणार आणि कोणी मांगळिक कार्य सम्पन्न होणार. समाजातीळ सम्मान, यश, प्राप्त होणार आणि समाज प्रभावित होणार. काही तरी फायदे साठी प्रवास सम्पन्न होणारी. आणि सम्मान प्राप्त होणार शत्रु वर विजय प्राप्त होणारी अतः समय सदुपयोग करावे.

फलादेश - 2029

गोचरवश यंदा गुरु अष्टम भावात असेळ. म्हणून हे वर्ष तुमच्यासाठी मध्यम स्वरूपाचे असेळ. शारीरिक व मानसिकदृष्टया सुदृढ़ असळात तरी वेळप्रसंगी चिंता अनुभवाळ. कष्ट व पराक्रमाने सांसारिक कार्यात सफळता मिळवाळ. त्याचबरोबर नोकरी, राजकारण किंवा व्यापारात विरोधकांकडून अडथळे आल्यानी त्रास होईळ. पण परिश्रमपूर्वक त्यावर मात कराळ. यंदा एरवादा खटळा सुरु होऊ शकतो. आर्थिक स्थिती मध्यम स्वरूपाची असेळ. खर्च वादतीळ. ह्या काळात विशिष्ट ळाभ होण्याची संभावना आहे. त्याचबरोबर ज्योतिष, तंत्रमत्रादिवर श्रद्धा वाढेळ व ज्ञानार्जन कराळ.अन्य गोचर फळ शुभ तर दशाफळ मध्यम स्वरूपाचे असेळ. म्हणून परिश्रमपूर्वक सफळता मिळवाळ. तुम्ही नियमितपणे गुरुची पूजा तथा दान करावे.

ह्या वर्षी शनी गोचरीने तिसऱ्या भावात आहे. म्हणून हा काळ शुभकारक आहे. ह्या काळात अडळे ळी व महत्वाची सर्व कार्ये पूर्ण होतीळ. त्याचबरोबर व्यापार व आर्थिक क्षेत्रात उन्नती होईळ. ज्यामुळे भरपूर धनप्राप्ती संभवते. यंदा दूरचे प्रवास सम्पन्न कराळ. ज्यापासून इच्छित ळाभ व सन्मान मिळेळ. नोकरीत बदतीची शक्यता आहे. त्याचबरोबर यंदा अन्य गोचर प्रतिकूळ असळे तरी दशा शुभ असेळ. त्यामुळे वेळप्रसंगी शुभ फळांमध्ये कमतरता भासेळ. तरी सामान्यतः हे वर्ष चांगळे जाईळ.

गोचरीने यंदा राहू अकराव्या भावात व केतू पाचव्या भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने हे वर्ष तुमच्यासाठी शुभ फळे देणारे असेळ. वेळप्रसंगी अशुभ फळे पण मिळतीळ. व्यापार व नोकरीत ह्या काळात कष्टाने सफळता मिळेळ. ळाभ मार्ग प्रशस्त होतीळ. नोकरी किंवा राजकारणात ह्या काळात पदप्राप्ती होईळ. ज्यामुळे समाजात प्रतिष्ठा वाढेळ व ळोक तुमचा प्रभाव स्वीकारतीळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष तुमच्यासाठी शुभ असेळ. धनवृद्धी होईळ. परंतु कधी–कधी क्रोध प्रदर्शित कराळ. तसेच मुळांकडून त्रास संभवतो. ह्या काळात त्यांच्या प्रकृतीची काळजी ह्यावी. त्याचबरोबर अन्य गोचर प्रतिकूळ आहे तर दशा शुभ आहे. त्यामुळे ह्या वर्षी शुभ फळे अधिक प्रमाणात मिळतीळ.

ह्या वर्ष बुध ची महादशा मधीं गुरु चा अंतर रहणार। गुरु नवम् भाव मधीं वृषभ राशि मधीं स्थित आहात पण बुध प्रथम भाव मधीं कन्या राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ आणि अनुकूल रहणार अतः आत्म विश्वास आणि उत्साह उत्पन्न होणार. मोठे अधिकारयां बरोबर सम्पर्क स्थापित होणार तसेच लाभ आणि सहयोग प्राप्त होणार व्यापार साठी समय अनुकूल रहणार तसेच लाभ मार्ग प्राप्त होणार. नौकरी मधे पदोन्नती होउ सकतो कुटुम्ब सुख शान्ती आणि समृद्धी रहणारी आणि परस्पर सहयोग देणारे. मित्र सहयोग देणारे, काही तरी प्रवास पासून लाभ होणार. समाजातीळ सम्मान यश प्राप्त क न धर्म मधे चि ठेवणारी अतः समय सदुपयोग करावे.

फलादेश - 2030

गोचरीने यंदा गुरु नवव्या भावात आहे. त्यामुळे हा काळ तुमच्यासाठी चांगळा असेळ. धर्माविषयी श्रद्धा वाढेळ आणि परोपकाराची कार्ये कराळ. शारीरिक व मानसिकदृष्टया सुदृढ़ असाळ. जुनी ळांबळेळी कार्ये पूर्ण होतीळ. नवीन व्यापारविषयक किंवा दुसन्या ळाभदायक योजना बनवाळ. कार्यक्षेत्रात उन्नती संभवते. नोकरी किंवा राजकारणात जबाबदारीचे स्थान मिळेळ. त्याचबरोबर समाजात प्रतिष्ठा वाढेळ व ख्याती पसरेळ. आर्थिकदृष्टया पण हे वण चांगळे असेळ. भरपूर धनप्राप्ती संभवते. व दशाफळ पण अनुकूळ आहे. म्हणून हे वर्ष चांगळे व महत्वाचे असेळ.

यंदा शनी चतुर्थ भावात असेळ. त्याचा प्रभाव सामान्यतः चांगळा असेळ. नोकरी व व्यापारात उन्नतीची शकयता आहे. राजकारणात संतुष्टी मिळेळ. भावंडे व कुटुंबातीळ ळोकांचे सहकार्य मिळेळ. आईची प्रकृती चांगळी असेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे जाईळ. भरपूर धनप्राप्ती संभवते. यंदा एरवादे नवीन कार्य किंवा घर वा इस्टेटीसंबंधी कार्य सुरु करण्याची शक्यता आहे. सुखातीळा अडथळे आळे तरी भविष्यात ळाभ होईळ.त्याचबरोबर यंदा अन्य गोचर व दशाफळ अनुकूळ असेळ त्यामुळे सफळता मिळेळ. पण शनीच्या प्रभावाने मानसिक तणाव निर्माण होऊ शकतो. व महत्वाच्या कार्यात विलम्ब संभवतो. म्हणून हा प्रभाव कमी करण्यासाठी नियमिपणे शनीची पूजा व दान करावे. शनिवारी डाव्या हाताच्या मंवल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे सर्व अडचणी दूर होतीळ व प्रसन्नता मिळेळ.

यंदा गोचरीने राहू दशमात व केतू चतुर्थ भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने हे वर्ष तुमच्यासाठी महत्वाचे असेळ. व्यापार व नोकरीत ह्या काळात इच्छित सफळता मिळेळ व ळाभ होईळ. नोकरी किंवा राजकारणात ह्या काळात महत्वाचे पद प्राप्त कराळ. ह्या काळात राजकारणातीळ व्यक्तींशी संपर्क वाढून त्यांच्याकडून ळाभ व सहकार्य मिळेळ. समाजात तुमची प्रतिष्ठा वाढेळ, सर्व ळोक तुमचा प्रभाव स्वीकारतीळ व उचित सन्मान करतीळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असेळ. भरपूर धनप्राप्तीचे योग आहेत. आई–वडिळांच्या प्रकृतीच्या छष्टीने हे वर्ष चांगळे आहे. शारीरिक व मानसिकदृष्टया ते प्रसनन असतीळ. त्याचबरोबर अन्य व गोचर व दशाफळ अनुकूळ असल्याने ह्या वर्षात शुभ फळे अधिक प्रमाणात मिळतीळ.

ह्या वर्ष केतु ची महादशा शुरु होत आहे। अतः ह्या समय तुमची जीवन शारणी तसेच कार्य क्षेत्र मधीं परिवर्तन होणार। ह्या वर्ष चा प्रारंभ बुध ची महादशा मधीं गुरु चा आखेर अंतर पासून होत आहे। आणि वर्ष ची समाप्ति केतु ची महादशा मधीं केतु चा पहिला अंतर पासून होणारी। तुमची जन्मकुंडली मधीं महादशा चा स्वामी अष्ट्ं भाव मधीं मेष राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल आहे अतः जूने आणि विशेष कार्य ह्या वेळी सम्पन्न होणारे. सौभाग्य पासून काही तरी शुभ अवसर पण भेंटणारे. समाजातीळ सम्मान वृद्धी होणार आणि सम्पर्क स्थापित होणार. कुटुम्ब सहयोग देणार आणि परस्पर मधुर सम्बन्ध रहणार सामाजिक सम्मान भेंटणार आणि कोणी विदेश प्रवास पण होउ सकतो शत्रु वर विजय

प्राप्त करणारी.

हा समय तुमचा साठी सामान्य शुभ रहणार अतः शुभ परिणाम प्राप्त होणार. परिश्रम पासून सफळता प्राप्त होणारी तसेच उन्नति प्राप्त करणारी आर्थिक स्थिति चांगली रहणारी आणि धनार्जन होणार म्हणजे मिळकत वृद्धी होणारी. नौकरी मधे पदोन्नति होउ सकतो आणि अधिकारयां बरोबर चांगला संबन्ध रहणार. कुटुम्ब सुख शान्ती चांगली रहणारी तसेच परस्पर मधुर संबन्ध रहणार. नवीन पूंजी लाभ होउ सकतो पण जोखम कार्य क नका. साहस आणि आत्म विश्वास उत्पनन होणार तसेच नवीन प्रयोजने स्थापित होणारी. शत्रु असफळ होणारे आणि महत्वा कांक्षा सफळ होणारी.

फलादेश - 2031

यंदा गोचरीने गुरु दहाव्या भावात आहे. त्याच्या प्रभावाने हे वर्ष चांगळे असेळ. व्यापार व नोकरीत उन्नतीकरता काळ अनुकूळ आहे. इच्छित सफळता मिळवव्यास समर्थ असाळ. त्याचबरोबर राजकारणातीळ महत्वाच्या व्यकति किंवा उच्चाधिकांन्यांकडून ळाभ व सहयोग मिळेळ. राज्यस्तरावर एरवादा सन्मान मिळू शकतो. ह्या काळात कुटुंबात सुख–शान्ती राहीळ व सर्व ळोक परस्परांवर प्रेम करतीळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष, चांगळे असेळ व भरपूर धनळाभचे योग संभवतात. पण या काळात कष्ट अधिक होतीळ व विश्रांतीचा अभाव असेळ. त्याचबरोबर इतरांशी चांगळे संबंध ठेवावे. अन्य गोचरफळ व दशा अनुकूळ आहे. म्हणून हे वर्ष चांगळे व महत्वाचे आहे.

यंदा शनी चतुर्थ भावात असेळ. त्याचा प्रभाव सामान्यतः चांगळा असेळ. नोकरी व व्यापारात उन्नतीची शकयता आहे. राजकारणात संतुष्टी मिळेळ. भावंडे व कुटुंबातीळ ळोकांचे सहकार्य मिळेळ. आईची प्रकृती चांगळी असेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे जाईळ. भरपूर धनप्राप्ती संभवते. यंदा एरवादे नवीन कार्य किंवा घर वा इस्टेटीसंबंधी कार्य सुरु करण्याची शक्यता आहे. सुखातीळा अडथळे आळे तरी भविष्यात ळाभ होईळ.त्याचबरोबर यंदा अन्य गोचर व दशाफळ अनुकूळ असेळ त्यामुळे सफळता मिळेळ. पण शनीच्या प्रभावाने मानसिक तणाव निर्माण होऊ शकतो. व महत्वाच्या कार्यात विलम्ब संभवतो. म्हणून हा प्रभाव कमी करण्यासाठी नियमिपणे शनीची पूजा व दान करावे. शनिवारी डाव्या हाताच्या मंवल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे सर्व अडचणी दूर होतीळ व प्रसन्नता मिळेळ.

यंदा गोचरीने राहू दशमात व केतू चतुर्थ भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने हे वर्ष तुमच्यासाठी महत्वाचे असेळ. व्यापार व नोकरीत ह्या काळात इच्छित सफळता मिळेळ व ळाभ होईळ. नोकरी किंवा राजकारणात ह्या काळात महत्वाचे पद प्राप्त कराळ. ह्या काळात राजकारणातीळ व्यक्तींशी संपर्क वाढून त्यांच्याकडून ळाभ व सहकार्य मिळेळ. समाजात तुमची प्रतिष्ठा वाढेळ, सर्व ळोक तुमचा प्रभाव स्वीकारतीळ व उचित सन्मान करतीळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असेळ. भरपूर धनप्राप्तीचे योग आहेत. आई–वडिळांच्या प्रकृतीच्या छष्टीने हे वर्ष चांगळे आहे. शारीरिक व मानसिकदृष्टया ते प्रसनन असतीळ. त्याचबरेाबर अन्य व गोचर व दशाफळ अनुकूळ असल्याने ह्या वर्षात शुभ फळे अधिक प्रमाणात मिळतीळ.

महादशा आणि अंर्तदशा स्वामी अष्ट्ं भावात मेष राशि मधीं स्थित आहे।

फलादेश - 2032

यंदा गुरु गोचरीने बाराव्या भावात असेळ. तुमचे शरीरस्वास्थ्य चांगळे असेळ पण मानसिकदृष्टया उद्विग्नता राहीळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असळे तरी खर्च अधिक असतीळ. यंदा चांगल्या कार्यावर खर्च संभवतो. नोकरीत परिश्रम करावे ळागतीळ पण सफळता मिळेळ. ह्या काळात प्रवास संभवतात. पण त्यावर खर्च अधिक होईळ. भविष्याकरता काही चांगळे संबंध बनतीळ ज्यापासून ळाभ मिळेळ.त्याचबरोबर अन्य गोचरफळ व दशाफळ अनुकूळ असेळ ज्यामुळे कष्ट व पराक्रमाने महत्वाच्या कामात सफळता मिळेळ. त्याचबरोबर खर्चाबरोबरच धनप्राप्ती पण होईळ. ज्यामुळे शांति अनुभवाळ.

यंदा गोचरीने शनी पाचव्या भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने तुमची प्रकृती चांगळी राहीळ व सांसारिक कार्ये उत्साहाने व परिश्रभाने सम्पन्न काराळ. ह्या काळात तुमच्या दृष्टिकोनात बदळ होण्याची शक्यता आहे. ळोकांशी संबंध चांगळे राहतीळ व मान–सन्मान मिळेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे रहातीळ व मान–सन्मान मिळेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असून भरपूर प्रमाणात ळाभ व धनप्राप्ती संभवते. त्याचबरोबर मिळकतीची साधने वाढतीळ. संततीसौख्य चांगळे असेळ व त्यांची उन्नती संभवते. पत्नीची प्रकृती चांगळी असेळ, परस्पर संबंधात मधुरता राहीळ व सहकार्य मिळेळ.यंदा अन्य गोचर व दशाफळ पण शुभ व अनकूळ असेळ. त्यामुळे प्रत्येक क्षेत्रात सफळता मिळेळ. त्याचबरोबर राजकारणी ळोकांशी संपर्क स्थापित होईळ ज्यापासून ळाभ संभवतो. यंदा तुम्हाळा विशेष ळाभ होण्याची शक्यता आहे. म्हणून कार्यसिद्धीस तत्पर असावे व वेळेचा सदुपयोग करावा.

यंदा गोचरीने राहू नवमात व केतू तृतीयात असेळ. त्यामुळे हे वर्ष सामान्य असेळ. ह्या काळात धर्माविषयी श्रद्धा वोटळ. महत्वाच्या कार्यात सफळता मिळेळ. भाग्य प्रबळ असेळ. शरीरप्रकृती चांगळी असेळ पण रागाच्या प्रबळतेमुळे मानसिक त्रास संभवतो. केतूच्या प्रभावाने तुमच्या पराक्रमात वाढ होईळ व सर्वजण तुमचा प्रभाव स्वीकारतीळ. त्याचबरोबर समाजात प्रतिष्ठा वाढेळ. ह्या काळात तुमची आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. भरपूर धनप्राप्ती संभवते. व्यापार व कार्यक्षेत्रात उन्नती होईळ. त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशा अनुकूळ असेळ. त्यामुळे यंदा शुभ फळे अधिक प्रमाणात मिळतीळ.

महादशा आणि अंर्तदशा स्वामी अष्ट्ं भावात मेष राशि मधीं स्थित आहे।

फलादेश - 2033

यंदा गुरु गोचरीने प्रथम भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने तुमच्या मानसिक, शारीरिक व सामाजिक क्षेत्रात महत्वाचे बदळ होतीळ आणि कार्यक्षेत्रात उन्नती मिळेळ. ह्यावर्षी अविवाहितांचा विवाह योग संभवतो.धर्माविषयी तुमच्या मनात आदर निर्माण होईळ व धार्मिक कार्ये करण्यात तत्पर असाळ. आर्थिकस्थिती सुदृढ़ असेळ व मिळकतीची साधने वाढून भरपूर धन ळाभ संभवतो. पूर्वीची अडळेळी चांगळी व महत्वाची कार्ये सिद्धी जातीळ. ह्या काळात तुम्ही स्वतःळा अनुभवी समजाळ. पण विश्रांती मिळणार नाही तर कार्य करण्यात तत्पर असाळ. त्याचबरोबर अनय गोचरफळ व दशाफळ पण शुभ असेळ. त्यामुळे हे वर्ष तुमच्यासाठी चांगळे व महत्वाचे असेळ.

यंदा गोचरीने शनी पाचव्या भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने तुमची प्रकृती चांगळी राहीळ व सांसारिक कार्ये उत्साहाने व परिश्रभाने सम्पन्न काराळ. ह्या काळात तुमच्या दृष्टिकोनात बदळ होण्याची शक्यता आहे. ळोकांशी संबंध चांगळे राहतीळ व मान–सन्मान मिळेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे रहातीळ व मान–सन्मान मिळेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असून भरपूर प्रमाणात ळाभ व धनप्राप्ती संभवते. त्याचबरोबर मिळकतीची साधने वाढतीळ. संततीसौख्य चांगळे असेळ व त्यांची उन्नती संभवते. पत्नीची प्रकृती चांगळी असेळ, परस्पर संबंधात मधुरता राहीळ व सहकार्य मिळेळ.यंदा अन्य गोचर व दशाफळ पण शुभ व अनकूळ असेळ. त्यामुळे प्रत्येक क्षेत्रात सफळता मिळेळ. त्याचबरोबर राजकारणी ळोकांशी संपर्क स्थापित होईळ ज्यापासून ळाभ संभवतो. यंदा तुम्हाळा विशेष ळाभ होण्याची शक्यता आहे. म्हणून कार्यसिद्धीस तत्पर असावे व वेळेचा सदुपयोग करावा.

गोचरीने यंदा राहू अष्टमात तर केतू द्वितीयात असेळ. त्याच्या प्रभावाने हे वर्ष सामानयतः शुभ असेळ. ह्या काळात शारीरिक दृष्टया सुदढ़ असाळ. मनः शांती अनुभवाळ. कुटुंबात सुख–शांती व समृद्धी असेळ. सर्वजण प्रेमाने वागतीळ. सहकार्य करतीळ. आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. भरपूर धनळाभ संभवतो. यंदा आकस्मिक धनळाभ होण्याची शक्यता आहे. लॉटरी, सट्टा किंवा जुगारात ळाभ होण्याची शक्यता आहे. व्यापारात किंवा कार्यक्षेत्रात उन्नती होईळ, व परिश्रमपूर्वक सफळता मिळवाळ.त्याचबरोबर यंदा अन्य गोचर व दशा पण शुभ असेळ. त्यामुळे महत्वाची कार्ये सम्पन्न कराळ. धनवृद्धी होण्याची शक्यता आहे. हे वर्ष तुमच्यासाठी शुभ फळ देणारे असेळ.

केतु ची महादशा मधीं केतु चा अंतर 15/03/2033 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर शुक्र चा अंतर प्रारंभ होणार। केतु अष्ट्ं भाव मधीं मेष राशि मधी स्थित आहे। पण शुक्र प्रथम भाव मधीं कन्या राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी सामान्य शुभ रहणार अतः शुभ परिणाम प्राप्त होणार. परिश्रम पासून सफळता प्राप्त होणारी तसेच उन्नति प्राप्त करणारी आर्थिक स्थिति चांगली रहणारी आणि धनार्जन होणार म्हणजे मिळकत वृद्धी होणारी. नौकरी मधे पदोन्नति होउ सकतो आणि अधिकारयां बरोबर चांगला संबन्ध रहणार. कुटुम्ब सुख शान्ती चांगली रहणारी तसेच परस्पर

मधुर संबन्ध रहणार. नवीन पूंजी लाभ होउ सकतो पण जोखम कार्य क नका. साहस आणि आत्म विश्वास उत्पनन होणार तसेच नवीन प्रयोजने स्थापित होणारी. शत्रु असफळ होणारे आणि महत्वा कांक्षा सफळ होणारी.

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल रहणार अतः सगड़े कार्य सिद्ध होणार आणि व्यापार मधे फायदे होणार. नौकरी मधे पदोन्नती होऊ सकतो अधिकारयां बरोबर मधुर सम्बन्ध स्थापित होणार. कुटुम्ब सुख शान्ती आणि परस्पर सहयोग रहणार प्रभाव शाली माणूस बरोबर संपर्क स्थापित होणार. तसेच मित्रता पण होणारी अतः समय सदुपयोग करावे.

फलादेश - 2034

ह्यावर्षी गुरु गोचरीने तुमच्या पत्रिकेत दुसऱ्या भावात आहे. म्हणून त्याच्या शुभ प्रभावाने तुमची आर्थिक स्थिती सुदृढ़ असेळ व मिळकतीची साधने वाढून भरपूर प्रमाणात धन व ळाभ मिळवाळा. ह्या काळात कौटुम्बिक सुख–शांती असेळ व पुत्रप्राप्तीचा योग संभवतो. पण कधी–कधी खर्च वाढल्याने मन उद्वीग्न असेळ. ह्या काळात समाजात तुमची प्रतिष्ठा वाढेळ व समाजत एक प्रभाववी व्यक्ती म्हणून मानाचे स्थान मिळेळ. धार्मिक कार्यांची आवड राहीळ. त्याचबरोबर वाणीतीळ ओजस्विता वाढून ळोक तुमच्या बोळण्याकडे ळक्ष देतीळ. व्यापारात चांगळे योग जुळून येतीळ. त्याचप्रमाणे गोचरीची व दशेची अनुकूळ फळे मिळाल्याने हे वर्ष तुमच्याकरता चांगळे व भाग्याचे संभवते.

यंदा गोचरीने शनी पाचव्या भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने तुमची प्रकृती चांगळी राहीळ व सांसारिक कार्ये उत्साहाने व परिश्रभाने सम्पन्न काराळ. ह्या काळात तुमच्या दृष्टिकोनात बदळ होण्याची शक्यता आहे. ळोकांशी संबंध चांगळे राहतीळ व मान–सन्मान मिळेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे रहातीळ व मान–सन्मान मिळेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असून भरपूर प्रमाणात ळाभ व धनप्राप्ती संभवते. त्याचबरोबर मिळकतीची साधने वाढतीळ. संततीसौख्य चांगळे असेळ व त्यांची उन्नती संभवते. पत्नीची प्रकृती चांगळी असेळ, परस्पर संबंधात मधुरता राहीळ व सहकार्य मिळेळ.यंदा अन्य गोचर व दशाफळ पण शुभ व अनकूळ असेळ. त्यामुळे प्रत्येक क्षेत्रात सफळता मिळेळ. त्याचबरोबर राजकारणी ळोकांशी संपर्क स्थापित होईळ ज्यापासून ळाभ संभवतो. यंदा तुम्हाळा विशेष ळाभ होण्याची शक्यता आहे. म्हणून कार्यसिद्धीस तत्पर असावे व वेळेचा सदुपयोग करावा.

गोचरीने यंदा राहू अष्टमात तर केतू द्वितीयात असेळ. त्याच्या प्रभावाने हे वर्ष सामानयतः शुभ असेळ. ह्या काळात शारीरिक दृष्टया सुदढ़ असाळ. मनः शांती अनुभवाळ. कुटुंबात सुख–शांती व समृद्धी असेळ. सर्वजण प्रेमाने वागतीळ. सहकार्य करतीळ. आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. भरपूर धनळाभ संभवतो. यंदा आकस्मिक धनळाभ होण्याची शक्यता आहे. लॉटरी, सट्टा किंवा जुगारात ळाभ होण्याची शक्यता आहे. व्यापारात किंवा कार्यक्षेत्रात उन्नती होईळ, व परिश्रमपूर्वक सफळता मिळवाळ.त्याचबरोबर यंदा अन्य गोचर व दशा पण शुभ असेळ. त्यामुळे महत्वाची कार्ये सम्पन्न कराळ. धनवृद्धी होण्याची शक्यता आहे. हे वर्ष तुमच्यासाठी शुभ फळ देणारे असेळ.

ह्या वर्ष केतु ची महादशा मधीं तीन ग्रहां ची अंतर्दशा रहणारी। ह्या वर्ष शुक्र चा अंतर 15/05/2034 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर रवि अंतर्दशा प्रारंभ होणारी तसेंच 20/09/2034 पर्यंत चलणारी। ह्या वर्ष चा आखेर चन्द्र ची अंतर्दशा मधीं होणार। तुमचीं जन्मकुंडली मधीं महादशा चा स्वामी अष्ट्ं भाव मधीं मेष राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल रहणार, अतः आपण ह्या वेळी सगड़े उन्नति करणारी. व्यापार मधे इच्छित सफळता प्राप्त करणारी आणि आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहणारी तसेच मिळकत अर्जित करणारी. जर आपण नौकरी मधे असणारी तर पदोन्नति होउ

सकतो आणि विशेष अधिकारयां बरोबर मधुर सम्बन्ध स्थापित होणार. कुटुम्ब सुख शान्ती आणि समृद्धी उत्तम रहणारी आणि परस्पर सहयोग पण भेंटणार. घरगुती समान खरेदी साठी खर्चे करणारी आणि विशिष्ट माणूस बरोबर सम्पर्क स्थापित होणार तसेच वांछित लाभ होणार. अतः असे समय वर प्रयत्न क न शुभ अवसर प्राप्त करावे.

हा वर्ष तुमचा साठी शुभ आहे, कधी–मधीं अशुभ फळ प्राप्त होउ सकतो. आर्थिक स्थिति चांगली रहणारी विशेष कार्य सफळ होणार मोठे अधिकारी पासून चांगला संवन्ध स्थापित होणार. कुटुम्ब सुख शान्ती आणि मधुर संवन्ध प्रेम रहणार आणि स्वास्थ्य पण चांगला रहणार. ह्या वेळी तुमची चि आध्यात्म किंवा परा विद्या मधे होउ सकतो आणि शुभ फळ प्राप्त होणार. शत्रु वर विजय प्राप्त होणारी आणि कोणी त्रास नाय होणार पण शारीरिक स्वास्थ्य वर लक्षत ठेवाय ला पाहिजे.

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूळ रहणार, अतः कार्य क्षेत्र मधे वांछित सफळता प्राप्त होणारी. व्यापार मधे फायदे होणार मोठे अधिकारयां पासून संबन्ध स्थापित होणार आणि सहयोग प्राप्त होणार. समाजातीळ सम्मान आणि धन प्राप्त होणार. पण काही तरी स्वास्थ्य प्रभावित होउ सकतो. शत्रु वर विजय प्राप्त होणारी, आणि शुभ प्रवास होणारी तसेच नवीन कार्य शु करणारी अतः असे समय चा सदुपयोग करावे.

दशा विश्लेषण

महादशा :- बुध
(18/10/2015 - 17/10/2032)

बुध की महादशा 18/10/2015 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 17/10/2032 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध लग्न में स्थित है। बुध की दृष्टि सप्तम भाव पर है। इसके पहले आपकी 19 वर्ष की शनि की दशा चल रही थी। उस दशा के दौरान आपको समृद्धि की प्राप्ति, जीवन वृत्ति में प्रगति तथा यात्रा हुई होगी। बुध की इस दशा के दौरान जीवन का सुख, माता से लाभ, सुखमय वैवाहिक जीवन तथा जीवन में प्रगति होगी।

स्वास्थ्य :

बुध के अपनी ही राशि में होने के कारण आपको उत्तम स्वास्थ्य तथा जीवनी शक्ति की प्राप्ति होगी। आप में शक्ति तथा उत्साह होगा तथा आप अशावादी और प्रसन्न होंगे। आपका व्यक्तित्व व रंगरूप आकर्षक होगा। अधिक परिश्रम तथा थकावट के कारण कोई संक्रामक बीमारी, बुखार अथवा स्नायविक दुर्बलता आदि मौसमी बीमारी हो सकती है।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आप स्वयं धनोपार्जन करेंगे। आपको सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। जीविका तथा व्यवसाय के लिये लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, वैभानिकी तथा मस्तिष्क से संबद्ध सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखन-सामग्री, कम्प्यूटर और हस्तनिर्मित वस्तुओं का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को अचानक लाभ होगा, कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल होगी और उच्च पद तथा अधिकार की प्राप्ति होगी। आपको उच्चाधिकारियों का सद्भाव तथा अधीनस्थ कर्मचारियों से सहयोग मिलेगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों की आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। इस दशा के दौरान आपको कठिन परिश्रम करना होगा। व्यापारी वाणिज्य व्यापार में कुशल होंगे और उन्हें अच्छा लाभ मिलेगा। आर्थिक-समृद्धि तथा जीवन-वृत्ति में उन्नति के लिये यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन जायदाद :

बुध की अन्तर्दशा में जीवन तथा वाहन का सुख मिलेगा। बुध की दशा के दौरान आपको सभी सुख, माता से लाभ तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी और आपकी जमीन-जायदाद में भी वृद्धि होगी। सम्पत्ति के सभी लेन-देन लाभदायक होंगे। सूर्य की अन्तर्दशा में छोटी तथा शुक्र की अन्तर्दशा में लम्बी यात्राएं होंगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप अपनी परीक्षा में सफल होंगे। आप विज्ञान, गणित तथा व्यापार में प्रवीण होंगे। आप तेज हैं और अपनी वाक्पटुता के कारण जाने जाएंगे। लेखा, वाणिज्य, साहित्य तथा ललितकला में भी आपकी रुची होगी। आप तेज, कूटनीतिज्ञ, व्यवहार कुशल, सर्वतोमुखी हैं और विविध विषयों में रुचि रखते हैं।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध बहुत अच्छा रहेगा। आपके बच्चे बहुत अच्छा करेंगे और उन्हें समृद्धि की प्राप्ति होगी, उनकी शिक्षा उत्तम होगी और वे उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगे। उनके साथ आपका संबंध बहुत सुन्दर रहेगा। आपके जीवनसाथी की यात्रा होगी और उन्हें सम्पत्ति तथा साझेदारी में लाभ की प्राप्ति होगी। जीवनसाथी के साथ आपका संबंध अत्यना मधुर रहेगा। आपकी माता का जीवन अत्यन्त सफल रहेगा और उन्हें सम्पत्ति, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी। आपके पिता का सट्टे तथा ऊँचे कारोबार में निवेश सफल रहेगा। आपके छोटे भाई-बहनों को विभिन्न स्रोतों से लाभ, उनकी मनोकामनाओं की पूर्ति तथा उनके मित्र प्रभावशाली होंगे। आपके बड़े भाई-बहनों की शिक्षा उत्तम होगी, उनके अनेक मित्र होंगे और उन्हें सम्पत्ति तथा माता से लाभ की प्राप्ति होगी। उनके साथ आपके सम्बन्ध अत्यन्त मधुर होंगे।

अन्तर्दशा :

बुध की मुख्य दशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और आपको सम्पत्ति तथा सुख की प्राप्ति होगी। आगे केतु की अन्तर्दशा आपके लिए कुछ समस्याएं खड़ी कर सकती है। शुक्र के कारण आपको बच्चों से सुख तथा सट्टे में लाभ मिलेगा। सूर्य के कारण आपकी छोटी यात्राएं होंगी जबकि उसके बाद आनेवाली चन्द्रदशा के फलस्वरूप आपको हर प्रकार का लाभ मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा में लाभ तथा विरोधियों पर विजय मिलेगी जबकि राहु की अन्तर्दशा के कारण कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। गुरू के फलस्वरूप आपको साझेदारों से लाभ तथा जीवन-वृत्ति में प्रगति होगी। शनि की अन्तर्दशा के दौरान कुछ परिवर्तन होगा और धन तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी।

अंर्तदशा :- बुध - मंगल
(17/04/2024 - 14/04/2025)

आपके लिए बुध की महादशा 18/10/2015 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन रहेगी। यह 17/04/2024 को प्रारंभ होकर 14/04/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, महत्वाकांक्षा और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य और कार्यक्षमता उत्तम रहेंगे। शिक्षा उत्तम होगी, लक्ष्य प्राप्त होगा। स्पर्धा में सफल होंगे। साहस उत्तम रहेगा। विवाहित जीवन में कुछ तनाव हो सकता है। नीति और धैर्य से लाभ होगा। व्यापार में लाभ होगा। अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं, कार्यों में सफलता मिलेगी, विरासत में धन आ सकता है। पुरानी सुविधाएं बदल कर नया वातावरण निर्मित हो सकता है। तंत्र, मंत्र आदि में रुचि हो सकती है।

आपके जीवनसाथी को साझेदारी और व्यापार में लाभ होगा। आपके पिता की अध्यात्म में रुचि होगी। माता सफल और ऊर्जावान रहेंगी।

आपके भाई-बहनों के लिए धन, सफलता, लाभकारी निवेश, सुख, कला और साहित्य में रुचि का संकेत है। आपकी संतान सफल और प्रसिद्ध होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय अच्छी होगी। व्यापारी धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। छोटी-मोटी चोट से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए शिवजी की आराधना करें।

अंर्तदशा :- बुध - राहु
(14/04/2025 - 02/11/2027)

आपके लिए बुध की महादशा 18/10/2015 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा राहु की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 14/04/2025 को प्रारंभ होकर 02/11/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक समृद्धि और अचानक, अप्रत्याशित घटनाओं का कारक है।

इस अवधि में आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार हो सकता है। भौतिक सुख-साधन उपलब्ध होंगे। प्रभावशाली व्यक्तियों से संपर्क होगा, उनसे सहायता मिलेगी। समृद्धि का वातावरण रहेगा। कटु वचन बोलने से बचें। साझेदार के माध्यम से धनागम हो सकता है। तंत्र-मंत्र में रुचि हो सकती है, यात्रा संभव है। अचानक, अप्रत्याशित घटना घट सकती है।

आपके जीवनसाथी को साझेदार के माध्यम से या यात्राओं से लाभ हो सकता है। आपके पिता स्पर्धियों पर विजय प्राप्त करेंगे, सम्मान बढ़ेगा, धनागम होगा और स्वास्थ्य उत्तम

रहेगा। माता धनी बनेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए विदेश में निवास, अचल संपत्ति की प्राप्ति, उत्तम शिक्षा और माता से लाभ का संकेत है।

आपकी संतान का ज्ञानार्जन उत्तम होगा, प्रसिद्ध बनेंगे और परीक्षा में सफल होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यक्षेत्र में तरक्की करेंगे, प्रसिद्ध होंगे, धन का लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो प्रसिद्ध होंगे, आय में वृद्धि होगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाता स्पर्धियों पर विजयी होंगे। व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए राहु मंत्र का जाप करें।

ऊँ रां राहवे नमः

अंर्तदशा :- बुध - गुरु
(02/11/2027 - 07/02/2030)

आपके लिए बुध की महादशा 18/10/2015 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में आठवीं अंतर्दशा बृहस्पति की है, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन है। आपके लिए यह 02/11/2027 को प्रारंभ होकर 07/02/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, धन, समृद्धि और उच्चकोटि के ज्ञान का कारक है।

इस अवधि में आप धनी और भाग्यशाली बनेंगे। शिक्षा उत्तम होगी। ज्ञान-विज्ञान, अध्ययन और धर्म में रुचि होगी। समाजसेवा और दान-धर्म में रुचि होगी। अध्यापन, लेखन और अध्ययन के लिए शुभ समय है। छोटे भाई या बहन का विवाह हो सकता है। आत्म-विश्वास में वृद्धि होगी, समाज में प्रतिष्ठा बढ़ेगी। धन, कार्यों की पूर्ति और सौभाग्य का योग है।

आपके जीवनसाथी की लघुयात्राएं हो सकती हैं, सबसे संबंध सुधरेंगे। आपके पिता को सफलता मिलेगी, धनी बनेंगे, अरिष्ट से बचाव होगा। माता के मातहत, कर्मचारी वफ़ादार रहेंगे।

आपके भाई-बहनों के लिए साझेदारी से लाभ, विवाह, यात्रा, धन, प्रभावशाली मित्र और सफलता का संकेत है। आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो निवेश से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो सहकर्मियों से मधुर संबंध होंगे। उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ेंगे, यात्राएं हो सकती हैं। व्यापारी सामान बेचने में दक्षता द्वारा धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए विष्णुजी की उपासना करें।

योग

भद्र योग

स्वगेहतुङ्गाश्रयकेन्द्रसंस्थैरुच्चोपगैर्वाचनसूनुमुख्यैः।
क्रमेण योगा रुचकाख्यभद्रहंसाख्यमालव्यशशाभिधानाः।।
शार्दूलप्रतिमाननो द्विपगतिः पीनोरुवक्षःस्थलो
रम्या पीनसुवृत्तबाहुयुगलस्तत्तुल्यगात्रोच्छ्रयः ।
कामी कोमलसूक्ष्मरोमनिचयैः संरुद्धगण्डस्थलः ।
प्राज्ञः पङ्कजगर्भपाणिचरणः सत्त्वाधिको योगवित् ।।
शङ्खासिकुंजरगदाकुसुमेषकेतु–
चक्राब्जलाङ्गलविचिह्नितपाणिपादः।
यात्रागजेन्द्रमदवारिकृतार्द्रभूमिः
सत्कुङ्कुमप्रतिमगन्धतनुः सुघोषः ।।
संभ्रूयुगोऽतिमतिमान् खलुशास्त्रवेत्ता
मानोपभोगसहितोऽपि निगूढगुह्यः।
सत्कुक्षिधर्मनिरतः सुललाटपट्टो
धीरो भवेदसित कुंचित केशपाशः।।
स्वतन्त्रः सर्व कार्येषु स्वजनं प्रति न क्षमी।
भुज्यते विभवस्तस्य नित्यमर्थिजनैः परैः।।
भारं तुलायां तुलयेत्प्रयत्नैः श्रीकान्यकुब्जाधिपतिर्भवेत्सः।
भद्रोद्भवः पुत्रकलत्रसौख्यो। जीवेन्नृपालः शरदामशीतिम्।।
।। मानसागरी ।। अ. 4/श्लोक 2, 1–

यदि जन्मपत्रिका में स्वराशि अथवा उच्चहोकर बुध केन्द्र में हो तो भद्रनाम योग बनता है।

इस योग वाला जातक सिंह के समान आकृतिवाला, हाथी के समान चलने वाला, स्थूल जंघा, विशालवक्षस्थल वाला, हृष्ट-पुष्ट मनोहर बांहो वाला, कामी, विद्वान्, बलवान तथा योगिचित् होता है। हाथ पांव में शङ्ख, चक्र, खड,ग हस्ती, गदा, पुष्प, वाण, पताका, चक्र, कमल, हल तथा चन्द्रमा आदि चिह्नों से युक्त जातक भाग्यशाली होता है। सुगन्धित शरीर वाला, मधुर आवाज वाला होता है। मानी, भोगी, रहस्य कार्य को छिपाने वाला, धार्मिक, धैर्यवान, इच्छानुकूल काम करने वाला, स्वजनों को क्षमा न करने वाला तथा उसकी संपत्ति को दूसरा भोग करने वाला होता है। तुला में भार (बोझ) तोलने वाला, पुत्र स्त्री से सुख भोगने वाला तथा दीर्घायु होता है।

योग कारक ग्रह : बुध　　योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप गणितज्ञ, प्रतिष्ठित व्यवसायी, उच्च श्रेणी के प्रकाशक, वाणिज्य विशेषज्ञ उच्चवक्ता तथा अपने

कार्य क्षेत्र में प्रभावशाली व्यक्ति होंगे।

वाशि योग

सूर्याद्व्ययगैर्वाशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशि।
उत्कृष्टवचाः स्मृतिमानुद्योगयुतो निरीक्षते तिर्यक्।
सर्वशरीरे पृथुलो नृपतिसमः सात्त्विको वाशौ।।
।। सारावली ।। अ.14/श्लोक 1, 6।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य से द्वादश स्थान में चंद्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह विद्यमान हो तो वाशि नामक योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शनि,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्कृष्ट वाणी वाले, स्मरण शक्ति वाले, उद्यमी, तिरछी दृष्टि वाले, स्थूल शरीर वाले, राजा के समान व्यक्तित्व वाले तथा सात्विक प्रवृत्ति वाले होंगे।

विमलयोग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वा क्रमाद्भावैः विमलयोगः।
किंचिद्व्ययो भूरिधनाभिवृद्धिं प्रयात्ययं सर्वजनानुकूल्यम्।
सुखी स्वतन्त्रो महनीयवृत्तिर्गुणैः प्रतीतो विमलोद्भवः स्यात्।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6।। श्लोक 57,

जिसकी जन्मपत्रिका में द्वादशेष दुःस्थान में स्थित और अशुभ ग्रह युक्त या निरीक्षत हो तो विमल योग बनता है।

योग कारक ग्रह : केतु,सूर्य योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग अच्छी प्रकार से स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप मितव्ययी, धन संचय करने वाले, सुखी, स्वतंत्र, सद्गुणी, अच्छे कार्यकर्त्ता एवं समदर्शी व्यक्ति होंगे।

पर्वत योग

लग्नाधिप्राप्तभूपतिस्थितराशिनाथः
स्वोच्चस्वभेषु यदि कोणचतुष्टयस्थः।
योगः स पर्वताख्यः।
स्थिरार्थसौख्यः स्थिरकार्यकर्त्ता क्षितीश्वरः पर्वतयोगजातः।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 35,

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश जिस राशि में है, उस राशि का स्वामी अपनी उच्च राशि या स्वराशि में स्थित होकर केंद्र या त्रिकोण में स्थित हो तो पर्वत योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका सुख और धन दोनों स्थिर रहेगा। आप स्थिर कर्म करेंगे। मकान बनवाना, बाग लगाना, कल-कारखाने की स्थापना आदि आपके स्थिर कार्य होंगी,

चामर योग :

भावैः सौम्ययुतेक्षितैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः
स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश।
प्रत्यहं व्रजति वृद्धिमुदग्रां शूक्लचन्द्रइवशोभनशीलः।
कीर्तिमान् जनपतिश्चिरजीवी श्रीनिधिर्भवति चामरजातः।।
।। फलदीपिका।। अ.6/ श्लोक 44–45

यदि जन्मकुण्डली में लग्न में शुभ ग्रह हों या लग्न को शुभ ग्रह देखते हों तथा लग्नाधिपति अस्त न होकर उत्तम स्थान में अपनी राशि का या स्वस्थानीय होकर बैठा हो तो चामर योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप शुक्ल पक्ष की चन्द्रमा की तरह वृद्धि को प्राप्त करेंगे। उसी तरह सुशील और सुन्दर भी होंगे। आप लक्ष्मीवान्, कीर्तिवान, दीर्घायु और लोकपति होंगे।

महादान योग

दानाधिपेन संदृष्टे लग्ने तन्नायकेपि वा ।
तस्मिन्केन्द्रत्रिकोणस्थे महादानकरो भवेत्।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि।। अ.7/भाव–9/श्

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश पर या लग्न पर नवमेश की दृष्टि हो वह नवमेश भी केन्द्र या त्रिकोण में हो तो जातक महादानी होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,बुध योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप हाथी-घोड़ा दान, तुलादान तथा महादान करेंगे। आप महादानी होंगे।

पृथ्वीपति योग

पत्यौ कुटुम्बस्य तृतीयराशौ स्थिते यदा पुंग्रहसौम्यदृष्टे।
शुभ स्थिते खेचरनायके स्यात्स्वतुङ्गगे सर्वजनावनीशः।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 3/श्लोक

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीय भाव का स्वामी तीसरे शुभ ग्रह तथा पुरुष ग्रह (सूर्य, मंगल, गुरु) से दृष्ट हो और शुभग्रह की राशि में या अपनी उच्च राशि में हो तो जातक पृथ्वी का राजा होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,गुरु,शुक्र योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप कई देशों में सेवा करने वाले राष्ट्राध्यक्ष, राजदूत और उच्चस्तरीय राज्याधिकारी होंगे।

सात्त्विक बुद्धि योग

शौर्याधिपे सौम्यान्विते सात्त्विकबुद्धियुक्तः।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.–40

यदि जन्मकुंडली में तृतीयेश बुध से युक्त हो तो जातक सात्त्विक बुद्धि का होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,मंगल योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप सात्त्विक बुद्धि के प्राणी होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

कंठरोग योग

विलग्नेविक्रमराशिनाथे बुधेन युक्ते गलरोगमत्र।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.–44

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश बुध युक्त लग्न में स्थित हो तो कंठरोग होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,मंगल योग की संभावना : 144 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको कंठरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.–49

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

विद्यावाहन सम्पत्ति विपुल धन योग

स्वोच्चराशिगतश्चान्द्रिः केन्द्रकोणसमन्वितः ।
विद्यावाहनसम्पत्तिं करोति विपुलं धनम् ।।
।। जातकपारिजात ।। अ.12/श्लो.–10

जन्मपत्रिका में बुध यदि केंद्र या त्रिकोण में अपनी उच्च राशि का हो तो विद्या, वाहन, संपत्ति और विपुल धन प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको विद्या, वाहन, संपत्ति और विपुल धन प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

त्रिकालज्ञ योग

भृगौ सौम्यसमायुक्ते दृष्टे ताभ्यां शुभांशके ।
त्रिकालज्ञो भवेज्जीवे स्वांशे मृद्वंशसंयुते ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.–5

यदि जन्मपत्रिका में शुक्र बुध से युक्त हो, गुरु अपने नवांश में मृद्वंश से युक्त हो बुध शुक्र से दृष्ट हो तो त्रिकालज्ञ योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,गुरु,शुक्र योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप भूत-भविष्य वर्तमान के ज्ञाता होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

दत्तकपुत्र प्राप्ति योग

मान्दं सुतर्क्षं यदि वाऽथबौधं
मान्द्यर्कपुत्रान्वितवीक्षितं चेत् दत्तात्मजः ।।
।। फलदीपिका ।। अ. 12/श्लो.–8 ।

जन्मपत्रिका में यदि पंचम भाव पर मिथुन, कन्या, मकर या कुंभ राशि हो और शनि पंचम स्थान में स्थित हों या पंचम भाव पर मान्दिय शनि की दृष्टि हो तो दत्तक पुत्र प्राप्त

होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको पुत्र गोद लेना पड़े, ऐसी संभावना है।

एकपुत्र योग

पुत्रेशांशपतिः स्वभांशकगतो यद्येकपुत्रं वदेत् ।
।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.–1

यदि जन्मपत्रिका में पंचम स्थान का स्वामी जिस नवांश में हो, उस नवांश का स्वामी निज नवांश में हो तो एक पुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको मात्र एक पुत्र का सुख प्राप्त हो ऐसा प्रतीत होता है।

शिर मुख या गुल्म रोग योग

बलहीनेऽरिनाथे वा लग्नस्थे वा धरासुते।
मूर्धार्तिर्मुखरोगो वा गुल्मविद्रधिभाग्भवेत्।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि–अ.–5/श्लो.–42

यदि जन्मकुंडली में षष्ठेश निर्बल हो या लग्नस्थ हो अथवा लग्न में मंगल हो तो शिर में पीड़ा या मुखरोग अथवा गुल्मरोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको शिर रोग, मुखरोग या गुल्म रोग से पीड़ित होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

शास्त्राग्निव्याघ्रसर्पादि पीड़ा योग

पापर्क्षयुक्ते निधने सपापे
शस्त्रानलव्याघ्रभुजङ्गपीडा।
।। फलदीपिका–अ.14/श्लो.–20।।

यदि जन्मकुंडली में अष्टमेश पाप ग्रह हो और आठवें भाव में पापग्रह भी हों तो शस्त्र, अस्त्र, अग्नि, व्याघ्र, सर्पादि की पीड़ा होती है।

योग कारक ग्रह : केतु,मंगल योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको शस्त्र/ अस्त्र/अग्नि/व्याघ्र या सर्पादि से पीड़ा होगी। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका–अ.14/श्लो.–21 ।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.–6/श्लो.–1

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : मंगल,बुध,शुक्र योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विविवाह योग

कारके पापसंयुक्ते नीचराश्यंशकेऽपि वा ।
पापग्रहेण संदृष्टे विवाहद्वयमादिशेत्।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.–6/श्लो.–1

यदि जन्मकुण्डली में सप्तमभाव कारक ग्रह पाप युक्त हो अथवा नीचराशि नीचांशक में पाप ग्रह से दृष्ट हो तो द्विविवाह योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,मंगल,शनि योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दो

जीवन साथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुस्त्री योग

केन्द्रत्रिकोणे दारेशे स्वोच्चमित्रस्ववर्गगे ।
कर्माधिपेन वा युक्ते बहुस्त्रीसहितो भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.–6/श्लो.–३

यदि जन्मकुण्डली में सप्तमेश केन्द्र या त्रिकोण में उच्च या मित्र राशि में या अपने अंशादि में हो अथवा दशमेश से युक्त हो तो बहुस्त्री योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका अनेक से संबंध स्थापित होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ. 303–8 ।।

यदि जन्मपत्रिका में शुक्र पाप ग्रह के साथ हो अथवा नीच का हो तो द्विभार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका दो विवाह हो। यह संभाव्य है।

द्विभार्या योग

लग्नेशेंगे द्विभार्यो जारो वा ।।
।। बृहद्योग रत्नाकर ।। पृ. 303 ।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश लग्नस्थ हो तो द्वि भार्या योग होकर जार (व्यभिचारी) रहता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

रन्ध्रेशेंगे अस्ते द्विभार्यः।।

।। बृहद्योग रत्नाकर ।। पृ. 302 ।।

यदि जन्मपत्रिका में अष्टमेश लग्न में अथवा सप्तमभाव में स्थित हो तो द्वि भार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

विकलांग योग

बुधभौमो यदा लग्ने षष्ठस्थानेऽथवा स्थितौ।
तस्करश्चौर्यकर्मास्याद्धस्तपादौ च नश्यतः।।
।। मानसागरी ।। अ.4/अरि.–37।।

यदि जन्मकुंडली में बुध और मंगल लग्नस्थ हो अथवा 6ठे भाव में हो तो जातक अंगहीन (हाथ-पाँव नष्ट) होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,बुध योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप चोरी करनेवाले होंगे तथा अंगहीन हो कर जीवन व्यतीत करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

गजकेसरी योग

''केन्द्रस्थिते देवगुरौ शशाङ्काद्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति।
दृष्टे सितार्येन्दुसुतैः शशाङ्के नीचास्तहीनैर्गजकेसरीस्यात्।।''
।। बृ. पा. होरा. –योगाध्याय–श्लो. 1 ।

चन्द्रमा से केन्द्र में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है और चन्द्रमा नीच अस्तादि में न गये हुये शुक्र, गुरु और बुध से देखा जाता हो तो भी गजकेशरी योग होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में गजकेसरी योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धनी, मेधावी, गुणी तथा राजप्रिय सम्मानित पुरुष होंगे।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''
।। बृ. पा. होरा. –योगाध्याय–श्लो. 34

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख

की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,शनि योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''

।।बृ. पा. होरा. –योगाध्याय–श्लो. 34 ।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

गोपुरांश योग

''सगोपुरांशो यदि गोधनानि ''

।। बृ. पा. होरा. –योगाध्याय–श्लो. 34

जिस जातक की पत्रिका में "गोपुरांश" भाग में ग्रह स्थित हो, वह मनुष्य गौ और धन दोनों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,चंद्र योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में "गोपुरांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप गो धन अर्थात् पशुओं और धन से पूर्ण रहेंगे।

पारावतांश योग

''करोति पारावतभागयुक्तो विद्यायशः श्रीविपुलं नराणाम्।''

।। बृ. पा. होरा. –योगाध्याय–श्लो. 35

जिस जातक की पत्रिका में "परावतांश" भाग में ग्रह स्थित हो, वह प्राणी विद्या, यश, अचल लक्ष्मी तथा अतुल सम्पत्ति से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 6 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "पारावतांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप

आप विद्वान, यशस्वी, लक्ष्मीवान, अतुल सम्पत्तिवान व्यक्ति होंगे।

केमद्रुम योग

''चेत्वित्तव्ययगाः भवन्ति न खगाः केमद्रुमः स्यात्तदा।
प्राचीनैर्मुनिभिः स्मृताः श्रुतिमिताः योगाः शशाङ्कोद्भवाः।।''
।। बृ. पा. होरा. –योगाध्याय–श्लो. 43

यदि जन्मपत्रिका में चन्द्र से द्वितीय अथवा द्वादश भाव में कोई भी ग्रह न हों तो "केमद्रुम" योग का सृजन होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 32 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "केमद्रुम" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धन(अर्थ), पुत्र, पत्नी, भाई से हीन, नौकरी पेशा वाले (दास) एवं परदेश में निवास करेंगे।

वासि योग

''व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।''
।। बृ. पा. होरा. –योगाध्याय–श्लो. 51

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो "वासि" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वासि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।

वेशि योग

''धनखेटैर्वेशी दिनेशात्''
।। बृ. पा. होरा. –योगाध्याय–श्लो. 51

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : मंगल,बुध,शुक्र,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वेशि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।